ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५४ म अंक १५ जुलाइ २०१८ (वर्ष ११ मास १२७ अंक २५४)

वि दे ह *विदेह Videha বিদেহ* *http://www.videha.co.in* *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान

अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२. गद्य

२.१.१. मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी" (मिसिदा)- दू टा बीहनि कथा २. आशीष अनचिन्हार- "इश्क को दिल में दे जगह अकबर" आ जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल ३.कैलाश कुमार मिश्र- लघुकथा- बुरिराज

२.१.१. नारायण यादव- गुरुमैता-सल्हैता २. डॉ. बचेश्वर झाक दूटा आलेख- विद्यापतिकालीन मिथिलाक कृषि आ विद्यापतिक रचनामे विरह वर्णना

२.३.१.रबीन्द्र नारायण मिश्र- दूटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ) २. डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (पहिल खेप)

२.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ आ दूटा लघुकथा

१. मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी" (मिसिदा)- दू टा बीहनि कथा २. आशीष अनचिन्हार- "इश्क को दिल में दे जगह अकबर" आ जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल ३.कैलाश कुमार मिश्र- लघुकथा- बुरिराज

१

मिथिलेश सिन्हा "दाथवासी" (मिसिदा)

दू टा बीहनि कथा

(1)

जश्न

पलंग पर मृत्यु-सज्जया पर पड़ल बाबूजी'क गोरथारि मे हुनक पाएर रसे-रसे दाबि रहल छलहुँ. बाबूजी, कैंसर सं पीड़ित छलाह. डागदर जवाब द' देलकै. इलाज मे कोनो कसरि नहि छूटल. जतेक औकात छल, कएल.

बाबूजी, आँखि मुनि दुर्गाशप्तशती'क पाठ क' रहल छथि आओर सभ'क आँखि सं नोर वहि रहल छल.

मां त' जखन हम सभ बच्चे रही, स्वर्ग सिधारि गेल छलखिन्ह.

दिमाग मे बाबूजी'क संग बिताओल सभटा पावैन चलचित्र'क भांति चलि रहल छल. होली हो वा जुड़शीतल, सरस्वती पूजा हो वा दुर्गा पूजा, दिवाली हो वा छठि, सभटा पावैन-त्योहारि मे बाबूजी मां'क रोल मे आबि, सम्पन्न करैथ.

आई, दिवाली आब' बाला छै.... बाबूजी,बीमार.

राति भ' गेलैए.

"बाबूजी, किछु भोजन क' लिअ ने !" हम पाएर दबौबैत पुछलियैन्ह.

ओ चुपचाप टुकुर-टुकुर हमरा सभ दीस नजरि घुमा क' देख' लगलाह. हमर त' करेज फाट' लागल,मुदा मोन थीर कएल.

"किछु खा लिअ बाबूजी." हम पुनः बजलौंह.

"हौ, देखह बत्ती पर फतिंगा सभ कोना क' घुमि रहल छै ?" बाबूजी बजलाह.

"की बत्ती मुझा दौं ?"

"नहि, नहि... देखह ओ फतिंगा सभ कें.... ओ सभ अपन परिवार संगे कतेक खुश भ' नाचि रहल छै !" बाबूजी बात कटैत बजलाह," फतिंगा सभ'क परिवार कें पता छै, जे कार्तिक मास'क आमावस्या दिन तक ओकर सभ'क मृत्यु निश्चित छै.... कोनो विषाद नहि, अपन मृत्युक कतेक खुशी सं जश्न मना रहल छै.... आ तों सभ हमर मृत्यु लगीच देखि कानि रहल छह..... मृत्यु त' सत्य छै ओकर सम्मान केनाइ हमर धर्म....."

बाबूजी संगहि हमहुं सभ फतिंगा के बत्ती पर नचैत देख' लगलहुँ.

बाबूजी सेहो ठोर पर मुस्कान पसौरने, एक्के टक्के फतिंगा कें देखैत ओकर जश्न मे शामिल भ' गेलाह.

(2)

द्वंद

काल्हि साँझ मे अपन बेटा-बेटी संग छत पर बैसल छलहुं. बेटा, अन्तरस्नातक क' प्रतियोगिता आओर बेटी अंग्रेजी सं स्नातकोत्तर'क परीक्षा केर तैयारी क' रहल छथि.

चर्चा'क दौरान, हम अपन किछु मित्र आओर संबंधी'क परिवार'क चर्चा क' कहलियैन्ह जे,

"देखू, हुनकर बाल-बुच्ची सभ घर-परिवार'क नाम पुरे परोपट्टा मे रोशन क' देलैथ.... हमहुं अपने सभ सं इएह आस लगौने छी....."

लगले बेटा बाजल, "की हई छै, एतेक पढ़ला-लिखला सं....? एतेक पढ़ि-लिखि, आईआईटी आओर अन्य कोनो पढ़ाई केलहुँ आ नोकरी भेटैछ बारह-तेरह हज़ार सं ...."

"जे दिन-राति लगा, मेहनत करतै ओकरा सफलता अवस्से भेंटतै. अहां सभ कें पढबा मे मोने नहि लगैए, तखन एहने बात फुरवे करत.... दिन-राति मोबाइल आओर फेसबुक....व्हाट्सएप्प केर सिवाय कहियो किताबो केर दरस होइबो करैया....? खाली दिमाग शैतान केर.... "

हम दमसाइत बजलहुँ.

"पापा,अहां बात बुझलहुँ ने, लागलहुँ डांट', ओ की कह' चाहैए.... बुझु त' ?"

बेटी बाजलिह.

"की बाजत, ओ घमन्डे फूलल अहि. परीक्षा मे एतेक नंबर मे पास ने कै गेल की बुझैए, की ओ राजेन्द्रे प्रसाद भे गेल...." हमर तामस बढ़' लागल.

"पापा, अहां सभ कें खाली पढ़ाई.... पढ़ाई.... पढ़ाई.... की एकरो अलावे आओर कोनो रस्ता नहि अहि, जेकरा सं घर-परिवार आओर समाज'क नाम बढ़ि सकै ?"

बेटी बाजलिह. हम कनेक शांत भ' ओकर बात सुन' लागलहुँ, "पापा, अहां सब पुरना जमाना मे जीवि रहल छी आओर नवका सोंच पालने छी. हमर रुचि डांस मे छल.... अहां बाज' लागलहुँ जे आई धरि हमर परिवार मे ई नहि भेलै,हम मोन मारि पढ़' लागलहुँ मुदा पढ़' मे एक्को रत्ती मोन नहि लागल,फेल क' गेलहूं.... अहां'क डरें, आई हम पीजी त' क' रहल छी, मुदा आगू की हेतै नहि कहि.....?" बजैत-बजैत ओ कान' लगलीह.

"हमरा कोन आज़ादी भेंटल.... ?

मैट्रिक धरि टीसन सं ओहि पार जेनाइ पर रोक....

बाजार जेनाइ पर रोक....

दोस्त बनाव' सं रोक....

हमर मोन क्रिकेट सं छल,खेल' सं रोक....

खाली,रोके-रोक.... अप्पन कोनो मर्ज़ी नहि !" बेटा बाजल.

"हम त' अहीं सभ'क कैरियरे वास्ते ने केलहुँ. पढ़ि-लिखि ऑफिसर बनब,त' अहीं सभ'क प्रतिष्ठा ने बढ़त ?"

"पापा,अहां हमर नहि, अपन प्रतिष्ठा देखि रहल छी. हमर कोनो इच्छा नहि, अहीं सभ'क थोपल इच्छा कें पूर्ण कर'क वास्ते अपन इच्छा केर पूर्णाहुति दैत आवि रहल छी.... ! अहां सभ'क इच्छा पूर्ण अवस्से करब,मुदा आव' वाला भविष्य केर संग हम एना नहि करब,ई हमर प्रण अहि." बेटा बाजल आओर हुनक विचार सं हमर बेटी सेहो सहमति छलीह.

-मिथिलेश कुमार सिन्हा

अधिवक्ता,

मोहल्ला/पोस्ट : लक्ष्मीसागर, जिला : दड़िभंगा

२

आशीष अनचिन्हार

"इश्क को दिल में दे जगह अकबर" आ जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल

गजलमे बहर ओ व्याकरण विरोधी लोक सभ अधिकतर एहि शेरक बेसी उदाहरण दै छथि (एहि शेरक बहुत पाठांतर छै)

इश्क को दिल में दे जगह अकबर
इल्म से शायरी नहीं आती

मने ओहन लोक सभकेँ कहनाम जे गजलमे खाली इल्म नै हेबाक चाही मुदा ई कतेक बड़का विडंबना छै जे एहू शेरमे पूरा पूरी बहरक पालन भेल छै मने ईहो शेर इल्मक उपज अछि। आब ई बात अलग जे विरोधी सभकेँ बहर अबिते नै छनि तँ ओ एकरा गानि कोना सकताह। वास्तविकता तँ ई छै जे हमर मैथिल "महान" गजलकार सभ अभिधामे बेसी बूझै छथि आ तँइ एहि शेरक अर्थकेँ अभिधामे ल' लेने हेताह। जँ एहि शेरक तहमे जेबै तँ एकर अभिधा बला अर्थक अलावे अन्य अर्थ सेहो छै जकरा एना व्यक्त कएल जा सकैए

इल्म को दिल में दे जगह अकबर
इश्क से शायरी नहीं आती

मने जँ खाली इल्मसँ शाइरी नै हेतै तँ खाली इश्कोसँ शाइरी नै भ' सकैए। इएह एहि शेरक मूल बात छै। हरेक चीजमे संतुलन हेबाक चाही तखने ओ नीक काव्य हएत। ई बात इल्म बला आ इश्क बला दूनूकेँ नीक जकाँ बूझए पड़तनि अन्यथा दूनूक काव्य बौके टा रहत। निच्चा एहि शेरक बहर देखा रहल छी

इश्क को 212 दिल में दे 212 जगह अकबर 1222
इल्म से 212 शायरी 212 नहीं आती 1222

आब एक बेर कने जगदीश चंद्र ठाकुरजीक एहि शेरकेँ देखू

बहरक बन्धन अछि,हमरा आजाद करू
हम त गजल छी, हमरा नै बरबाद करू

एहि शेरकेँ पढ़िते बहुतों बहर पीड़ित लोकक आह निकलि गेल। मुदा ओहि पीड़ित लोक लग दृष्टि छैने नहि जे ओ देखता जे अनिल जीक एहि शेरमे सेहो बहर छै (22222222222)। गजलक सौंदर्य इएह छै जे ओ अपन तत्वक विरोध नियमक भीतर करैत छै। से चाहे इल्मक प्रसंग हो कि बहर बंधनक प्रसंग। दूनू शेरक मंतव्य इएह जे ने बेसी इल्मसँ शाइरी हएत आ ने बेसी इश्कसँ। हमरा जतेक अनुभव अछि ताहि हिसाबसँ बेसी इल्म बला आ बेसी इश्क बला लोक अनुपयोगी भ' जाइत छै। बेसी इल्म बलाकेँ पागल हेबाक खतरा बेसी रहैत छै तँ बेसी इश्क बलाकेँ आवारा आ बदचलन होइत देरी नै लागै छै। आब अहाँ सभहँक अनुभव जे हो।

३

कैलाश कुमार मिश्र

लघुकथा

बुरिराज

राघब विश्वविद्यालय केर छात्रावासमे रहैत पीएचडी करैत छलाह।सँयोगसँ राघबक ममियौत भाईक लड़का मुदा उमेरमे मित्रवत सोहन राघब लग कॉम्पिटिटिव परीक्षा सबहक तैयारी लेल आयल छलनि। चारिएवर्षक अंतर होबाक कारणे दूनूक बीच काका-भातिजक कम आ सँगतुरिया वर्ताव अधिकछलनि। सोहन राघबक होस्टलमे पाइल ऑन गेस्टक रूपमे रहैतछलाह। सोहनयूनिवर्सिटीमे टुटपुंजिया नेता सब सँग घुमय लगलाह। राघबक भतीजा बुईझ लोककनि भाव जरूर दैत छलनि।

एकदिनसोहन सङ्गेनिर्भय राघब लग एलाह। निर्भयबिहारककोनोयूनिवर्सिटीसँ इतिहासमे बी ए केलाक बाद राघबक यूनिवर्सिटीमे प्राचीनइतिहाससँ एम ए'मे नामांकन लेने छलाह। निर्भय राघब लग विनम्रतासँबैसलाह।

निर्भय बीच-बीचमे राघब लग अबैत रहलनि। निर्भय यूनिवर्सिटी केर एम ए प्रीवियस केर परीक्षामे बहुत खराप अंक अनलाह। हिनकमाता-पिता दूनू कोनो यूनिवर्सिटीमे प्रोफेसर छलथिन। तकर फायदा उठबैतनिर्भय ओहि यूनिवर्सिटीसँ प्राचीन इतिहाससँ एम ए कऽ लेलाह।मुम्बईमे कोना ने कोना निर्भय एक सँस्थानमेकला इतिहास सँ एम ए'मे नामांकन लऽ लेलाह। दू वर्षक कोर्स निर्भयपाँच वर्षमे पूरा कएलाह।

निर्भय छलाह भाग्यक सांढ़।माता पिताक असगरुआ बेटा। दू बहिन पर एक भाई। जखन हिनक एम ए केर रिजल्ट निकलएबला छलनि ताहि समय एक कला संस्थानमे एक लाला जी लोचन लाल दासकेँ पकड़लाह। दासजी हिनके शहरकछलथिन जिनका निर्भयक माय राखी बनहैत छलथिन। निर्भय दास जीकेँ मामा कहैत हुनकर शरणमे नतमस्तक छलाह। दास जी धुरफन्दी लगानिर्भय केँ कला संस्थानकक अभिलेखागारमे नौकरी लगा देलथिन।

एक वर्षमे राघब सेहो कला संसथानमे आबि गेलाह। सँयोग एहेन जेनिर्भय आ राघबक विवाह एकै साल, एकै मास आ एकै दिन भेलनि। अंतर अतबे जे राघबकविवाह माता-पिता द्वारे निर्धारित आ निर्भयक विवाह प्रेम नामक रोगक अंतिमपरिणाम जाहिमे अनेक भाभट, नाटक आदिक भूमिका प्रबल।

निर्भय केर जेठ बहिनक ननदि हेमा निर्भयसँ नौ वरखक छोट मुदा पोखगर छलीह। हेमादूधिया गोड़ाईसँ गज्जब सुन्नरि लगैत छलीह। दुबर पातर चमकैत चेहरा छलनि हेमाक। बड़की-बड़की आँखि, तेहने सुन्दर ठोड़, घुरमल-घुरमल केश, छोट मुदा गस्सल-गस्सलविकसित आ प्रस्फुटित होइत वक्ष। नितम्ब यद्यपि ओतेक

विकसित नहि छलनि। नितम्बक विकसित नहि भेनाईक अर्थ ई नहिं जे हेमा आकर्षण, सौन्दर्यमे कोनो तरहेँ कम छलीह।

हेमा सत पूछी तऽनिर्भय लग खिच्चा छलीह। ताहिसँ की, सँबंधमे हेमा निर्भयकेँ बहिनकननदि छलीह से निर्भयकेँ परिहासक अवसर दैत छलनि। एकबेर हेमा इंटरमीडिएट केरपरीक्षा देमय निर्भय ओतय एलीह।निर्भय हेमाक समीप आबय लगलाह।सामान्य हास-परिहास नहुँ-नहुँ प्रेममे परिवर्तित होमय लगलनि। बातक प्रेमआब आँखि, भंगिमा आ मुद्रासँ होमय लगलनि। शुरूमेहेमा ओतेक गम्भीर नहिंछलीह लेकिन निर्भय हुनको गम्भीर बना देलथिन। प्रेम शब्दक बाटसँ देहक सीमापर आबि गेल छल। दूनूकेँ बयसक अंतर समाप्त भऽ गेलनि। जाड़क मासमे अपन सीरकमे घुसल हेमा पोथीक सामीप्य कम आ निर्भयक हाथ, मुँह आ ने जानि कोन-कोन अंगकसामीप्य अधिक करय लगलीह। दूनूक जीवनमे एक अपूर्व रस भेटनाई शुरू भेलनि।किताबक पथ हेमाक सँग छोड़ि देलक आ आब प्रेमक बाट हिनका दूनूकेँ अपना लगबजा लेने छल।

एक दिनजखन हेमा अपन सीरकमे घुसल छलीह आ निर्भयक हाथ हुनक अंगक विशेष भाग दिस हलचलकऽ रहल छल तखन हेमा प्रेमक रसमे डुबकी लगबैत कनि अपन प्रेमक प्रतिसाकांक्ष होइत बजलीह: "यौ निर्भय ! अहाँ जे अतेक आगा बढ़ल जा रहल छी हमरा सङ्गेसे एक बात बुझल अछि?"
निर्भयक हाथ एकाएक चहलकदमी छोड़ि देलक। कनि चिन्तित होइत बजलाह:"से की?"
हेमा: "यएह जे अहाँ अतेक आगा बढ़ल जा रहल छी। अहाँक माता-पिता आ ओहूसँ आगा हमर भैया-भौजी अहाँ आ हमर विवाह लेल तैयार हेताह?"
निर्भय : "एक बात कहु।"
हेमा: "पुछू"।
निर्भय :"देखु हेमा, अगर अहाँ तैयार छी तऽ बाँकी काज हमरा पर छोड़ि दिय। हम सबकेँसम्हारि लेब। हमरा बुझल अछि जे एकर सबसँ पैघ विरोध हमर बहिन आर्थत अहाँकबड़की भौजी करतीह। लेकिन देखल जएतैक। हम अपन छोटकी बहिन आरती एवम बहिनोईकेँमना लेब अपना दिस। ओकरे सबहक सहयोगसँ माय सेहो मानि जेतीह। एक बेर मायकहृदय पसिज गेलनि तऽ ओ हमर पिताकेँ सेहो तैयार कऽ लेतीह। हम अहाँकेँकोनो अवस्था मे असगर नहि छोड़ि सकैत छी।" निर्भयक हाथ बात करैत-करैत फेरोहेमाक सीरक दिस घुइस गेलनि आ अपन काज शुरू कऽ देलक। हेमाक शरीर आनंदक स्पर्शसँसिहरय लगलनि। प्रेमक ताप केहेन होइत छैक तकर अनुभव हेमा आ निर्भयसँ बढियाँके बुईझ सकैत छल? निर्भयक हाथ चलैत रहल। कखनो जोर तऽ कखनो कनि हल्लुक मुदाअनवरत। हेमाक पोर-पोर प्रफुल्लित। बिना कोनो व्यवधान केने हेमा बाजि उठलीह:
"जनैत छी, हमर भैया चूंकि हमर बेमातर भाय छथि, तांहि कारणे सेहो ओ आ हमरभौजी हमर अहाँक विवाह लेल तैयार नहिं हेतनि। ओना हम अपन मायकेँ मना सकैतछी।"
निर्भय अपन हाथकेँ गतिमान रखैत बजलाह: "देखूहेमा! अहाँक भैया अहाँक ने बेमातर छथि, हमर तऽ अपन बहिनक पति छथि। हम जनैतछी कोना हुनका सबकेँ मनाबी। अहाँ चिंता नहिं करु।"

आबनिर्भय हेमाक सीरकमे पूरा घुइस गेलाह। दूनू ओहि यात्रामे तल्लीन भऽ गेलनि जाहिमे पति-पत्नी भऽ जाइत अछि।

एहि तरहे एहि तइसदिनक प्रवासक अवधिमेहेमा आनिर्भय एक दोसरक देहक आ मोनक प्रीत आ प्रेमक धारमे कतेक बेर डुबकी लगेलनितकर कोनो हिसाबे नहिं। उचितो यएह। प्रेमक कही मात्रा, सँख्या अथवा घनत्वदेखल गेल अछि?

जखनहेमा निर्भयक शहरसँ वापस अपन गाम चलि गेलीह तऽनिर्भयकेँ राति काटब मुश्किल। हेमाकेँ सेहो निर्भय बिना अपन जीवन पहाड़ बुझना जाइन।

अन्ततःनिर्भय हिम्मत करैत अपन छोट बहिन आ बहिनोईसँ बात कएलाह। हुनकर छोटकी बहिनतैयार भेलीह। मायकेँ बहुत प्रेमसँ बतेलनि। माय मना कऽ देलथिन तऽ आरतीबजलीह:"अहाँ नहि तैयार हएब तऽ भाईजी किछु कऽ सकैत छथि। घर त्यागि सकैत छथि।"

निर्भयकेँ माय आब तैयार भऽ गेलीह। अतबे नहि ओ अपन पतिकेँ सेहो मना लेलनि। निर्भयकपिता एहि लेल मानि गेलाह जे निर्भयसँ एक पैघ भाय सतरह बरखक भेलाक बाद मरिगेल छलथिन। कोनो माता पिताक लेल अहिसँ पैघ दुर्भाग्य की भऽ सकैत छलनि?

निर्भयकेँ माता-पिता जखनअपन बेटी जमायसँ एहि बारे मे गप्प कएलाह तऽ ओदूनू अग्निश्च वायुश्च। कतबो माय, छोटकी बहिन बहिनोई आ पितामनेलथिन, ओ दूनू नहिए तैयार भेलाह। आब की हो? कोना कऽ मिलन विधना दूनूकरतै रे की?

निर्भयकेँ जखन कोनो उपाय नहिं भेटलनि तऽ झटदनि मूसक दबाई आनि लेलाह। ओकरा घोरि पी गेलाह। सौभाग्यसँ छोट बहिनोई देखलेलथिन। घरमे कोहराम मचि गेलनि। तुरत डॉक्टर लग लऽ गेलनि। बहुत उपायसँनिर्भयक प्राण बचाओल गेल। जखन निर्भय ठीक भऽ गेलाह तऽ जेठ बहिन आ बहिनोई हुनकालग अबैत नोरायल मुँहे कहि देलथिन: "अहाँक प्रेम जीतल। हमर जिद हारि गेल।"
हेमाकेँ सेहो निर्भयकेँ देखबा लेल गामसँ शहर बजाएल गेल छल। हेमाक आँखिकनैत-कनैत लाल भऽ गेल रहनि। निर्भय केर माता पिताक चर्च नहि हो तऽ नीक। मुदाआब सब कल्याणक पथ पर आबि गेल छलाह।
अहि तरहेँ निर्भय आ हेमाक विवाह सामान्य तरहेँ बिना कोनो दहेजक भेलनि। दूनू एक सँग जीवन जीबाक हेतु तैयार भेलाह। विवाहक किछुए दिनक बाद निर्भयकेँ नौकरी लागि गेलनि। घर पर कोनो कमी छलनि नहि __माता-पिता दूनू प्रोफेसर।
निर्भय अपन जीवन जिब रहल छलाह। सब तरहें सम्पन्न।निर्भय केर एक कमी छलनि। हिनक अंग्रेजी बहुत अधलाह। हिंदी यद्यपि बहुत नीक बजैत छलाह। लिखियो नीक लैत छलाह। मुदा एक कुंठा पोसि लेने छलाह। कुंठा इ जे जँ हिंदीमे लिखता तऽ लोक इलीट, ज्ञानी, मॉडर्न नहि बुझतिन। एहि कुंठाक कोन

उत्तर? एक बात आरो, निर्भय अंग्रेजी सिखबाक यत्न कहियो नहि केलनि। ओना विद्वान लोक बुझय ताहि लेल बहुत साकांक्ष रहैत छलाह।नाना तरहक स्वांग रचैत रहैत छलाह। बहुत तरहक पोथी जे कला, इतिहास, हेरिटेज, साहित्य, पुरातत्व, मीमांशा, नाटक, आदि पर होइत छलैक तकरजोगार करैत छलाह आ अपन घर आ ऑफिसक रैकमे सजेने रहैत छलाह। लोक बुझ जे निर्भय विद्वान छथि। ओहिमेसँ अधिकांश पोथीक पाँचो पन्ना ओ कहियो नहि पढलाह। पोथीक जोगार निर्भय तीन तरहें करैत छलाह; पहिल, किताबक दोकान अथवा पुस्तक मेलासँ कीनकऽ, दोसर, मित्र अथवा ककरो लग गेलाह तऽ पढबाक लाथे मांगि कऽ, जे कहियो वापस नहि करैत छलाह, आ तेसर, चोराकऽ।निर्भय पोथी चोरीकेँ कोनो पाप अथवा दुष्कर्म नहि बुझैत छलाह। हुनका कियोक कहि देने छलनि जे दिल्ली यूनिवर्सिटी, पटना यूनिवर्सिटी आ कोलकाता यूनिवर्सिटी केरप्रोफेसर सब सेहो पोथी कखनो झोरामे, कखनो छत्तामे तऽ कखनो कोनो आन चीज़मे चुपे चाप राखि पुस्तकालय अथवा सार्वजानिक स्थानसँ लऽ जाइत छलाह। फेर की निर्भय एकरा अपन मौलिक अधिकार मानि लेलनि। पोथी चोरी कतौ चोरी भेलैक अछि! किन्हुँ नहि।निर्भय अहि तीन युक्तिसँ बिपुल पोथीक स्वामी भेल जा रहल छलाह।निर्भय लग कियोक पहिल बेर अबैत छल तऽ ओकरा लगैत छलैक जे कतेक महान पढ़ाकू आ विद्वान लग आबि गेल अछि!

निर्भयकेँ कपड़ा पहिरक कोनो ज्ञान नहि छलनि। छलाह लेकिन कला संस्थानमे ताई रंग-विरंगक विचित्र परिधान पहिरैत रहैत छलाह। कहियो हदसँ अधिक पैघ कुरता आ पायजामा, तऽ कखनो किछु।

आर जे हो लंगोटक बड़ जोरगर छलाह निर्भय। जखन कला इतिहाससँ एम ए करैत छलाह तऽ एक बेर गोवा, मुंबई, एलोरा, एलीफैंटा आदि स्थान पर समस्त विद्यार्थिक टोली सँग गेल छलाह। हिनक विषय एहेन छल जाहिमे तथाकथित मॉडर्न, इलीट आ नव धनाढ्यक बेटी, पत्नी आदि समय जियान करबा लेल नामाकन लऽ लैत छलीह। हुनका सबलेल शारीरिक अथवा यौन सुख बस ओहिना समय काटक एक युक्ति मात्र छलनि। अगर विवाहसँ पूर्व कोनो लड़की अथवा विवाहित नायिका कोनो पर पुरुख सँग यौन सुखक प्राप्ति कऽ लेलक तऽ एहिकेँ पाप पुन्यसँ जोरिक देखब हिनका सबलेल पाप छलनि। इ क्षणिक सुख छैक। भेल, क्षणिक सुखक आनंद भेटल। दूनू प्रेमक रससँ रसप्लावित भेलनि। बात खत्म। एकरा खिचनाई अथवा एकर इतिहासमे घुसनाई व्यर्थ। एहेन धुरंधर विचारक महिला आ नायिकानिर्भय सँग एम ए शिक्षा लैत छलीह।

ओहि महिला मण्डलमेसँ एक महिला सौम्या जे सांवरि, सुंदरि छलीह। अति मॉडर्न छलीह। चिकित्सक माता-पिताक बेटी छलीह। कोनो तरहक फ्रेम अथवा वन्धनसँ मुक्त छलीह।सौम्याक उरोज भरल सुराहीसँ एकौ रत्ती कम नहि छलनि। गाल भरल-भरल, केश ओतेक पैघ नहि किन्तु झमटगर, खूब कारी, कमर बहुत पातर, नितम्ब सुडौल, अतेक कलात्मक जे बुढो प्रोफेसर सब एक बेर ओहि पर आँखि अवश्य गड़ा दैत छलनि।लोक सौम्याकेँ देखिते सपनाक अलौकिक सँसारमे भेर भऽ जाइत छल। नाना तरहक सोच उफान मारए लगैत छलैक। मुदा तुरते अपन अवस्था, पद, प्रतिष्ठाक भान होइते ओ वापस अपन विज्ञक सँसारमे आबि जाइत छलाह।सौम्याक सबसँ पैघ बात हुनकर सांवरि रंग आ वस्त्रसँ अपना आपकेँ सजेबाक कला छल।सौम्याकेँ देखलासँसांवरि नारी कतेक सुन्दरि, कामुक, उत्तेजक भऽ सकैत अछि; कोना दुग्धधवल

नायिकाकेँ अपन सौन्दर्य, वस्त्र विन्यास, कनखी-मटकी, आ चामक पानि सँ पछारि सकैत अछि, तकर जिवंत प्रमाण भेटैत छल।

खैर निर्भय अपन ग्रुपक लोक सबहक खूब ध्यान रखैत छलाह।हुनकर एहि गुणक ग्राहक सब छल। एक राति लड़का-लड़की सब बोन फायर केलक। सालक अंतिम दिन आ नव वर्षक प्रथम दिन सबकेँ एक संग मनेबाक अवसर भेटलैक। की सब नहि एलैक। मांस-मदिरा-नृत्य-गीत-मस्ती-भयमुक्त वातावरण। ने घरक लोकक धाख ने यूनिवर्सिटी केर प्रोफेसरक चिंता _सर्वतन्त्र स्वतन्त्र। एक मालिनी मात्र जे ओना तऽ बहुत सुन्दर छलीह मुदा बहुत सौम्य आ शालीन बनबाक अभिनय करैत छलीह। प्रेमक बात तऽ सुनैत छलीह मुदा लज्जा भावक अभिनयमे हिनक उत्तर नहि। एकबेर भरत मोगा नामक स्मार्ट, सुंदर आ वैभवशाली युवक हिनक सौन्दर्यसँ आकर्षित भेल हिनका दिस मित्रताक हाथ बढ़बैत कहि देलथिन: "हेलो! यू आर सो एंटरक्टिव एंड ब्यूटीफुल गर्ल!"

मालिनी मोने-मोने प्रसन्न भेलीह मुदा भेलनि एकाएक कोना हाँ कहि देथिन।झटदनि उत्तर देलथिन: "हमरा एहि तरहक मजाक नहि पसिन अछि। हम कनि दोसरे तरहक लोक छी।"

तावेत धरि भरत एक पेग ढारि नेने छलाह। केजुअल भेल बजलाह: "कम ऑन मालिनी! ज़माना कतऽसँ कतऽ चलि गेल आ अहाँ एखनो पंद्रहवीं शदीक भारतक मानशिकतामे जीब रहलि छी।हमरालोकनि कला जगत केर लोक छी। अतए उन्मुक्तता छैक। लोकक विचार आ व्यवहार ग्लोबल छैक। लिवइन रिलेशनशिप आम बात छैक। आ अहाँ एहेन बात कहैत छी!" इ कहैत भरत बहुत प्रेमसँ अपन हाथ मालिनीक कान्ह पर राखि देलाह। मालिनी झटदनि हुनक हाथ हटबैत बजलीह: "माइंड योर बिज़नस भरत! हम सड़कछाप लड़की नहि छी। जे केलहुँ से केलहुँ। भविष्यमे एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हो से ध्यान राखब।"

भरत बुझ्झ गेलाह जे मालिनी दोसरे होपलेस स्टफ छथि। इ मिथ्याक अहंकारमे जीबी रहलि छथि।मोगा कोनो दोसर लड़की जे मस्त भेल नृत्य करैत छलीह लग चल गेलाह।
सौम्या टाइट जीन्स आ शर्ट पहिरने छलीह। उत्तेजक-आकर्षक-मादक! ओहिराति निर्भय बहुत उत्साहित छलाह। मुदा ओहि ग्रुपमे दू मनुखझर छल: स्त्रीगनमे मालिनी आ पुरुखमे निर्भय।निर्भय आ मालिनी दूनूमे कियोक मदिरापान नहि करैत छलनि।मालिनी चारि डेग आगा छलीह _मांस भक्षण सेहो नहि करैत छलीह। वेचारा निर्भय शीतल पेय केर दस बोतलक जोगार केने छलाह। जखन लोक हाथमे मदिराक गिलास लेने जाम हेरा रहल छल, निर्भय ओकरे सबहक तालमे ताल शीतल पेय केर गिलाससँ कऽ रहल छलाह। हुनकोसँ अलग सिंगल पीस बनलि मालिनी एक कोनमे दोसरे दुनियाँमे विचरण करैत शीतल पेयक चुसकी आधे मोने लऽ रहलि छलीह।
कार्यक्रम चलैत रहलैक। बिना पीने लोक सबकेँ पिबैत आ झुमैत-गबैत देख निर्भयकेँ शीतल पेयसँ रमक नशा आबए लागि गेलनि।निर्भय मस्त भेल गेलाह। जेना-जेना राति भेल जाइक तेना-तेना लोक स्वतंत्र-उच्चश्रृंखल भेल गेल। स्त्री-पुरुख, छोट-पैघक, स्थानीयता आदिक दूरी खत्म भेल गेलैक।

सौम्या बहुत कम चीज़क उपयोग अपन मूँह कानकँ सुन्दर बनेबाकलेल करैत छलीह। लेकिन काजर, मस्करा, बिंदी, साड़ी, सूट, शर्ट आदिक रँगकअनुकूल अथवा कंट्रास्टक झुमका अवश्य धारण करैत छलीह जे हुनका विशेष सेक्सी आआकर्षक बनबैत छलनि। हिनक देखब आ ककरो निहाराब बहुत मारुक छल। ऊपरसँमुक्तांगी आ मस्त छलीह सौम्या ।

सौम्याकँ देख निर्भय सेहो मादक आ उत्तेजित भऽ गेलाह।सौम्या कनि बेसी मूडमे छलीह। दोसर पैगकँ बाद सौम्या जेना संतुलन समाप्त करए लगलीह। देहकाँपय लगलनि। ठोड़ लड़खड़ा गेलनि। माथ भारी भऽ गेलनि। कखनो की बाजथि तऽ कखनोकिछु आरो। उन्मुक्तता सेहो अपन रँग देखाबय लागल। सौम्याक मस्ती बढ़लगेलनि। भाषाक व्यर्थ अनुशासनसँ ऊपर उठए लगलीह। बहुत बात सब जे नारीहोबाक कारण आ सामाजिक मर्यादाकँ कारण अपना पेटमे, आंतमे, माथमे,करेजमे दबेने रहैत छलीह से जोर-जोरसँ भयमुक्त वातावरणमे बाजय लगलीह। सब यएहसोचैत रहल जे सौम्या अपन सम्हारमे नहि छथि, नशामे भेर छथि तांहि जे मोनमेअबैत छथि से सब बजने जा रहलि छथि। ताहि राति सौम्या कँ सात खून माफ़ छलनि।

बीच-बीचमे सौम्या साकांक्ष भऽ जाथि। होनि, ई की कऽ रहलि छथि! कनिकबेकालमे फेरोमत्त। पेग लेकिन नहि थमलनि। जखन पांच भऽ गेलनि तऽ रंग विरंगक विभत्स गारिबजनाई शुरू केलीह। आब हुनका लोक कहि देकलन्हि जे बोतल खाली भऽ गेल छैक। रातिबहुत भऽ गेल छैक। आब मदिराक सब दोकान बन्द भऽ गेल छैक। ई बात सुनि तामसे भेरभेलि सौम्या आयोजककँ माए-बहिन लगा गारि पढ़ैत रहली। लोक सब मनहि मोन हँसैतरहल।

एहि बातसँ एक बात स्पष्ट होइत अछि जे हम सबसमाजक ठेकेदार बनि रहल छी। नारी स्वतंत्रता एखनो दूरसँ भले जेलगैत हो, यथार्थमे अग्गब सपना जकाँ अछि।

सौम्या सन नारी जखन उन्मुक्त नहि तऽ ककरा कहि स्वतंत्रताक अधिकारी। नारी मोनशिक्षा सँग अधिकार मनैत अछि, स्थान मङ्गैत अछि, ओकरो बात पर लोक अमल करैकसे व्यवस्था मङ्गैत अछि, पुरुखक सँग आ समकक्ष चलए चाहैत अछि। सब तरहेँस्वच्छन्द रहए चाहैत अछि। जहिना पुरुख कतऽ जा रहल अछि, की कऽ रहल अछि, कखन खाइत अछि, कतए आ कखन सुतैत अछि से कियोक पुछनाहर नहि, तहिना तऽ स्त्रीकँ सेहो अपन जीवनक संचालित करबाक सुविधा, स्वतन्त्रता भेटकचाही ने! से नहि भेटलैक तऽ केहेन स्वतंत्रता? तांहितऽ मदिराक नशासँ मातलिसौम्या चिचिया कऽ कहैत छथि, "फक यू मेन! यूआर बुलशिट! डोंट चीटमी। केवल पाई देनाइ, नीक स्कूलक शिक्षा, सुविधासँ स्वतंत्रता नहि भेटैत छैक। असली स्वतंत्रता अहाँक दिमागमे नुकाएल रहैत अछि। अहाँ कायर छी। घटिया छी।अहाँ डरपोक छी।अगर एक पुरुख कोनो स्त्री संग देह बांटि सकैत अछि तऽ फेर स्त्री कियैक नहि? इ पाप पुण्य सब पुरुखक ढ़कोसला अछि। कोनो महिला कियैक नहि अपन मोनक आनंद अपन मोनक पुरुखक संग उठा सकैत अछि? चुतिया..." सौम्या अतहिँ नहि थमहली। बहुत बात बजैत रहलनि। बहुत बात लिखब तऽ मर्यादा चकनाचूर भऽ जाएत।

सौम्या भोजन मोनसँ नहिं केलीह। थोड़ेक कालमे निर्भय सौम्या केर हाथ पकड़ि हुनक घर दिस लऽगेलाह। सौम्या घर पहुंच गेलीह। निर्भय सौम्याकेँ हाथसँ पकड़ि हुनक बेड पर सुतेबाकप्रयत्न करए लगलाह। एहि प्रक्रियामे कतेक बेर निर्भयक हाथ सौम्याक उंन्नतभरल पयोधरिसँ टकराएल। जतेक बेर स्पर्श होइक़ ततेक नीक लगैक। निर्भयकेँ आबसेहो नशा लागि गेल छलैक। ई नशा मदिराक नशा नहि, सौम्याक सौन्दर्यक नशा, सौम्याकसेक्सी शरीरक स्पर्शक नशा छलनि। पुरुखक मोन,निर्भय एक आध बेर नशामे धुत भेलसौम्याकेँ सम्हारबाक बहाने जकड़ि कऽ धेलाह। लेकिन अपन नीक लोकक छविक रक्षा करकजोगारमे निर्भय किछु नहि कऽ पेलाह। आब कनि सौम्या साकांक्ष भेलीह। निर्भय केरशरीरक ठोस बनावट हुनका नीक लगलनि। एक क्षण लेल भेलनि, अगर अहि पुरुखक सँगएखन अभिसार होइत अछि तऽ मोन आ तन, आत्मा आ देह दूनू तिरपित-तिरपित भऽ सकैतअछि। एकर बाँहिक जकड़न हमरा बैकुण्ठक आनंद दऽ सकैत अछि! यैह सोचैत तुरत एक्टकेर मूडमे आबि गेलीह सौम्या ।

सौम्या निर्भय केर झमटगर केश हाथमे बकुटैत बजली: "निर्भय! साले एक बात बताओ?"

निर्भय: "की?"

सौम्या : "अहाँ हमरा ताड़ि रहल रही ने? जानि बुईझ कऽ अपन हाथ हमर ब्रा लग अनैत रही ने?"

निर्भय: "बकबास"।

सौम्या : "सार तोरा हम देह तोड़ि देब। सबहक समक्ष चुम्मा लऽ लेब। चुपचाप सत्य स्वीकार करु।"

सौम्या बजैत रहली। निर्भय चुपचाप सुनैत रहला।

सौम्या : "कम ऑन निर्भय! अहाँ जुआन छी। हम जुआन छी। अगर अहाँक मोन हमरा पर आबि गेल तऽ अहिमे की खरापी?"

निर्भय: "सौम्या माइंड योर लैंग्वेज! की अँट शंट बजेने जा रहलि छी अहाँ? ई सब बात छोड़ू आ चुपचाप आब आँखि मुईन सुइत रहू।"

सौम्या : "एकर मतलब की भेल? अगर हमर अधखुला वक्ष देखि अहाँक मोन नहिं केलक एकर अर्थ ई भेल जे अहाँ नामर्द छी!"

"स्टॉपदिस नॉनसेंस!", निर्भय चिचिया उठलाह। मुदा सौम्या लेल धन सन। सौम्या निर्भयकेँअंगाककॉलर पकड़ि अपना दिस घिचलनि। आब निर्भय मूडमे आबि गेल छलाह। ताबर तोर चुमाकप्रहार करए लगलाह। कखनो अपना दिस खिंच लेथि तऽ कखनो सौम्याक गर्दनि पकड़ि सौम्याकदूनू ठोरक मध्य अपन जीभ डालि सौम्याक जीभक मधु स्पर्श आ स्वादसँ आनंदित होइतरहलनि। सौम्या सेहो विरोधक बदले और सहयोगे करैत गेलथिन। सौम्याक देहसँ मदिरा, सेंट, आ प्रकृतिक स्त्रिजन्य सुगन्ध आबि रहल छलनि। ओहि सुगंधक सब कतरा निर्भयकेँ मादक बनेने जा रहल छलनि।

निर्भय आवेगक अतिरेकमे सौम्याक सब वस्त्र हटा देलथिन। सौम्या कनि संकोच तऽ केलनि कारणसंकोच आ नारी एक दोसरक पूरक होइत अछि। मुदा सौम्याक मोनमे निर्भय सँग देह बाटकततेक उग्र ज्वाला धधकि रहल छलनि जे कनिकबे कालमे अपना आपकेँ निर्भय लगसमर्पित कऽ देलीह। जखन सौम्या निर्वस्त्र भऽ

गेलीह तऽनिर्भय केर वस्त्र अपने हाथेखोलय लगलीह। निर्भय केर उत्तेजना आ सौम्याक सँग देह बाँटब केर अभिलाषा सेहो उग्रभेल गेलनि।

सौम्या निर्भयकअंतिम वस्त्र हटा रहल छलीह तऽ एकाएक निर्भय केर जेंटलमैन बला चरित्र जागिउठलनि। निर्भय सौम्याकेँ झकझोड़ि देलाह। सौम्याकेँ पते नहि चलि पेलनि कि निर्भय अचानकएहेन बेवहार कथिलेल केलनि। कामक ज्वरसँ धू-धू जड़ि रहलि छलीह सौम्या । तामस तऽअतेक भेलनि जे निर्भय केर खून कऽ देतीह।
इमहर निर्भय बिना किछु कहने सौम्याक शरीर पर वस्त्र राखि देलथिन।
निर्भयकमर्यादा, लज्जाभाव एकाएक जाग्रत भऽ गेलनि। कहि देलथिन: "नहि सौम्या, हमरासँ ईसंभव नहि अछि। ई चरित्र लंघन हम नहि कऽ सकब। स्टॉप इट। आई एम सॉरी। हम अपनमर्यादा बिसरि गेल रही।"
कामक अग्निसँ जड़ैत सौम्या एकबेर शेरनी जकाँ निर्भय पर गरजैत बजली: "तखन कथिलेल अतेक आगा बढ़लहुँ? अहाँ मर्द नहिं छक्का छी। बहाँ...द एहिसँ पहिने जे हम तोरा गां----- पर लात मारि भगा दी तों अपने तुरत हमर घरसँ भाग ।"
निर्भय देह झारैत भागि गेलाह। राति भरि कोना समय सौम्या व्यतीत केलनि से वैह बुईझ सकैत छलीह। वैह निर्भय अपन पत्नी हेमा सँग बहुत रोमांटिक छलाह। कामकलाक अनेक आसनकप्रयोग करैत छलाह। कखनो प्रयोगक नाम पर स्थापित सीमाक अतिक्रमण सेहो करैतछलाह।निर्भयकेँ दू बेटा भेलनि। दुनुक मध्य अंतर मात्र सवा बरखक। एक बेरराघबकेँ पता लगलनि जे निर्भय केर कनिया हेमा विमार चलि रहल छथिन। हुनकर डाँरमे दर्द छनि। गम्भीर इलाज चलि रहल छनि। बादमे निर्भय केर दोसर मित्र जेराघबक मित्र सेहो छलथिन आ निर्भय सँग हुनकेँ सोसाइटीमे रहैत छलाह,राघबकेँबतेलखिन जे निर्भय केर पत्नी हेमा हुनकर पत्नीसँ कहलथिन जे निर्भय पृष्ठभागसँसंभोग करबाक जिद ठानि देलथिन। ओहिक क्रममे नश चढ़ि गेलनि। खैर! ई निर्भय केरनिजी मामला छलनि।
निर्भय हमेशा कोनो नीक पढ़य बला केरसंगतिमे रहबाक यत्न करैत छलाह। हुनकर एक मित्र कोनो जोशी नामक छलथिन ।बहुत तेज, सुन्दर। मुदा सबकर्मी आ एक नंबर केर फ्रॉड। चोरीक कलामे प्रवीण।एकबेर जोशी महोदयकेँ लकऽनिर्भय राघब केर होस्टलमे आबि गेल छलाह। राघबकेँ कतौ जेबाक रहनि। निर्भयकेँ अपन घरक चाभी राघब दऽ देलथिन। बादमे जखन राघबअएलाह तऽ पता चललनि जे जोशी जी राघबक अनेक वस्त्र, पोथी आदि चोराकऽ चलिगेल छलाह।
हेमा, अर्थात निर्भय केर पत्नी बहुतसांस्कृतिक आ श्रृंगारिक स्वभावक छलीह। अधिक काल नुआ ब्लाऊज पहिरैत छलीह।दूधिया गोड़ाई। एक तऽनिर्भयसँ नौ वरखक छोट ऊपरसँ बहुत छरहरि, दूभर पातर। कतेकसमय तऽनिर्भय आ हेमाक जोड़ी विपरीत अर्थात पिता पुत्री सँग लगैत छल।
हेमा भोजन, संगीत, मिथिला चित्रकला, योग, नृत्य सबमे प्रयोग करए चाहैत छलीह। ओजीवनक संगीत देखय चाहैत छलीह। वस्त्रकला केर नीक ज्ञान छलनि हिनका। ब्यूटीपार्लर केर ज्ञानमे पारंगत छलीह हेमा।
एक आध बेर हेमा नौकरी करबाक यत्न केलीह मुदा निर्भय तकर अनुमति नहि देलथिन। हेमा ओना ई मनैत छलीह जे निर्भय बहुत प्रवुद्ध लोक छथि।

जाहियासँ राघब कला कला संसथान जॉइन कएलाह निर्भय लेल वरदान भऽ गेलनि। अपन सङ्गी सबकेँपीएचडी उपाधिसँ निर्भय बहुत उत्प्रेरित भेलाह आ पीएचडी लेल कोनो यूनिवर्सिटीसँ पंजीयन लऽ लेलाह। समस्या ई छलनि जे कोना लिखताह? अपने कोनो स्थितिमेनहि लिखताह से बुझल छलनि। कतेक बेर राघबसँ प्रत्यक्ष आ परोक्ष रूपमे कहिदेलथिन मुदा राघब टालैत रहलथिन।

संयोगसँ निर्भयकँमाता पिता राघबसँ परिचित छलथिन। एकबेर कोनो प्रयोजनसँ राघब हुनका लगगेलाह। रातिमे ओतए रुकलाह। रातिमे भोजनक बाद निर्भयक पिता राघब लग दूनू हाथजोड़ि ठाढ़ भऽ गेलथिन्ह। राघब घोर आश्चर्यमे परि गेलाह। तखन निर्भयकेँ पिताकहलथिन: "राघब, अहाँ हमर पुत्रतुल्य छी। हम आ निर्भयक माए अहाँमे अपन पुत्रदेखैत छी। हम नौकरीसँ सेवानिवृत भऽ चुकल छी। हृदय रोगक रोगी छी। जीवनक कीभरोसा? ई निर्भय नालायक अछि। एकरा बूते पीएचडी एहि जन्म के कहैत अछि, सातजन्ममे नहि हेतैक। अहाँ हमरा सबपर एक उपकार करु आ एकर पीएचडी लिख दियौक।अहाँक अहि योगदानकेँ हम जीवन पर्यंत नहि बिसरब। "

निर्भयकमाय सेहो मौन भेल अपन आँखिसँ बहुत किछु कहि देने छलथिन। राघब उठि गेलाह।निर्भयक पिताक हाथ अपना हाथमे लैत बजलाह: "हमहुँ अहाँ सबमे अपन माता-पिताकछवि देखैत छी। ओना ई बहुत दुष्कर कार्य अछि। निर्भय किछु तऽ करत नहि, सब काजहमरे करय पड़त। लेकिन हम तीन मासमे पीएचडी थीसिस लिख दैत छी।"

ई बात सुनि निर्भयक माता-पिताक नेत्र एक दोसरे आभासँ चमकि उठलनि। राघब एक भारसँ दबि गेल छलाह।

राघब कलाकेन्द्र आबि गेलाह। निर्भयकेँ बजा सब सामग्री अपना लग मंगा लेलाह।पीएचडी थीसिस लिखनाई राति-दिन शुरू केलनि।

अहि तरहेँ राघब तीन मासमे निर्भय लेल पीएचडी लिख निर्भय केर माता-पिताक भावनात्मक ऋणसँ उऋण भेलाह।

निर्भय पुरा थीसिसमे पूर्ण विराम के कहैत अछि अर्ध विराम तक नहिँ लिखलनि। ऊपरसँनिर्भयकेँ राघब कहलथिन जे अपन धन्यवाद ज्ञापन लिख लेथि।निर्भय ओहू लेलतैयार नहिँ भेलाह। राघबक आगा अस्त्र राखि देलनि। लाचार अपन माथक केश नोचैतराघब निर्भय केर धन्यवाद ज्ञापन सेहो लिखलनि। ओहिमे राघब जानि बुईझ कऽ अपननाम नहिँ लिखलाह। विश्वास छलनि जे निर्भय या तऽ स्वयं लिख लेताह अन्यथा राघबकेँ कहथिन जे अहाँ अपन नाम लिख लीय। मुदा निर्भय कृतघ्न प्राणी छलाह। राघबकयोगदान हुनका लेल अतबे महत्वपूर्ण लगलनि जतेक योगदान एक हरबाहक कृषिकार्यकसंपादन मे। बल्कि ओहू सँ कम। कारण हरबाहकेँ काजक बदला ओकर बोइन भेटैत छैक।

लेकिन निर्भय अतबो जरूरी नहि बुझलनि जे राघबक प्रतिकृतज्ञता अर्पित करथि। ऊपरसँ अपन पत्नी मेधा, आ हित मित्र लग अपन प्रशंसकपुल बनहैत रहला निर्भय।

संयोगसँ कनिकबे दिनक बादनिर्भयक माता पिता निर्भयसँ भेट करक हेतु दिल्ली एलथिन। राघबकेँ जखन पतालगलनि तऽ राघब भेट करऽगेलाह। भेट होइतहिँ निर्भयक पिता बाजि उठलनि: "कतेकआशीर्वाद दिय

अहाँकेँ राघबजी! अगर अहाँ नहि लिखबा लेल तैयार भेल राहितौं तऽसातो जन्ममे निर्भय बूते पीएचडी थीसिस लिखल नहि होयतैक।" राघब विनम्रतासँसब बात सुनैत रहला।

फेर निर्भयकेँ पिता बजलाह: "लेकिन अहाँक नाम कतौ धन्यवादमे नहिं अछि राघबजी?"
राघब: "पता नहि, शायद निर्भय बिसरि गेल हेताह।"
निर्भयकपिता: "ई कोना भऽ सकैत अछि? हमरा बुझल अछि जे सम्पूर्ण थीसिसमे निर्भयक नामसेहो राघबजी लिखने छथि। फेर निर्भय नाम कथिलेल नहि देलाह?"
निर्भय सकपकाईत बजलाह: "हम पूछने रही। राघब जी नहि लिखलाह।"
निर्भयक पिता कहलथिन: “अहाँ अपन अकर्मण्यता अहूमे प्रदर्शित केलहुँ। अहाँक हम पिता छी हमरा अहि बातक घोर दुःख अछि।” निर्भय मुड़ी गोतने बात सुनैत रहला।
किछु मासक बाद निर्भय केर पीएचडी पूर्ण भऽ गेलनि। अवार्ड भेटि गेलनि।निर्भय आब डॉ निर्भय भऽ गेल छलाह।
एकबेर हेमासँ कोनो बात पर गप्प भेलनि तऽ राघबक पत्नी कहि देलथिन जे राघब निर्भय केर पीएचडी थीसिस लिखने छलाह।हेमा निर्भयसँ पुछलनि।निर्भय चुप भऽ गेलाह।हेमा मुरझा गेलीह। पहिल बेर हेमाकेँनिर्भयक पत्नी बनबा पर ग्लानि भऽ रहल छलनि।“अहाँ हमरा एखन असगर छोड़ि दिय! बस।” अतेक कहैत हेमा अपन हाथ कपार पर धऽ लेलनि।निर्भय निरर्थक गंभीर बनल ओतएसँ दूर भऽ गेलाह।
दोसर दिन निर्भय एकबेर पुनः राघबसँ पुछि देलथिन: “राघब! अहाँ अपन पत्नीकेँ बता देने छलयनि जे अहाँ हमर पीएचडी थेसिस लिखने रही?”
राघबकेँ इ प्रश्न जेना तामस चढ़ा देलकन्हि “अहाँ की बुझैत छी! ओ हमर पत्नी छथि हम हुनका नहि सूचित करबनि तऽ ककरा कहबै? अहाँ अतेक निर्लज्ज छी जे हमर नामक कतौ उल्लेख तक नहि केलहुँ। अपन पत्नी हेमा लग अपन वैदुश्यक बखान करैत छी। आ हम ओतेक मदति केलाक बादो चोर जकाँ रही! एहने बात छल तऽ अपनेसँ लिख लितहुँ।” एकर बाद दूनू चुप भऽ गेलाह।
खैर, किछु दिनक बाद राघब नौकरीसँ त्यागपत्र दऽ देलाह।निर्भयसँ मुक्ति भेट गेलनि। समय चलैत रहलैक। पाँच मासक भीतर एकदिन निर्भय दस बजे रातिमे कनैत फोनसँ सूचित केलथिन जे निर्भयक पिताक निधन एकाएक हृदयगति थम्हि गेलासँ भऽ गेलनि। राघब बहुत दुखी भेलाह। जतबे दुःख अपन पिताक मृत्यु पर भेल छलनि ओतबे दर्द तखनो भेलनि। एक बातक संतोष जरुर भेलनि नीक भेल निर्भय केर पीएचडी भऽ गेलनि अन्यथा हुनक पिताक आत्मा भटकैत रहितनि जे हुनक पुत्र कुमार निर्भयसँ डॉ निर्भय नहि भऽ सकलाह!
समयक चक्र चलैत रहलैक। किछु व्यक्तिगत विवशतासँ राघब नौकरीसँ त्यागपत्र दऽ देलनि। निर्भय संस्थाँकेँ धेने रहलाह।सरकारी तंत्रमे जेना होइत छैक, होइत रहलैक। निर्भयक तरक्की हुनक पीएचडीक कारण होइत रहलनि। कुरता-जीन्स पहिरने निर्भय अपन देहक आ वस्त्रक सम्प्रेषणसँ विद्वान भेल रहैत छथि। भीतरक निर्भयकेँके देखैत अछि? ककरा लग समय छैक?

नोट:इ कथा पुर्णतः काल्पनिक अछि। एकर सम्बन्ध कोनो जीवित अथवा मृत व्यक्ति या संस्थानसँ नहि छैक।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१. नारायण यादव- गुरुमैता-सल्हैता २. डॉ. बचेश्वर झाक दूटा आलेख- विद्यापतिकालीन मिथिलाक कृषि आ विद्यापतिक रचनामे विरह वर्णन

१

नारायण यादव

गुरुमैता-सल्हैता

मिथिलाक विभूति भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताक जन्म 24 अप्रील 1930 ई.मे ग्राम भवटियाही जिला सुपौलमे भेल छल। स्व. विहारी गुरुमैता बड़ पैघ देश भक्त, क्रान्तिकारी, जुझारू, कर्मठ आ देशक प्रति समर्पित वतंत्रता सेनानी छलाह। भुवनेश्वर गुरुमैताक व्यक्तित्व आ कृतित्व जानवाक लेल हुनक वंशावलीक जानकारी आवश्यक अछि।

वंशी गुरुमैता सोनाई गुरुमैता विहारी गुरुमैता

नागेश्वर गुरुमैता मोतीलाल गुरुमैता

विश्वनाथ गुरुमैता कुशेश्वर गुरुमैता

राज कुमार गुरुमैता राम कु. गुरुमैता

राम नारायण गुरुमैता देवनारायण गुरुमैता

भुवेश्वर गुरुमैता लक्ष्मी ना. गुरुमैता जयकृष्ण गुरुमैता

स्व. विहारी गुरुमैताक सुपुत्र रामनारायण गुरुमैता और देवनारायण गुरुमैता स्वतंत्रताक आन्दोलनक दिवाना छल। राम नारायण गुरुमैता कलकत्ता विश्वविद्यालसँ बी.ए. पास कयने छलाह। मिथिलांचलक प्रथम स्नातक छलाह। पढ़ाइक दरम्यान सुभाषचन्द्र वोस, महात्मा गाँधी आदि स्वतंत्रता सेनानीसँ पहचान भेलैन्ह। क्रमश: राजेन्द्र प्रसाद आदि राजनेताक सभासँ अएलाह। बी.ए. पास कएलाक बाद ओ विहार अएलाह आ गाँधीजीक रचनात्मक कार्यक प्रचार-प्रसारमे लागि गेलाह। ओहि अन्तरालमे (1939-1942) दरभंगा काँग्रेस कमिटी आओर आर्य समाजक मंत्री पदकैँ सुशोभित कयलैन्ह। अपन विद्वताक वलपर राम नारायण गुरुमैता राम चरित्र मानसक, अंग्रेजीमे अनुवाद (पद्यानुवाद) कयलैन्ह। दरभंगा महाराजक चीफ मैनेजर डेनबी साहेव ओहि अंग्रेजी अनुवाद राम चरित्र मानसकैँ राम नारायण गुरुमैताक मुँहसँ प्रतिदिन सुनय लगलाह। मिस्टर डेनवी साहेव गुरुमैताजीपर बड़ खुश छलाह। दरभंगा महाराजासँ पैरबी कय रामनारायण गुरुमैताकैँ दरभंगा राजक फिल्ड इन्सपेक्टिंग ऑफिसरक रूपमे बहाली करौलैन्ह। मुदा किछुए दिनक पश्चात् ओ ओहि पदसँ इस्तीफा दय देलैन्ह, कियैक तँ राजक अधिकांश कर्मचारी सभ बड़ भ्रष्ट छल। भ्रष्ट कर्मचारीक संग काम केनाई राम नारायण गुरुमैताकैँ नीक नहि लगलैन्ह। ओ ओहि पदासँ इस्तिफा दय का्रेसक पूर्णकालिक कार्यकर्त्ताक रूपमे समाजक सेवामे लागि गेलाह। एहि दौरान ओ शिक्षाक अधिकसँ अधिक प्रचार प्रसारक लेल पुस्तकालय आ विद्या आ विद्यालय खोलौलैन्ह। ठाम-ठाम पुस्तकालय आ विद्यालय खोलल गेल। ओहिठाम गरीब-गुरबा, मजदूर किसान बैसि अध्ययन करैत छल। एहि क्रमे स्व. स्वनाम धन्य ललित नारायण मिश्र, स्व. श्याम नारायण मिश्र आ हुनक भाई लोकनि राम नारायण गुरुमैताजीक शिष्य बनलाह। भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू भेलापर पूर्ण सक्रियतासँ एहि कार्यमे लागि गेलाह।

सन् 1939 ई.मे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजीक भवटियाहीमे विशाल सभाक आयोजन राम नारायण गुरुमैता करौने छलाह। एहि सभमे हजारो हजार लोक भाग लेलैन्ह। सभक भोजनोक व्यवस्था कयल गेलैक। राम नारायण गुरुमैताक माताश्री अपन हाथसँ चरखा द्वारा सूत तैयार कऽ गाँधीजीकैँ भैंट केलैन्ह। राम नारायण गुरुमैताक सुपुत्र डा. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता जे 8-9 वर्षक अवस्थाक छलाह, ओ गाँधीजीक स्वागतमे 'विजय विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमरा' गीत गावि फूलक माला गर्दनमे पहिराबय लगलाह। कद-काठीमे छोट

रहवाक कारणे हाथ गाँधीजीक गरदनि तक नहि पहुँच सकलैन्ह । गाँधीजी भुवनेश्वर गुरुमैताजीकेँ गोदीमे उठा लेलैन्ह आ गुरुमैताजी गाँधीजीकेँ माला पहिरा देलैन्ह।

सन् 1940 ई.मे राम गढ़मे काग्रेसक बैसार छल। राम नारायण गुरुमैता काँग्रेसक जुझारू, कर्मठ आ समर्पित कार्यकर्त्ता छलाह। तँ दरभंगा तखन समस्तीपुर, वेगुसराय आ मधुबनीक एक मात्र जिला छल। काँग्रेस जिला कमेटीक प्रतिनिधिक रूमे ओहि बैसारमे राम नारायण गुरुमैतीजीकेँ भेजने छला। राम नारायण गुरुमैता ओहि बैसारमे ससमय पहुँचलाह। ओहि बैसारमे देश भरिक काँग्रेसी नेता पहुँचल छलाह। महात्मा गाँधीक अध्यक्षतामे बैसार भेल छल। एहि बैसारमे निर्णय भेल जे सुभाष चन्द्र वोसक जगहपर पट्टामि सीता रमैयाकेँ अध्यक्ष बनाओल जाय। राम नारायण गुरुमैता एहि प्रस्तावक विरोध कयलैन्ह आ ओ गाँधीजीक खेमासँ बाहर भय नेताजीक खेमामे आबि गेलाह। राम नारायण गुरुमैता स्वावलम्बी, क्रान्तिकारी, न्यायवादी, स्पष्टवादी, सत्यवादी आ जुझारू विद्वान नेता छलाह। जमींदार सेहो छलाह। हिनक पिता विहारी गुरुमैताक रग-रंगमे स्वाधीनताक आन्दोलन समायल छल। विहारी गुरुमैताक पिता भाईलाल गुरुमैताक सहयोगसँ कतेको गाममे जमीन खरीद कामत बनौने छलाह। जेना भवटियाही, गोढ़ियारी, मालिन बेलहा, सुग्गापट्टी मटियारी आदि। स्वतंत्रता प्राप्तिसँ पहिने कोसीक रेलवे पुल बरकरार छल। दरभंगासँ फारविसगंज बीच छोटी रेलबे लाइन छल। दरभंगासँ फारविसगंज रेल जाइत छलैक। 1942 ई.क आस-पास तेहेन ने भीषण बाढ़ि आबि गेलैक जे कोसीक भीतर रेल लाइनकेँ तहस-नहस कय देलक आ निर्मलीसँ आगाँ रेलक सवारी बन्द भय गेल जे अखन धरि बन्दे अछि। भवटियाही कामत सेहो तहस-नहस भय गेल। आब राम नारायण गुरुमैताक रहनाइ गोढ़ियारी कामतपर भऽ गेल। ओहिठामसँ स्वतंत्रता आन्दोलनक गति-विधि चलवय लगलाह। हिनक प्रथम पुत्र भुवनेश्वर भुवनेश्वर गुरुमैता जिनकर उम्र तकरीवन 12 वर्षक छलैन्ह। अपन पुत्रकेँ पढ़यवाक लेल राम नारायण गुरुमैता फुलपरासक अन्तर्गत म.वि. हुलासपट्टीमे नाम लिखा देलैन्ह। नाम सप्तम वर्गमे लिखल गेल। भुवनेश्वर गुरुमैता ओहि विद्यालयमे पढ़य लगलाह।

1942 ई.क स्वतंत्रता आन्दोलनमे जखन भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता अपन विद्यालयमे एकटा नीक छात्रक रूपमे ख्याति प्राप्त कय चुकल छलाह। तखन एक दिन हिनक पिता राम नारायण गुरुमैता हुलासपट्टी मध्य विद्यालयपर पहुँचलाह आ भुवनेश्वर गुरुमैतासँ कहलैन-

“बौआ, एहि आन्दोलनमे पटनामे राष्ट्रीय झंडा फहिरावयक दरम्यान 07 सात बच्चा शहीद भऽ गेल। आब आठममे तोहर बारी छल।”

स्वतंत्रताक दिवाना राम नारायण गुरुमैता, जे भारतकेँ स्वतंत्र करबाक हेतु अपना बेटाकेँ बलिदान देबाक लेल तैयार छल- के ओ कहलैन-

“तो अपन विद्यालयक छात्रक नेतृत्व करैत फुलपरास थानापर राष्ट्रीय झंडा पहरावह। हम अपन एकटा बेटाकेँ भारत माताक लालक रूपमे वलिदानक लेल सूपूर्द कय रहल छी। गोली चलत तकर डर नहि करियहह।”

ई बात 11 अगस्त 1942 ई.क छल। 12 अगस्तकेँ अपना विद्यालयक छात्रक नेतृत्व करैत हाथमे झंडा लय भारत माताक जय-जयकार करैत फुलपरास थापर पहुँचलाह। हजारो-हजारक संख्या छात्र, नौजवान, किसान, मजदूर आ इलाकाक ग्रामीण जनता सभ थानाकेँ घेरने छल। भुवनेश्वर प्र. गुरुमैता

हाथमे झंडा लय भारत माताक जय-जयकार करैत थानापर पहुँचलाह। थाना पहुँचैत देरी पुलिस भीड़कें छिड़ियेबाक बास्ते हवाइ फायरिंग करय लागल। जखन मंचपर चढ़ि भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता झंडा फहरावय लागल तखन थानाक दरोगा ओहि बचापर गोली चलवय लागल। बच्चाकें कोनो परबाह नहि छल। गोली चलैत रहल। दरोगा निशाना बनौलक आ भुवनेश्वार प्रसाद गुरुमैताकें मारए लागल, तावत दरोगाक पत्नी जे सदृदय छली। ओ दरोगाक पैर छान्हि लेलकनि आ दरोगाक निशाना चुकि गेलैक जाहिसँ ओ बच्चा गोलीक शिकार होमयसँ बाँचि गेल। एहिठाम ई पाँती चरितार्थ भेल- 'जाके राखे साईयाँ मारि सके ने कोई' उग्र भीड़ दरोगापर टूटि पड़ल। ओ सभ दरोगाकें धमकी देवय लागल कहलक- जँ ई बच्चा अहाँक गोलीसँ मरत तँ अहूँकें निर्वंश कय देव। भ्भीड़ भारत माता की जयक नारा देबय लागल। स्थिति बड़ तनाव युक्त भऽ गेल। 12 अगस्तकें झंडा फहरौल गेल आ तेरह अगस्तकें थानामे आगि भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताक नेतृत्वमे लगा देल गेल। 12 अगस्त 1942 ई.कें भारतमे प्राय: सभ सरकारी संस्थापर तिरंगा झंडा फहरौल गेल। जयनगर थानापर झंडा फहरावयमे जे गोली चलल। जाहिमे नथुनी साह नामक युवक शहीद भऽ गेल। अखनो थानाक नजदीकक चौककें शहीद चौक कहल जाइत छैक। जकर स्मारक शहीद चौकपर बनल छैक। फुलपरास थानापर गागि लगलाक बाद चारू तरफ हाहाकार मचय लागल। भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताकें अंग्रेज छौटे गुरुमैता कहि स्मबोधित करय लागल। आ छोटे गुरुमैतापर शूट वारंट जारी भऽ गेल। म.वि. हुलासपट्टीसँ भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताक नाम कटा देल गेल। राम नारायण गुरुमैतापर सेहो वारण्ट भय गेल। आब राम ना. गुरुमैता भूमिगत रहि आन्दोलनकें सक्रिय रखलैन्ह। मुदा राम नारायण एहि आपा-धापी आ नुक्की-छिपीमे बीमार भय गेलाह। अंग्रेजी समान आ अंग्रेजी दवाईसँ ओ परहेज करय लगलाह। झंझारपुरमे एकटा डॉक्टर हिनक मित्र रहथिन्ह। ओ हुनकर इलाज करैक लेल लालायित रहलाह। मुदा ओ अंग्रेजी दवाईयो खेवाक लेल शपथ खेने रहैथ। तुलसीक पात, वाकसक पात, काली मीर्च सेंधा नून इत्यादि जड़ी-बुटी मिला कय काढ़ा बनाओल गेल। ओ काढ़ाक सेवन करय लगलाह। मुदा बीमारी ठीक नहि भय सकलैन्ह। बीमारी खतरनाक रूप धारण कय लेलक। ओ मिथिलाक विभूति 20 अक्टूवर 1942 ई. कें वाइसी गढ़ी (सुपौल) मे 35 वर्षक अवस्थामे एहि लौकिक शरीर के त्यागि परलोक सिधार लाह। स्वर्गवासी होमयसँ पहिनहि अपन सुपुत्र श्री भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताकें तीन कार्य करवाक हेतु आदेश देलैन्ह। जे निम्न अछि-

(1) बेटा, मदन मोहन मालवीय जीक हिन्दू विश्व विद्यालयसँ एम.ए. करियहह।

(2) माँ कें तीर्थाटन करा दियहक।

(3) पढ़ाई सम्पन्न भेलाक वाद देश सेवामे लागि जइयह।

एहेन परिस्थितिमे भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता जिनका अंग्रेज छोट गुरुमैताक नामसँ सम्वोधित करैत छलाह, विचलित नहि भेलाह। दाह संस्कार सम्पन्न भेल। दाह-संस्कारमे बहुत संख्यामे आन्दोलनक कार्यकर्त्ता भाग लेलैन्ह। एहि घटनाक जानकरी अंग्रेजी फौजकें भय गेलैन्ह।

थानापर राष्ट्रीय झण्डा आ थानामे आगि लगेलाक जूर्ममे श्री भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताक (छोटे गुरुमैता) नामसँ वारण्ट जारी भेल छल ओहि समयमे छोटे गुरुमैताक गिरफ्तारी हेतु वारण्ट लय अंग्रेजी फौज दरबाजापर आबि घर घेर लेलैन्ह। ओहि समयमे संयोग नीक छल जे भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता अपन चाचाक

संग अस्थि कलश चुनबाक हेतु समीपहिक दाह संस्कार स्थलपर गेल छलाह। घर लोकक मारफते हुनका गुप्त सूचना देल गेलैन्ह। सूचना मिलतहि ओ अस्थि लय चाचाक संग नेपाल भागि गेलाह। आ ओम्हरहिसँ सिमरिया जा अस्थि-कलशकेँ गंगामे प्रवाहित कयलैन्ह। ग्रामीण सभ दु:साहस कय सिपाही सभकेँ बड़ फटकारलैन्ह। तथापि क्रूर सिपाही लोकनि हुनका घरमे आगि लगा देलक। ई कारूणिक दृश्य देखि इन्द्र भगवानक हृदय द्रवित भय गेलैन्ह। आ झमाझम वारिस होमय लागल। घर जरऽसँ बाँचि गेल। सिपाही लेकनि निरास भय वापस चलि गेलाह।

राम नारायण गुरुमैताक निधनक पश्चात भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैताक अपन चाचा देवनारायण गुरुमैता स्वतंत्रता आन्दोलनमे सक्रिय भूमिका निभौलैन्ह। आब एहि स्वतंत्रताक आन्दोलनक नेतृत्व कर्त्ता खुटौना थानाक नहरी निवासी स्व. राम लषण सल्हैता भेलाह।

राम लषण सल्हैता कर्मठ, सुयोग्य, क्रान्तिकारी निर्भिक, ज्योतिष शास्त्रक ज्ञाता, हिन्दी भाषी विद्वान एवम् स्पष्ट वक्ता छलाह। आब राम लषण सल्हैताक नेतृत्वमे देव नारायण गुरुमैता, सूर्य नारायण सिंह, सुवोध झा, गुलावी सोनार, उपेन्द्र मिश्र, यमूना सिंह, जिलवी खड़गाह आ सल्हैताजीक दुनू छोट भाई रामकृष्ण सल्हैता आ जयकृष्ण सल्हैता आन्दोलनकेँ सक्रिय बनेबामे सहयोग करय लगलाह।

राम लषण सल्हैताक वंशावलीक चर्चा मुनासीव बुझना जाइछ। आत्मा सल्हैता आ परमात्मा सल्हैता दुनू भाई सितहर बरहाक निवासी छलाह। जे अखन सुपौल जिलामे पड़ैत अछि। ओहि दुनू भाइक पास बहुत रास गाय (गोधन) छल। गायकेँ चरेवाक हेतु बहुत दूर-दूर तक चलि जाइत छलाह। गायक झुण्ड जतय-जतय जाइत छल ओकरा पाँछा ओकर मालीक आ चरवाहा अपन डेरा डालि रहैत छलाह। ओहि क्रममे आत्माक सल्हैतका गाय खुटौना थानाक सिड़ुला गाँव पहुँच गेल। घनगर जंगल रहलाक कारणेँ गाय सभ भरि वरसात एहिठाम ठहरि गेल।

सिड़ुलासँ पूरब एकटा बड़ ऊँचगर जगह छलैक। वाढ़िक पानि आ जाड़सँ बचवाक हेतु मालीक आत्मा सल्हैता आ ओकर नौकर सभ ओहि ऊँचगर जगहपर अपन स्थायी निवास स्थान वनाकय रहय लगलाह। किछु दिनक वाद जंगल आ परती भूमिकेँ उपजाऊ भूमि बना कय खेती वाड़ी करय लगलाह।

गोधनसँ अधिक आमदनी होमय लगलैक। खेती नीक जकाँ करय लगलाह।

खेतीसँ वढ़िया जकाँ आमदनी होमय लगलैक। किछु जमीन खरीद नीक जकाँ घर बनाकय रहय लगलाह। आत्मा सल्हैताक छोट भाए- परमात्मा सल्हैता जे सितहर-बरहा (सुपौल) मे रहैत छलाह ओ हिनका लय जयवाक हेतु प्रयास केलैन्ह मुदा आत्मा सल्हैता वापस नहि गेलाह।

सिड़ुलासँ पूरब एकटा छोट नदी जे नहरक सदृश्य छल ओकरहि नामपर एहि गामक नाम नहरी राखल गेल। वर्त्तमानमे ई गाँव बड़ सुखी सम्पन्न आ विद्वानक वस्ती बनि गेल अछि। एतय प्रारम्भिक शिक्षासँ .... शिक्षण संस्थान अवस्थित अछि। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सेहो अछि।

आत्मा सल्हैताक एक मात्र पुत्र रघु सल्हैता भेलाह। आत्मा सल्हैता : वंशावली निम्न अछि-

आत्मा सल्हैता

रघु सल्हैता

फुद्दी सल्हैता

लेल्हाई सल्हैता

मनरूपी सल्हैता

गुदर सल्हैता

बच्चू सल्हैता

बाबूलाल सल्हैता

आब बाबू लाल सल्हैताक तीन सुपुत्र राम लषण सल्हैता राम कृष्ण सल्हैता, जयकृष्ण सल्हैतामे सभसँ जेठ भाई राम लषण सल्हैताकँ एकटा विशाल हाथी छल। तकरीवन 10 हाथक छलैक। ओकरा पैघ-पैघ दाँत सेहो छलैक। हाथी पैघ देश भक्त आ स्वामी भक्त सेहो छल।

राम लषण सल्हैता दोसर बेटी जे दू सालक छल। एक दिन संध्याक समय ओ बच्ची हवेलीसँ निकलि हाथीक घर चलि गेल छल। हाथी बान्हल छल। हाथी ओहि बच्चीकँ सूढ़सँ उठा लेलक आ ओकरा झूलबय लागल। बच्ची आस पाबि सुति रहल। तखन हाथी बैसि रहल आ अपना दुनू अगिला जाँघ बीचमे राखि सूढ़सँ झाँपि देलक। बच्ची हाथीक सायामे सूतल रहलीह। जखन हवेलीक अन्दर बच्चीक खोजवीन होमय लागल तँ ओ नहि भेटलैक। चारू तरफ खोज-पुछारि हाफय लागल। कतहु अता-पता नहि लागल। पोखैर-इनारमे सेहो खोजल गेल। हवेलीक अन्न कना-रोहट शुरू भय गेल। मुनहारि साँझ भय गेल छल। बच्चीक खोज-पुछारिक लेल बाड़ी-झाड़ी माल-जालक घरक तलासी भेल। सभ कियो हारि-थाकि कऽ संख्या समय निरास भय एक जगह जमा भेल। साँझ देमय लेल दीप,लालटेन वा डिबिया जराओल जाय लागल। ओहि समयमे विजलीक सेवा नहि छल। लोक सभ लालटेन युगमे जी रहल छल। अंग्रेजी शासनक अत्याचार चरम सीमापर छल। ग्रामीण लोकनि पढ़नाइ-लिखनाईकँ वहिष्कार करैत छल। हाथीक महाउथ हथिसार यानी हाथीक घर साँझ देबाक लेल गेल। सलाईसँ काठी निकालि डिबिया जरौलक। महाउथ देखलक जे हाथी असमयमे बैसल किएक अछि?

महाउथ तँ पहिने घवरेलाह। हाथीक लग पहुँचलाह। तँ देखैत छैथ जे हाथीक अगिला दुनू जाँघक बीचमे बच्ची सुतल अछि आ हाथी अपन सूढ़सँ ओकरा झपने अछि। जाड़क समय छल। बच्चीक देह गर्म भऽ गेल छलैक। तँए ओ निश्चिन्तसँ सुतल छलीह।

महाउथ दौगल मालीक लग। मालीक मालीक एमहर आउ। निरास भने सभ कियो हाथसार दिस दौड़ल। मालिक हाथीकँ बैसल देखलक, तँ ओ घवरेलाह जे हाथी असमयमे किएक बैसल अछि। मनहि-मन सोचए लगलाह जे हाथी बीमार न भऽ गेल। महाउथ मालीककँ देखौलक जे हाथी अपना जाँघक बीच कोना कऽ बच्चीकँ झपने अछि। परिवारक सभ सदस्य देखलक सभ अचंभित भय गेल। मालीक हाथीसँ बच्चीकँ देबाक लेल आग्रह केलैन्ह। हाथी अपन सूढ़सँ बच्चीकँ मालिकक राम लषण सल्हैताजीक गोदीमे दय देलक।

सभक निराश मन प्रफुल्लित भय गेल। राम लषण सल्हैता हाथीकँ नहि बेचबाक प्रण कयलैन्ह। हाथी वफादार देशभक्त आ स्वामीभक्त छल। एकर एक उदाहरण प्रस्तुत कय रहल छी।

राम लषण सल्हैता जे दरभंगा महाराजक द्वारा जूरी पंच मनोनित कएल गेल छलाह। गामक नजदीकमे अंग्रेजक कचहरी छल। ओतएसँ एकटा देवनजी राम लषण सलहैताकँ पंचैती हेतु बजाबक लेल हाथीसँ आयल

छल। राम लषण सल्हैता पंचैतीमे जयवाक हेतु तैयार होमय लगलाह। महाउथकेँ आदेश देलैन्ह जे तौं हाथीकेँ तैयार कर महाउथ हाथीक हौदा कसय लागल। राम लषण सल्हैता सेहो तैयार भेलाह। महाउथवार हाथी लय उपस्थित भेल। सल्हैताजी हाथीपर सवार भय पंचैती हेतु विदा भेलाह। तावत देवानजी हाथीपर चढ़ि आगाँ बढ़ि चुकल छल। सल्हैताजी सोचए लगलाह जे ई देवानजी केहेन असम्य अछि। हमरा चललाक बाद ओ पाछाँसँ चलितैथ।

हुनका आत्म सम्मानपर ठेस पहुँचलैन्ह। ओ महाउथवारकेँ ईसारा देलैन जे हाथीकेँ जोड़सँ चलाउ। हाथी नमहर छल। पैघ-पैघ डेग दैत देवानजीक हाथीकेँ पकैड़ लेलनि। आगाँ एकटा नाला छल देवानक हाथी नाला टपए लागल। तखन राम लषण सल्हैता महाउथवारकेँ इशारा कय देलनि जे देवानक हाथीकेँ पाछाँसँ दाइब दे। महाउथक ईशापर सल्हैताजीक हाथी पाछाँसँ सूढ़सँ डाँरपर जोरसँ चापि देलक। देवानक हाथी नेंगराय लागल। पंचैती भेल। ओतयसँ सल्हैताजी घर अयलाह। देवानजीक हाथीक डाँर टूटि गेलैक। एहि बातक जानकारी दरभंगा महाराजकेँ देल गेलैक जे राम लषण सल्हैताजीक हाथी दरभंगा महाराजक हाथीक डाँर तोइर देलक। दरभंगा महाराज राम लषण सल्हैताकेँ दरभंगा बजौलक। राम लषण सल्हैता दरभंगा महाराजक ओय पहुँचलाह। महाराजाकेँ खबर पठाओल गेल। दरभंगा महाराज सल्हैताजीकेँ कहलनि जे अहाँक हाथी बदमाश अछि। हमरा कचहरी परहक हाथीक डाँर तोइर देलक।

सल्हैताजी अपन सफाई देलक जे अहाँ देखू सल्हैताजी हाथीकेँ कुहलनि जे पट होजा।

हाथी लेट गेल। सल्हेताजी हाथीक दाँतपर चढ़ि दोसर दाँतकेँ पकैर हाथीक दाँतपर चढ़ि गेलाह। दरभंगा महाराजा खुश भय सल्हैताजीकेँ अभय दान दय देलैन्ह। ई दृश्य महारानी कोठाक ऊपरसँ देखि रहल छलीह। ओ ऊपरसँ आदेश देलैन्ह जे अहाँ ई हाथी हमरा दय दीअ। एहि बदलामे अहाँ चारिटा हाथी लय लीअ।

महारानीक हठपर सल्हैताजी हाथी दय देलैन्ह। जहिया सँ ई हाथी सल्हैताजीक घर छोड़लक, तहियासँ सल्हैताजीक घरमे उड़ी-विड़ी लागि गेलैक।

एमहर राम नारायण गुरुमेताक निधनसँ जतेक स्वतंत्रता आन्दोलनक क्रान्तिकारी लोकनि सभ छलाह, ओ राम लषण सल्हैताक ओतय रहि आन्दोलन करैत रहलाह। अंग्रेज सरकार एहि क्रान्तिकारी लोकनिकेँ गरफ्तार करबाक मुहिम चला रहल छल। नहरी गामक किछु असमाजिक तत्व जकरा लाम लषण सलहैतासँ दुश्मनी छल ओ अंग्रेज सरकारकेँ एहि बातक सूचना दय देलक। 1944 ईस्वीक दीपावलीसँ एक दिन पहिनहिक लगभग 9 बजे रात्रिमे 8 स्वतंत्रता सेनानी सवेरे भोजन कय सुतल छलाह। पहरापर देवनारायण गुरुमैता छलाह। पाँच सौ मीटर दूरहिसँ अंग्रेजी फौज टार्च देलक आ राम लषण सल्हैताक नाम लैत दरबाजापर अयबाक कोशीश कयलैन्ह। मुदा देवनारायण गुरुमैता हुनका सभ सामना करैत रहलाह। बादमे ओ ओतयसँ बन्दुकक साथ भागि गेलाह। सभ आन्दोलनकारी सेहो परा गेलाह। आंगनसँ पाछाँ दय बहरेवाक एकहिटा रास्ता छल। आ वगलमे ढेकी घर छलैक। ओहि ढेकी घरमे दू क्रान्तिकारी यमुना सिंह आ उपेन्द्र मिश्र फँसि गेलाह। मुदा ओ दुनू घरक धरैनपर छुपि रहलाह। घरक तलासी होमय लागल। कतौ कोनो क्रान्तिकारी नहि मिलल। सभ अंग्रेजी फौज दरबाजापर जमा भय गेल। राम लषण सल्हैता सभ सिपाही आ पुलिस अफसरकेँ ततेक ने डाँट-डपट कयलक जे सभ पुलिस पानि-पानि भय गेल। मुदा गामक जे राम लषण सल्हैताक

प्रतिद्विन्दि छलाह, जे अंग्रेजी फौजकेँ बजा कऽ अनने छलाह। ओहि आदमीसँ अंग्रेज अफसर पानि पियेबाक आग्रह केलैन्ह। ओ आदमी लोटा लय ठेकी घरसँ पानि आनबाक हेतु गेलाह। धरैनपर बैसल क्रान्तिकारी दुय हुनकासँ पुछलनि जे सिपाही सभ चलि गेल। ई सुनितहि ओ प्रतिपक्षी आबाज दय फौजकेँ बजौलक आ दुनू क्रान्तिकारीकेँ पकड़बा देलक। ओहि दुनूकेँ पकड़लाक बाद राम लषण सल्हैता, जय कृष्ण सल्हैता, विन्देश्वर सल्हैता, जीलेवी खड़गाहआ टीमू मण्डलकेँ गिरफ्तार कय जहल लऽ गेल। घरक सभ सामान लूटा गेल। घरक सभ सदस्य घर छोड़ि भागि गेल।

अंगेजी फौजक उपद्रव बढ़य लागल। घरमे जतेक वत्रन वासन, सोना-चान्दी, गहना जेवर छल सभ लूटि कऽ अंग्रेज आ गामक विरोधी सेहो लऽ गेल। घरक तलासीमे राम लषण सल्हैताक एक मात्र पुत्र विशेश्वर सल्हैताकेँ पकड़बाक हेतु एड़ि-चोटी एक कय देलक। विशेश्वर सल्हैता घर छोड़ि अपना मामा गाम गोईत परसाही चल गेल। विरोधी लोकनि विशेश्वर सल्हैताक रहबाक पता सेहो अंग्रेजी फौजकेँ बता देलक। अंग्रेजी फौज विशेश्वर सल्हैताकेँ पकड़वाक हेतु परसाही पहुँचल। ओतयसँ ओ बाधे-बाघ पूरब तरफ भागि गेलाह। अंग्रेज सिपाही हुनका पकड़वाक हेतु खदेरऽ लागल।

बाघमे एकटा हरवाहा हर जोतैत छल। अंगेज सिपाही हरवाहाकेँ जोड़सँ हल्ला कय विशेश्वर सल्हैताकेँ पकड़बाक हेतु कहलक। हरवाहा विशेश्वर सल्हैताकेँ पाछाँसँ खदेरऽ लागल। आ हरवाहा विशेश्वर सल्हैताकेँ धीमी आवाजमे कहलक बौआ अहाँ जोरसँ भागू। हम अहाँकेँ खदेरवाक नाटक करब। हरवाहा डरे विशेश्वर सल्हैताकेँ खदेरय लागल। आ ऊचगर मेड़पर ओंघरा कऽ गिरअ लागल। एहि तरहेँ विशेश्वर सल्हैता भागि कय पुलिसक पछाड़सँ छुटि गेलाह। भागल-भागल अपन जेठ बहिनक ओतय पहुँचलाह। बहिनक दरवाजापर आइत देरी एकटा तेहल्ला बाजल जे सल्हैता तँ अपने विलटिये गेल आब एकरो बिलटौत। ई सुनितहि विशेश्वर सल्हैता जे आत्म सम्मनक रक्षार्थ ओतय नहि रूकलाह आ आगाँ बढ़ि गेलाह। हिनक जेठ बहिन जँ बुझलक तँ विशेश्वर सल्हैताक पाछाँसँ आवाज दय रोकलीह। मुदा सल्हैताजी वापस नहि भेलाह। एहि प्रकारे विशेश्वर सल्हैता भागैत-भागैत कोसीक ओहि पार जा अपन मौसीक ओतय शरण लेलैन्ह।

एमर राम लषण सल्हैता सहित तथाकथित गिरफ्तार व्यक्तिकेँ जेलमे डालि देल गेल। राम लषण सल्हैता जेलमे अनसन करय लगलाह। अठरहम दिन ओ शरीरकेँ त्यागि देलक। क्रुर अंग्रेज सल्हैताजीक लाशकेँ हिनक परिजनकेँ नहि दय सकल। किछु गिरफ्तार व्यक्तिपर मुकादमा चलय लागल। एहि प्रकारे सल्हैताजीक परिवार आ धन सम्पतिक नाश भय गेल।

स्वतंत्रता आन्दोलनमे जे क्षति राम लषण सल्हैता आ राम नारायण गुरुमैताकेँ भेलैन्ह ओ इतिहासक पन्नामे स्वार्णक्षरमे लिखवाक योग्य अछि।

एमहर राम नारायण गुरुमैताक सहोदर भाए देव नारायण गुरुमैता जे किछु दिन धरि जेलमे बन्द रहलाह, तकर बाद जेलक चाहरदिवारीकेँ फानि जेलसँ बाहर निकलि अपन पितियौत भाय जे बेगूसरायमे बैंकक नौकरी करैत छलाह, ओतय चलि गेलाह। भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता अपन पिता राम नारायण गुरुमैताक श्राद्ध-कर्म सम्पन्न कय बेगूसराय आगाक शिक्षा ग्रहण करवाक लेल चल गेलाह। बेगूसरायमे दूटा उच्च विद्यालय छल एकटा बी.पी. उच्च विद्यालय आ दोसर जे.के. उच्च विद्यालय। बी.पी. उच्च विद्यालयक प्राचार्य नामांकन नहि लेलक। तखन नामांकन हेतु जे.के. उच्च विद्यालय पहुँचलाह। ओतयक प्रचार्य भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता

जीक जाँच परीक्षा लेन्हि। 100 अंकक प्रश्न पत्र देल गेल। परीक्षा सम्पन्न भेल। 100 अंकमे 100 अंक गुरुमैता जीकेँ प्राप्त भेलैन्ह। प्राचार्य हिनक प्रतिभा देखि गद-गद् भय गेलाह। नामांकन भय गेल। जे.के. उच्च विद्यालयमे श्री गुरुमैतजी पढ़य लगलाह। गुरुमैताजी बगूसरायमे पढ़बो करथि आ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक शिविरमे सेहो भाग लैथ। हिनक चाचा जे जेलसँ भागि कऽ बेगूसराय चल गेल रहैथ ओ भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैतापर समसैल रहैत छलाह। किएक तँ ओ आर.एस.एस. शिविरमे भाग लेबाक हेतु जाइत छलाह। ओ ओहि शिविरमे भाग लेबासँ सदिखन मना करैत छलैन्ह। धीरे-धीरे भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक प्रचारक बनि गेलाह। देश सेवामे लागल रहलाह। पिताक आज्ञाक पालन करैत काशी हिन्दु विश्व विद्यालयसँ एम.एक. पास कयलैन्ह। माताकेँ तीर्थाटन करौलैन्ह। पद्म विभूषण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजीक संरक्षणमे शोध कार्य सम्पन्न कयलाह। बहुत रास पा..... सभ लिखलैन्ह। हिनक शोधक विश्ज्ञय छल 'वर्णरत्नाकरक ऐतिहासिक पृष्ठि भूमि।'

एहि तरहेँ गुरमैता-सल्हैता परिवारक धन-सम्पति नष्ट भेलाक वादो स्वतंत्रता प्राप्तिमे अपन अहम भूमिका निभौलैन्ह। जे आइ धरि मिथिलांचलक आन, वान और शान अछि।

२

डॉ. बचेश्वर झाक दूटा आलेख-

विद्यापतिकालीन मिथिलाक कृषि

जाहि समयमे विद्यापतिक आर्विभाव मिथिलामे भेल छल ओ संक्रमणक काल छल। सामाजिक विश्रृंखलताक कारणेँ किछु लोक काज-धन्धा करबासँ मुँह मोड़ने छल। जे केओ काजुल, परिश्रमी छलो ओहो ....मे परि कर्त्तव्यहीन जीवन बितेनिहार भऽ गेल छल। मिथिलामे खेती आ पशुपालनक सिवाय दोसर जीविकाक साधनो तँ नहि छलैक। सीमित साधनो अछैत खेती करनाइ असौकर्ज बुझि दिनानुदिन आर्थिक दुर्वलताक शिकार होइत रहल। इएह कारण भेलै जे एतुका लोकक आर्थिक अवस्था लचड़ि गेलैक। एतबे नहि, किछु लोक कृषिक उमेक्षा कऽ भीख मांगब श्रेयस्कर बुझए लागल। एहन लोककेँ समाज घृणाक दृष्टिसँ देखैत छल। तँ एहि प्रवृतिक लोकक ध्यान खेतीक ओर आकृष्ट करबाक निमित कहबी चरितार्थ भेल-

> "उत्तम खेती मध्यम वाण,
>
> निषिद्ध चाकरी भीख निदान।"

तात्पर्य ई जे खेती करब सभसँ उत्तम मानल गेल। व्यवसाय करब मध्यम। नौकरी करब अधम मानल गेल। सभसँ अधलाह- भीख मांगब बुझल गेल। जहाँ तक नौकरीक गप्प छैक, आजुक समयमे नौकरियेकेँ प्राथमिकता भेटल छैक। ओ भलेँ सम्पन्न परिवारक किएक ने होथि, नौकरी हेतु अपस्याँत देखल जाइछ। एहनो समय छलैक जखन नौकरी कएनिहारकेँ समाजमे कुचर्चा होइत रहैक। एहिसँ ईहो ज्ञात होइछ जे आत्म निर्भरताक शिक्षा देल जाइत छल।

महा कवि विद्यापति अपन रचना 'लिखनावली' आ 'वर्षकृत्य'मे मिथिलाक कृषिक बहुविधिवर्णात कहल अछि। संगहि कृषिकेँ उपेक्षाक दृष्टिसँ देखनिहारकेँ एहि ओर आकर्षित करबा लेल अपना रचनामे शिव आ गौरीक माध्यमसँ उपदेश देल अछि। विद्यापतिक मात्र उद्देश्य अकर्मण्यताक अन्मूलन करब छल।

"बेरि-बेरि अरे शिव मो तोय बोलो,

किरिणी करिअ मनलाई,

भिखि मांगिए पर गुण गौरव दूरिजाय,

निर्धन जन बोलि सबे उपहासे,

नहि आद। अनुकम्पा।

तोहें शिव पाओल आक-धतूर,

एहि पाओल फूल चम्पा।।"

भूमिक अधिकता आ जन संख्याक न्यूनताक कारण खेती अदलि-बदलि कऽ होइत छलैक। जाहि खेतमे एहि वर्ष धान गृहस्थ करैत छल, ओकरा परती छोड़ैत छल। ई करलासँ साल भरिमे खेतक ऊपज शक्ति बढ़ि जाइत छलैक। भूमि तीन श्रेणीक मानल गेल छल।

विद्यापतिक समयमे पहिल श्रेणीमे गोचर, दोसर श्रेणीमे ऊपजाउ आ तेसर श्रेणीक वंजर।

गोचर भूमिमे अनेक प्रकारक घास लगाओल जाइत छल जे पशुपालनक हेतु प्रमुख छल। ई गोचर भूमि साधारण गाममे एक सय दंड, पैघ गाममे दुई सय दंड एवम् नगरमे चारि सय दंड छोड़ल जाइत छल। वंजर भूमिकेँ तोड़ि कऽ खेतीक योग्य बनाओल जाइत छल। एहन भूमिकेँ विद्यापति खील भूमि कहलखिन्ह। एहन प्रकारक भूमिमे खेती कएनिहार भू-स्वामीकेँ सात वर्ष धरि ऊपजक आठम भाग दैत छल। तत्पश्चात् भू-स्वामीक अनुसार उपजक स्वामीत्वमे परिवर्त्तन भऽ जाइत छलैक। एखनहुँ परती जमीनमे खेती कएनिहारकेँ सुविधा देल जाइत छैक। एहि सुविधाक समय निर्धारित नहि छैक। जगह-जगहपर अन्तर देखल जाइत अछि।

ओहि समयक समाज दू वर्गमे बँटल छल। एक वर्ग राजा महाराजाक सामन्तादिक छल। एहन वर्गक लोकक खेती-पथारी दूर-दूर धरि होइत छलनि। ओतए ओ लोकनिक खेती करबाक....... कर्मान्तिक अर्थात् कमतियाकेँ रखैत छलाह। एकर अतिरिक्त आरो अधिकारी वर्ग ओकर काजक निरीक्षण करबाक लेल राखल जाइत छल।

समाजक दोसर वर्ग दलित वर्ग छल जे स्वयं अपन खेती करैत छल। एहन वर्गकेँ खेतीमे अपन पत्नीसँ सेहो सहयोग भेटैत छलनि। खास कऽपशुक हेतु सभ प्रकारक व्यवस्था स्त्रीगणे द्वारा होइत छल। महादेवकेँ मैथिल होएबाक प्रमाण कहक ईहो भऽ सकैछ। हुनक सासु मैना स्पष्ट रूपसँ कहैत छथिन्ह-

"हमर धिया जखन सासुर जयतीह तखन ओ घास काटि लौती आ बसहा चरौती।"

खेती-परती हर एवम् कोदारिसँ ओहू समयमे कएल जाइत छल। हरक व्यवहार विद्यापति साहित्यक संगहि तत्कालीन साहित्यमे सेहो कतेको स्थलपर कएने छथि। विद्यापति अपन वर्ष कृत्यमे हरक मुहुर्त्तक उल्लेख कएने छथि। ओहि दिन बरदक सिंहमे मक्खन गूड़ आदि रगड़ल जाइत छल। प्राय: ओहि दिन धनी-मनी व्यक्ति हरक-फारक आगूमे सोना लगबैत छल। विद्यापति कहैत छथि सोन लगायब एक विधान छल।

एक तरहक कहबी छैक वा लोक धारणा जे पंचमीक मुहुर्त्तमे हर जोतबा काल जौं बरद चित्कार करए वा मेमिया तँ चारि गुणा उपज होएबाक संकेत भेटैछ। ओहि दिन पाँच सिरोर जोतबाक विधान छलैक।

विद्यापतिक लिखनावलीक एक पत्रमे हरक हेतु धुरन्धर बरदक चर्चा आयल अछि। खगौट भेलापर गृहस्थ एहन धुरन्धर बरदकेँ बन्हकी रखैत छल। एहिसँ ओहि समयक समाजक लचरल अवस्थाक परिचय भेटैत अछि। सम्पन्न गृहस्थ हरबाह खेत जोतबाक निमित रखैत छल। हरवाहीक अलाबा अन्यो काज हरबाहसँ करबैत छलाह।

विद्यापतिक एक पद्यमे उल्लेख आएल अछि जे गौरी शिवसँ खेती करबाक लेल कहैत छथिन्ह, तखनुक ई पाँति अछि-

"खटंग काटि हर हर जे बनाविअ,

त्रीशूल तोड़ि करू फार।

बसहा धुरन्धर हर लए जोतीय,

खेत खोला पहाड़।"

धनी-मनी व्यक्तिक ओहिठाम कमतियाक ऊपर महत्म होइत छल जकरा निरीक्षक समान पद होइत छलैक। कामत परक खेती-पथारीक सभ प्रकारक खबरि कमतियासँ लैत रहैत छल। कोन खेतमे कोन तरहक अन्न उपजाओल जाय संगहि खेत कोना जोतल जाय, कोन खेतमे आरि ऊँच्च कए बान्हल जाय संगहि कोन खेतमे कतेक लागत लगाओल जाय इत्यादि इत्यादि तकर जिज्ञासा महतम कमतियासँ करैत छल।

विद्यापतिसँ पूर्व मैथिली डाक आ घाघ भेल छलाह जनिका मिथिलाक कृषि कार्यक उद्‌गेता कहल जाइछ। मै. डाककेँ प्रकृतिक गहन अध्ययन छलन्हि। एखनहुँ डाक वचनावलीक अनुसार मिथिलाक गृहस्थ कृषि कार्यक समीक्षा कऽ समेत भऽ जाइत छथि। डाकक कहब छल- गृहस्थ छोट-क्षीण बरद नहियौं राखथि मात्र दुई गोट धुरन्धर बरद कीनि खेती करथि। अपन खेती भेलापर अनको खेतीक हेतु मंगनी देथि। हुनक शब्दमे-

"नाटा बरद बेचि कए, दुई धुरन्धर कीन,

अपन खेती करि कए आनकेँ मंगनी दीन।"

एतबे नहि, ओ कहने छथि खेतक उपजा जोतपर निर्भर करैत अछि।

थोड़ के जोतिए अधिक मइ अविए,

ऊँच के बान्हिए आरि।

जौं खेत तैयो नहि उपजए तँ

डाक के परिएह गारि।

एहि लेल विद्यापतिकालीन ममहत्तम कमतियाकेँ सलाह दैत छलाह जे हरसँ तैयार कएला बाद खेतकेँ कोदारिसँ साधब उत्तम होइछ।

मिथिलाक कृषिमे पर्याप्त वर्षाक अभाव प्राग ऐतिहासिक कालहिसँ रहल अछि। मानसून एतुका हेतु जुआवाजी कहल गेल अछि। किएक तँ अति वृष्टि अनावृष्टि आ दुर्भिक्षक शिकार एतुका गृहस्थ होइत रहलाह अछि। तँ पटौनीक प्रभाव समय-समय पर होइत छलैक।

विद्यापति साहित्यमे सेहो पटौनीक उल्लेख भेटैत अछि। पटेबाक एक यंत्र विशेषक चर्चा कएने छथि। यथा- रहट संस्कृत अरधट्ट आ प्राकृतिक अरहट्ट। एहि मंत्रसँ अहुखन इनारवा कूपसँ पानि बहार कएल जाइछ। एकर अतिरिक्त चर, चाँचर, डबरा, खत्ता आ पोखरिसँ करीन द्वारा पटौनीक काज लेल जाइत छल। तत्कालीन राजा द्वारा बड़का-बड़का पोखरि खुनाओल गेल छल।। मिथिलामे एहन अनेको पोखरि विद्यमान अछि, जकर सकल आब बदलि गेल छैक। एहि तरहक पोखरि रजोखोरि कहबैत छल। किवदन्ति छल जे दैत्य द्वारा एहन विशाल पोखरि खुनल गेल छल।

विद्यापति तँ भाव नदीक उल्लेख कएने छथि- गौरी जखन शिवसँ खेती करबाक आग्रह कएलनि तँ शिव कहलथिन्ह-

“सभ बात मानल मुदा पानिक अभाव भेलापर की होयत?तखन खेती तँ करब असौकर्ज होएत।”

एहिपर गौरी उत्तर देलनि-

“पाटय सुसरि धारा।”

एहिसँ ज्ञात होइत अछि जे तत्तयुगीन मिथिलामे पटौनीक काज गंगानदीसँ कएल जाइत छल।

ओहि समयक कृषकमे प्रगाढ़ प्रेम होइत छलनि। एक-दोसरक हित चिन्तनक संग अति आदरक भाव रखैत छलाह। खेतसँ उपज निर्विघ्न ..... आब तँ बाधक हेतु रखवार राखल जाइत छल। अहुखन मिथिलाक गाममे रखवार रखबाक प्रथा अछि। रखवारकेँ विशेष अधिकार गृहस्थक द्वारा देल गेल छल। कहुखन ई रखवार खेतक पूर्ण उपजकेँ हथिया लैत छल जे विद्यापतिक पदसँ ज्ञात होइछ-

“खेत कएल रखवारे, लूटल ठाकुर सेवा भोर।”

यदा-कदा एहनो होइत छलैक जखन खेतीक समय बीति जाइत छल तखन वर्षा होइत छल। जेकर विद्यापतिक पदसँ पुष्टि होइछ-

“समय गेले मेघे वरिसब,

की दहु तँ जलधार।”

एहना स्थितिमे वर्षाक पानिकेँ रोकबाक हेतु खेतमे ऊँच्च आरि बान्हल जाइत छल ताकि खेतसँ पानि ससरि नहि जाय। विद्यापतिक पद्यसँ संकेत भेटैछ-

"गेला पीड़ पिरोधक की फल।"

पुन: विद्यापति अपन रचनामे प्रेम रूपी फूलक हेतु शीलक आरि बान्हि मर्यादाक रक्षा कएने छथि-

"फूल एक फूलवारि लगाओल मुरारि,
जतने पटओलन्हि सुवयन वारि।
चौदिस वॉधलि सीलक आरि,
जीव अवलम्वन करू अवधारि।"

एहिसँ ईहो ज्ञात होइछ जे लोक भूमिकेँ छोट-छोट टुकड़ीमे बाँटि खेती योग्य बनबैत छल। विद्यापतिक समयक कृषकक समस्त उपजाक अन्नक उल्लेख कतहु एकठाम नहि भेटैत अछि। तखन एतए मसूरी, राहड़ि, सरिसो, तिल जौ आदिक अवश्य उत्पादन होइत छलैक। जतेक प्रकारक अन्नक उल्लेख भेल अछि ओ सभ अन्न विभिन्न अवसरपर मिथिलामे विभिन्न देवी देवताक प्रसन्नताक हेतु दान कएल जाइत छल। एकर सांगोपांग वर्णन विद्यापतिक 'वर्षकृत्य'मे भेटैत अछि।

अनुकूल समयसँ यथेष्ट उपज होइत छलैक। गृहस्थी नीक हालतमे भेलासँ मिथिलाक लोक बाहर नहि जा कऽ घरहि रहैत छल। कहबी छलै-

"कर खेती घरही भला।"

इएह कारण छल जे एतुका जनमानस वाह्य परिवेशक अनुभवसँ वंचित रहक। विद्यापतिक पूर्व जहिना गृहस्थीसँ उदास लोक छल तहिना कविक रचनाक प्रभावसँ गृहस्थीक ओर झुकाव भेल छल। खेतीसँ उत्पन्न अन्नक उपयोग मोला व्यवस्था द्वारा चलैत छल। मोलाक अन्तर्गत क्रय-विक्रयक विधान छल। एकरो उल्लेख विद्यपतिक लिखनावलीमे आयल अछि। तौल-नापक व्यवस्थामे टंक और मानी पांथी चलैत छल। 4 मानी एक टंक होइत छलैक। ओहि समयक 1 मानी आजुक 16 सेरक बरा-बर होइत छलैक।

खेतसँ पर्याप्त धानक प्राग्रिक प्रमाण छलैक जे पैघ गृहस्थ डेढ़िया वा सवाईपर कर्जा लगबैत छलाह। कर्जाक अदायगी अगहन मासमे नवका धान भेलापर होइत छलैक। विद्यापतिक लिखनावलीमे कृषि सम्बन्धी चर्चा विलक्षण ढंगसँ कएल गेल अछि।

अस्तु...!

विद्यापतिक रचनामे विरह वर्णन

विद्यापति अपन वहुमुखी प्रतिभाक परिचय अपन रचनामे देलन्हि अछि, मुदा काव्य प्रतिमाक वास्तविक परिचय सुनक विरह गीतसँ होइत अछि। प्रेमक प्रगाढ़ता संयोगमे नहि वियोगेमे होइत छैक। महाकवि राधाक विरह-वेदनाक सजीव आ मर्मस्पर्शी वर्णन कएलन्हि अछि। जौं सूर विप्रलम्भ श्रृंगारमे गोपीक वेदनाक टीसकेँ

भ्रमर गीतक अन्तर्गत उजागर कएलन्हि तँ विद्यापति सूक्ष्म दृष्टिसँ राधाक मनोदशाक विछोहावस्थाकेँ विरह गीत रूपमे उजागर कएल अछि।

समयानुकूल विरहिणीक स्थितिक स्वाभाविक वर्णनमे विद्यापतिक कलम माजल छन्हि।

साहित्य शास्त्रमे श्रृंगार रसकेँ रस राजक संज्ञा देल गेलैक अछि। कमनीयताक कारणेँ अन्य सभ रससँ एकर स्थान उच्च मानल गेलैक अछि। कविक वर्णनमे सत्यता रहबाक .... ई सत्यता प्रेम वर्णनमे सर्वाधिक पाओल जाइत अछि।

प्रेमक चित्रणमे 'विरह'केँ महत्वपूर्ण स्थान देल जाइत छैक। विरहक द्वारा प्रेमक प्रगाढ़ताक पूर्ण परिचय भेटैत छैक। विरह ओ कसौटी थिक जाहिपर प्रेम सुवर्णक परीक्षा होइत अछि। एकर अधिकतामे प्रेमी एवम् प्रेमिकाकेँ एक दोसराक प्रति वास्तविक भावावेश एवम् तन्मयता होइत अछि। विरह प्रेम जीवक एक मर्मस्पर्शी घटना थिक। एहिसँ प्रेमक परिपुष्टि होइत अछि। विरह एक प्रकारक पुट थिक। बिनु पुटे वस्त्रपर रंग नहि चढ़ैछ।

साहित्य-दर्पणमे उल्लेख अछि-

"न बिना विप्रलम्भेन संयोग: सुखमश्नुते, कषामिते हि वस्त्रादो भूयान राग: प्रवर्त्तेत।"

अर्थात् बिनु विरहक प्रेमक स्वतंत्र सत्ता नहि। एही रूपेँ बिनु प्रेमक विरहक अस्तित्व नहि। प्रेमक अग्निकेँ प्रज्जवलित करैछ विरह-पवन, प्रेमक अंकुरकेँ बढ़बैछ विरह जल, प्रेम दीपक वर्त्तिकाकेँ उस कबैछ विप्रलम्भ। विरह-वेदना मधुममी होइछ। एहिमे रूदन एवम् आमोद सामने मालित होइछ। संयोगक अवस्थामे हृदयमे आशा एवम् निराशाक ओतेक द्वन्द्व नहि होइत अछि जतेक विरहक अवस्थामे। वरहमे वासनाक अन्धकार प्राय: लुप्त भए जाइत अछि तथा प्रेमक विशुद्ध अनुभूतिमे विरही डूबि जाइत अछि।

श्रृंगार तथा विरहक एतेक महत्वकेँ जनैत विद्यापति अपनाकेँ ओहिसँ फराक कोना रखितथि? एहि विरह वर्णनक हेतु विद्यापतिक लेखनी सेहो चलल आ चलबेटा नहि कएल अपितु अपना रचना शक्तिक भाव एवम् अनुभूतिक बलसँ सम्स्त भारत वर्षकेँ भाव-विभोर कए देलक।

विरह-वर्णनमे विद्यापति हृदयक अनेक भावकेँ निरलंकारिक भाषामे रखि सरलतासँ चित्रित कएल अछि जे ओ भाव सभ हृदय पटलपर स्वभावत: अपन अधिकार स्थापित कए लैछ।

विद्यापतिकेँ महाकवि कहएबाक एक प्रधन कारण ईहो थिक जे विरह एवम् विरहक पश्चात् मिलनक वर्णनमे हिनकर स्थान उच्चत्तम रहल अछि। एहि मिलनमे ओ जे अपन स्वाभाविकता भवुकता सुन्दर कल्पना तथा पद्य योजनामे कमनीयता देखाओल अछि से एक महान कविए सँ सम्भव भए सकैछ। प्रेम सूत्रमे ग्रथित नायक लोकनिक चित्र हुनक काव्यमे सहसा जीवनक यांयलय प्रदर्शित कए देलक।

पं. जगन्नाथ साहित्य दर्पणमे विरह अथवा काम दशाक दश अवस्था कएल गेल अछि-

अभिलाषाश्चिन्ता स्मृति गुण कथनो द्वंग संप्रलाप उन्मादो व्याधिर्जड़ता मृति रिति दशात्रश्य कामदशा अर्थात् स्मरण, गुण-कथन, अभिलाषा, मूर्च्छा,व्याधि, उद्वेग, प्रलाप, जड़ता, उन्माद एवम् मरण। एहि दस अवस्थाक अतिरिक्तो अनेक भावक चित्रण विद्यापतिक कएलन्हि अछि। विरहक महत्वपर दृष्टिपात करैत विद्यापति लिखैत छथि-

"जेहन विरह हो तेहन सिनेह।"

प्रेमक असली स्वादक अनुभव विरहेक अवस्थामे वास्तविक रूपसँ भेटैत अछि। विद्यापतिक विरह व्यथिता राधिका अनभिज्ञ छथि। हुनका समीपमे नहि छथिन्ह। राधा हुनक वियोगमे शुक्ष शीर्षा सुमनक सदृश्य धाराशालिनी छथि। हुनक अश्रुप्रवाहसँ भूमि कर्दमचुक्त भए गेल अछि। राधा ओहि थालबला भूमिपर लेटा रहली अछि। हुनक सखी सभ कृष्णक आगमनक आश्वासन दैत छथिन्ह परन्तु ई आश्वासन विरहग्निमे घीक काज करैत छन्हि। हिनक यौवन विरहक वेदनासँ दिनानुदिन क्षीण भए रहलन्हि अछि। ..... हुनक व्यथा अधिकतर भए जाइत छन्हि।

विद्यापति राधाक हृदयक मनोवैज्ञानिक वर्णन करैत छथि-

"अंकुर तपन ताप यदि जारब, कि करब वारिदमेहे,

ई नव यौवन विरह गमाएब कि करब से पिया ने हे।

हरि हरि की इए दैव दुराशा,

सिन्धु निकट यदि कंठ सुखाएब के दूर करत पिया सा।।"

एहिठाम दृष्टान्त दए राधिका जे अपन हृदयक दुख रखलन्हि अछि से सहृदय संवेध थिक। सहसा भावावेशमे आबि विधाताकेँ 'हरि-हरि की दए वैव दुराला'कहि भर्त्सना करैत अछि। एतए मधुमणी वेदनाक चित्रण कएल गेल अछि।

सखीक सम्वादसँ जखन काज नहि चलैत छन्हि तखन राधा स्वम कृष्णकेँ रोकबाक प्रयास करैत छथि-

"माधव तोहे जनु जाए विदेशे

हमरो रंग रभस लए जएबए लएवह कोन संदेशे,

बनहि गमज करू होइत दोसर मति विसरि जएवए पति मोरा।

हीरा मणि माणिक एको नहि मांगव फेर

मांगव पहु तोरा।।"

एतए राधाक प्रेमक अलौकिक रसास्वाद अछि। तर्कक अनुसार आदान-प्रदान सेहो होएबाक चाही। रंग-रभसक प्रति बदल की दए सकताह? ओ थिक कृष्णक प्रेम। राधाक याचना। फेर मांगव पहु तोरा, नि:स्वार्थ प्रेमक भाव स्पष्ट रूपसँ प्रदर्शित भेल अछि।

कृष्ण मथुरा प्रस्थानक वार्तासँ सम्पूर्ण गोकुल शोका कुल भए गेल अछि। सर्वत्र अश्रुक प्रवाह एवम् करूण चीत्कार प्रारम्भ भए गेल-

अव मथुरापुर माधव गेल, गोकुल

गोकुले उछलला करूणाक रोल नयन जले

देख बहए हिलोल।

राधा बहुत दिनसँ आशा लगौने छलीह जे कृष्ण औताह। अवधिक अवसान भऽ गेल। बाट तकैत-तकैत .... भए गेलन्हि। अन्तमे निराश भऽ विलाप करए लगलीह।

लोचन धाम फेदायल हरि नहि आएल रे,

शिव-शिव जिवओ ने जाए आस अरू झाएल रे।

पहिने राधिका कृष्णक प्रेमक केन्द्र विन्दु छलीह। एखन सभटा विपरीत भए गेलन्हि अछि। तखन अपनाकेँ साँझक तारा बुझैत छथि। जकर दर्शन अशुभ होइछ, संगहि भादवक चौठीक चान अपन मुखकेँ बुझैत छथि जकर र्दन अशुभकारी मानल जाइछ- विरहाग्निमे दग्ध राधिकाक लेल ई जतबा आश्चर्यक विषय भेल ओतबए लाजोक। विरहाग्निसँ जर्जरित राधाक हृदयक टीस स्पष्ट अछि-

"की हम साँझक एकसरि तारा, भादवचौठीक शशी,

इथि दुहु झांझ कओन मोर आना जे पदुहुँखि न हेरलि।।"

कालिदासक श्ति अपना विलापमे कहैत छन्हि-

"मदनेन विना कृतारति: क्षण मात्र किल जीवितेतिमे,

वचनीय मिदं व्यवस्थितं रमणस्वा मनुयामि।"

यद्यपि।

एतएव देखैत छी जे विद्यापति कालिदासहुक विरह-वर्णनसँ टपि जाइत छथि। एतए विरह वर्णनमे कविक कल्पनाक चातुर्यादर्शनीय अछि-

"लोचन नीर तटनि मिर माने, ततहि कलामुखि करए सनाने।

सरस मृणाल करहजप माली, अएनिस जप हरिनाम तोरूनी।।"

अर्थात् विरहिणी राधिका नयनक अश्रुसँ नदीक निर्माण कए ओहीमे स्नान कए रहल अछि, तात्पर्य जे ततेक अश्रुपात भेलन्हि अछि जे ओ नारीक रूपधारण कए लेलक अछि।

कृष्णक मिलनक आशा समाप्त भए गेलापर नायिका राधा अपन सौन्दर्यक त्याग करए लगलीह अछि। मात्र शरीर एवम् स्नेह बचि गेल छन्हि-

"सरदक रसधार मुख रूचि सोपलक हरिन के लोचन लीला।

केसपाल लए भामरि के सोपलक पाए मनोभव पीला।।"

पावसकालीन विरहोद्वेगक एकसँ एक उत्तम पद्य पदावलीमे पाओल जाइत अछि। दु:खाभिभूत राधाक करूण क्रन्दन हृदय विदारक एवम् करूणोत्पादक अछि। एहि समयक प्रत्येक वस्तु जे संयोगक अवस्थामे आनन्द दायक अछि राधाक हृदयकेँ विदीर्ण कए रहलन्हि अछि। प्रियतमक विरहमे ओ सभ वस्तु कष्टदायक छन्हि।

सखि हे हमर दुखक नहि ओर...।

विद्यापति कह..... दिन रातिया।।

एहि पदक अक्षर अक्षरसँ मग्न हृदयक हाहाकार प्रति ध्वनित भए रहल अछि। दुखक आगि ज्वालामुखी बनि फूटि पड़ल अछि। हरि बिनु केसे गमाओल दिन रातियाक भावक कविता रवीन्द्रनाथ सेहो लिखलन्हि अछि-

तुमि यदि नादाओ, करो अमाम हेला।

केमन करे कारबे आमार एमन बादल बेला।।

संस्कृत साहित्यमे एहि प्रकारक अनेक वर्णन अछि-

"इतो विधुद्वल्ली विलसित मित: केतकितरो,

स्फुरद्गन्ध प्रोधजलद निनाद स्फूर्जितमित:

इत: केलिक्रीड़ा कलकलख: पक्ष्मलदृशां

कथं भात्स्यन्तेते विरह दिवसा: संमृतरसा:।।"

राधाक प्रेमक तन्मयता एतेक बढ़ि गेल अछि जे ओकर वर्शान्त नहि भए सकैत अछि। ओ कृष्णक नाम लैत-लैत एतेक तन्मय भए गेल छथि जे ओ अपनाकेँ स्वयं कृष्ण मानए लगैत छथिन तथा राधा-राधा जपए लगैत छथि। तत्क्षणहि हुनका अपन वास्तविक दशाक ज्ञान भऽ जाइत छन्हि। तथा विरहक तीव्र वेदनासँ ओ आुल भए उठैत छथि।

अहुखन माधव-माधव रटइत राधा भेलि मधाई।

भेल सन्देह।।

एतए प्रेम पराकाष्ठापर पहुँचि गेल अछि। नायिका राधाक रूपमे सेहो तथा कृष्णक रूपमे सेहो दुनू अवस्थामे मर्मव्यथा सहैत छथि। एहि पदमे विद्यापति प्रेमक तन्मयताक एहन चित्र उपस्थित करैत छथि जे संसारक सम्पूर्ण साहित्यमे अपन सभता नहि रखैत अछि। इहि प्रकारसँ विरहमे मिलन एवम् मिलनमे विरहक वर्णन विद्यापतिहिक उत्कृष्ता थिक।

विद्यापतिक विरह वर्णन कएक विशेषता ई अछि जे हुनक नायिका विरहमे रहितहु अपन भाग्यक दोष दैत छथि नायकक नहि। हिनक राधिका कुलवती ललना छथि तेँ प्रेममे जतेक बाधा, यातना आर जतेक व्यथा सहैत जाइत छथि हुनक प्रेम सोना जकाँ ओतेक चमकैत जाइत छन्हि। स्वप्नोमे ओ कृष्णकेँ कटुक्ति नहि कहैत छथि। अप्पन कर्मक दोष तथा कि करत नाए दैव भेलवाम।

एहि प्रकारे अछि-

"सखि कहि कहब अपतोष, हमर अभाग पियाक नहि दोष।।"

अन्तमे युग-युग जीवथु लख कोष हमर अभाग हुनक नहि दोष।।

विरहिणीक चित्रण कालिदासक शब्दमे-

"कल्याण वुद्धैरथवा तवाणं न कामचारी ममिशंक नीय:।

ममैव जन्मान्तर पातकानां विपाक निस्फूर्जथुर: प्रसक्ष्य।।"

सीता सेहो पूर्ण जन्म पापकेँ अपन दुखक कारण मानैत छथि। एक स्थलपर तँ राधा निराश लऽ मृत्युक अभिलाषा करैत छथि जे भावोत्पूर्ण अछि-

"आन करह हिय विहि कएल आन,

अवहु न निक सभ कठिन परान।।"

विद्यापतिक विरहमे प्रकृतिक उद्दीपन, रूपक चित्रण श्रृंगार रसक स्थायी भाव रतिकेँ जाग्रह करबामे सफल भेल अछि। जाग्रतावस्थामे तँ कृष्णसँ मिलन असम्भव अछिए, स्वप्नहुमे नायिकाकेँ कृष्णसँ मिलन नहि भऽ पबैत छन्हि। तँ नीन नहि होइत छन्हि-

"सपनहुँ संगम पाओल, रंग बढ़ाओल रे

से मोर विहि विधटाओल नीन्दओ हेरायल रे।।"

निन्द होइतन्हि कोना? ओ तँ प्रियतक संग विदेश चल गेलन्हि-

"सपनेहु तिलाएक तन्ह सों रंगे,

निन्द विदेसल तन्हि पिआ संगे।।"

कालिदासक मत्तिणी- 'त्वंहितस्म प्रियेति'कहि कऽ पतिक विरहकेँ .... करैत छथि। किन्तु एतए काकक भाषासँ प्रियतमक आगमनक प्रतीक्षा एवम् आकुलताकेँ नव जीवन देल गेल अछि-

"काक भाष निज भाषहु रे, पिय आओत मोरा

क्षीर खीर........................ कनक कटोरा

सोमे चलु.................. पिआ आओत मोरा।।"

जखन विरहक कष्ट असहय भऽ जाइत छन्हि तँ सन्देश पाठवए चाहैत छथि-

"के पतिया ले जाओत रे...। पास भेल साओन मास।"

विद्यापति विरहक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म दशाकेँ देखलन्हि तथा ओहिसँ अपन हृदयक सम्बन्ध स्थापित कएलन्हि। ई विरहक प्रत्येक दशाक वर्णनमे अनुभूति पक्ष सर्वथा ऊँच स्तरक एवम् मनोग्राही रहल अछि। विद्यापति नायक-नायिका दुनूक विरहक चित्रण कएलन्हि मुदा स्मरणीय जेहन आकर्षक राधाक विरह वर्णन भेल अछि तेहन कृष्णक नहि यथा-

"अइसन नागर अइसन नव नागरि अइसन सम्प मोर,

राधा बिनु सब बाधा मानिए नयन तेजिअ नोर।।"

वास्तवमे राधा एवम् कृष्णक प्रेम 'सागर सागरोपम्'थिक।

विरहमे सज्जनक प्रेम आओरो अधिक निखरि जा उठैत अछि। विद्यापति स्वयं लिखैत छथि-

"सुजनक प्रेम हेम समतूल,
दरूइते कनक दुगुन होए मूल।।
टुटइते नहि टुट प्रेम अद्बुत,
ये सन बढ़ए मृणालक सूत।।"

विद्यापतिक विरह वर्णन विश्व साहित्यमे अपन स्थान मूर्घन्य बनौने अछि। हिनक भाव प्रारम्भमे लौकिक स्तरक तथा वैयक्तिक रहैत अछि, किन्तु जखन गम्भीरताकेँ प्राप्त करैत अछि तखन अलौकिक, समष्टि सूचक एवम् विश्वक निधि भए जाइत अछि।

भाव पक्षक संगहि संग विरह वर्णनमे हिनक कला पक्षक समावेश सेहो पूर्ण रूपसँ भेल अछि। कलात्मकता कृत्रिम नहि अपितु स्वाभाविक अछि। अनुभूति व्यक्त करबामे सरलता अपनाओल गेल अछि। शब्द चयन, वाग्वैदग्ध, एवम् सुन्दर उक्तिसँ हिनक वर्णन अलंकृत एवम् विभूषित अछि। कलापक्षक रसक परिपाकमे सर्वत्र सहायक भेल अछि।
एहि प्रकारेँ देखैत छी जे विद्यापति अन्य भाषाक विरह-वर्णनसँ अधिक उत्कृष्ट वर्णन कएने छथि। अन्य विशेषताक संग भाव पक्ष श्रेष्ठ रहितहु कलापक्षक उपेक्षा नहि भेल अछि। भावक गम्भीरताक अभिव्यक्तिक मनो वैज्ञानिक ढंगसँ कएल गेल अछि। मिथिलाक संस्कृतिक अनुपालन सर्वत्र करैत विरहिणीक शब्द-शब्दसँ वेदना नि:श्रृत भेल अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.रबीन्द्र नारायण मिश्र- दूटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ) २. डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (पहिल खेप)

१

रबीन्द्र नारायण मिश्र

विविध प्रसंग पोथीसँ दूटा आलेख

कलनाबला बाबा

मिथिलांचलमे रहनिहार सायदे किओ एहन हेताह जे कलनाबला बाबाक नाम नहि सुनने होथि।अत्यंत साधारण लिवास मे निरंतर प्रसन्न ओ कलना मे कतेको साल सँ रहैत छलाह।ओहि समयमे हम कालेजक

विद्यार्थी रही।परीक्षा भए गेल रहए।गामपर खाली रही।नौकरी ताकबाक प्रयासमे बहत चिंतित रही।मोन बेचैन रहैत छल।हमर मित्र स्वर्गीय विश्वकांत मिश्र(लाल बच्चा) बहुत आस्थावान लोक छलाह। हुनकासंग कए पैरे दुनू गोटे कलना विदा भेलहुँ।

सुनने रहिऐक जे बाबा बहत नियम निष्ठासँ रहैत छथि। जौं हुनका लेल किछु प्रसाद लए जा रहल छी तँ बहुत पवित्रता पूर्वक लए जेबाक रहैत छल।रस्तामे यत्र-कुत्र नहि हेबाक चाही, अन्यथा कहाँदनि अनिष्ट भए जाइत छल। हम सभ तँ खाली हाथेजाइत रही तँ चिन्ताक बात नहि रहए।

कलना बाबा कें दर्शनहेतु पहिलबेर हम अपन मित्र लालबच्चाक संगे गेल रही।रस्ताभरिपैरे-पैरे गप्प-सप्प करैत हम दुनू गोटे दूपहरिआमे ओहिठाम पहुँचलहुँ।बाबा नान्हिटा फूसक घरमे रहथि।ओहिमे बाँसक फट्टक लागल छल।एक-दू गोटे आओर ओहिठाम बैसल रहथि। बाबा अत्यंत सहज रूपमे सभसँ गप्प-सप्प करैत छलाह।गप्पक क्रममे ओ कहलाह ___

''एकटा सेठ एकबेर हुनका लग आएल आ कहलक जे भगवान झुठ छथि। हम ओकरा कहलिऐक जे तोँही झुठ छैँ।"

ओ कहथिजे हुनका लग लोक कबुला कए लैत अछि आ ओकर अनुपालन नहि करैत अछि जाहि कारणसँ ओकरा अनिष्ट होइत अछि।कैटा भक्त हुनका लेल प्रसाद अनैत छलाह। ताहि काजमे बहुत संयम ओ स्वच्छताक प्रयोजन रहैत छल।बाबाक कहब रहनि जे जौँ क्यो हुनका हेतु अशुद्ध बस्तु अनैत अछि तँ ओकरा अपने अनिष्ट भए जाइत अछि। ताहि प्रसंगे ओ कैटा उदाहरणसभ देलथि।

कलनाबला बाबा सँ हमरा तीन बेर भेँट भेल। दू बेर तँ हुनके कलना आश्रम पर आ एक बेर ओ हमरा ओहिठाम आएल रहथि तखन। दुनू बेर कलना हम अपन मित्र लालबच्चाक संगे पैरे गामसँ कलना गेल रही।

एकबेर हम जखन बाबाक दर्शनक हेतु गेलहुँ तँ रस्तामे मोनमे भेल जे बाबाक एतेक नाम सुनैत छिअनि, किछु सद्यः देखतिऐक। बाबाक ओतए हम दुनूगोटे पहुँचलहुँ तँ बाबा कहलाह जे आइ रहि जाह। हमसभ हुनकर आज्ञानुसार रुकि गेलहुँ। रातिमे सामनेक पोखरिक घाटपर हम सभ सुति गेलहुँ।अर्धरात्रिमे देखैत छी जे एकटा बाँस हीलि रहल अछि आ ओकर फुनगीपर धोती सुखा रहल अछि। डर भए गेल जे की बात छैक? उठिकए ठाढ़ भेले रही की देखैत छी जे लगेमे बाबा हँसि रहल छथि आ हुनकर हाथमे धोती छनि।बाबा किछु-किछु कहबो केलाह।

एकबेर हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र) बाबाकेँ अपना ओतए चलबाक हेतु आग्रह केलखिन।बाबा मानि गेलाह। कारसँ बाबाक संगे हमहुँ रही।बाबाक सिपहसलारसब सेहो रहथि।बाबा पहिने गिरजा स्थान गेलाह। ओहिठाम माताक दर्शन केलाह।फेर कार गाम विदा भेल। गाम पहुँचलाक बाद ओ हमरा ओहिठाम चौकीपर बैसलाह।कोनो ओछाओन नहि ओछबए देलखिन। अखरा चौकी पड़ बाबा पड़ल-बैसल रहलाह।ताबे तँ सौंसे गामक लोकक करमान लागि गेल।ततके भीड़ जमा भए गेल जे माइकसँ ओकरा शांत कएल गेल।माइकेपर

बाबा किछु उपदेश देलाह।सभकेँ आशीर्वाद देलखिन। हमर अनुज(सुरेन्द्र नारायण मिश्र) केँ आशीर्वाद देलखिन जे तोरा बेटा होइ।से सत्य बेल।हुनका दूटा पुत्र तकर बाद जन्म लेलखिन।कतबो कहल गेलनि ओ किछु नहि खेलथि आ थोड़ेकालक बाद कारसँ आपस चलि गेलाह।

बाबाक देहपर मात्र एकटा धोती रहैत छल जकरा ओठेहुनधरि पहिरने रहैत छलाह। लोककेँ देखि कए ओ अद्भुत निर्मल हँसी हँसैत छलाह। खेबाक कोनो चिंता नहि रहैतछलनि।नान्हिटा खोपड़ीमे माटिपर बाबा पड़ल वा बैसल रहैत छलाह। ओतहुँ लोक अपन स्वार्थसँ आन्हर भेल हुनका तंग केने रहैत छल।

“हौ बाबा!किछु करहक ने...।”

जखन बड़तंग कए दैन तँ कहथि-"का कहली? की भैल?"। मुदा जकरा ओ बाक दए दैत छलाह से जरुर उद्धार भए जाइत छल। बाबाक कहब रहैत छलनि जे जँ क्यो किछु कबुला करैत छथि तँ काज सिद्धि भेलापर ओकरा तुरंत पालन करक चाही अन्यथा अनिष्ट होइत अछि।

बाबाक आश्रममे कतेको गोटे रहैत छलाह वा अबैत-जाइत रहैत छलाह। ओहिठाम रहनिहार लोकसभ एकहि साँझ अपनेसँ रान्हि भोजन पबैत छलाह। जखन ओसभ बहुत गोहराबथि तँ बाबा हँसैत कहितथिन ___ “ठीक, बनाबभोजन”। भोजन जहन बनि कए तैयार भए जाए तखन बाबाक आज्ञा चाहै छल जाहिसँ ओ सभ भोजन शुरु करथि। बाबा किछु बजबे नहि करथि। लैह, आब तँ बड़का विपत्ति। भोजन पड़सल धैल अछि आ बाबाक आदेशक प्रतीक्षा भए रहल अछि। बाबाके ओ सभ गोहरा रहल छथि।बाबा बड़छगुन्तासँ हुनकासभकेँ देखथि। जखन ओसभ बाबाकेँ आग्रह करैत-करैत थाकि जाथि तखन ओ कहि दितथि- "शुरु करह"।एहि तरहेँ बाबा हुनका लोकनिक धैर्यक परीक्षा लैत छलाह।तकरबाद बाबा ओहिठाम बैसल ओकरासभकेँ खाइत देखि बहुत प्रशन्न होइत छलाह।

बाबाक आश्रममे किछु गोठे निरन्तर रहैत छलाह।किछु गोटे अबैत जाइत रहैत छलाह। खिछुगोटेतँ मात्र पेट पोसबाक हेतु ओतएपड़ल रहैत छलाह। कैटा भक्त बाबा लेल कंबल वा आन-आन चीज-वस्तु अनितथि।बाबा ओकरा छुबितो नहि छलाह। आस-पास रहनिहारसभ ओहि वस्तुसभकेँ लुझि लैत छलाह।बाबा आश्चर्यचकित भए देखैत रहैत छलाह।

बाबाक दरबारमे पैघ सँ पैघ लोकसभ अबैत रहैत छलाह।जौँ बाबाकेँ इच्छानहि होनि तँ हुनकर पट खुजिते नहि छल। जाबे बाबा जीबैत रहलाह, ओहि परिपट्टाक लोकक अपन आशीर्वादसँ कल्याण करैत रहलाह। बिना कोनो लोभ लालच केँ संपूर्ण जीवन ईश्वरक आराधनामे लगा देलाह।हुनक निधनसँ एकटा महान संत एहि संसारसँ मुक्त भए गेलाह संगहि बहुतरास लोकक मोनमे अथाह श्रद्धा छोड़ि गेलाह।हुनका शत-शत प्रणाम!

डॉ. सुभद्र झा (संस्मरण)

इलाकाक चर्चित व्यक्तित्व छलाह-डा० सुभद्र झा। धोती, मिरजइ सन कुर्ता पहिरने अत्यन्त सरल, साधारण लिबासमे डाक्टर साहेब अड़ेर हाट चौकपर बरोबरि देका जएतथि। गप्प-सप्पमे ओ अपन बिचार अति स्पष्टतासँ रखैत छलाह।ताहि क्रममे जौं कने-मने विवादो भए गेल किंवा क्यो कटाक्षो कए देलक दँ कोनो बात नहि।

मिथिलेटा नहि, अपितु समस्त भारतवर्षमे तत्कालीन विद्वान लोकनिमे हुनकर प्रतिष्ठा छलनि।हुनकर विषयमे किछु कहब आ लिखब कठिन काज अछि तथापि स्मरणमे किछु घटना अछि जे लिखि रहल छी।

घटना सन् १९६५-६६ ई०क थिक। नवतुरियासभ गाममे एकटा पुस्तकालय स्थापित करए चाहैत चलाह।किछु दिनक प्रयासक वाद किछु पोथी, किछु पैसाचंदा भेल।किछु आलमारी सेहो बनाओल गेल।तकर बाद भेलैक जे ओकर उद्घाटन कएल जाए। उद्घाटन के करताह? आपसी विचार- विमर्शक बाद डा० सुभद्र झाक नाम पर आम सहमति भेल।डा० सुभद्र झा किछु दिन पूर्वसेवा निवृत भए गामे रहए लागल छलाह।आ यदा-कदा हमर गामक चौकपर अबैत-जाइत देखा जाइत छलाह। उद्घाटन कार्यक्रममे डा० सुभद्र झाकेँ सेहो किछु कहबाक आग्रहकएल गेल। बहुत दुराग्रह कएलापर ओ बजबाक हेतु तैयार भेलाह। संक्षिप्त भाषणक क्रममे ओ कहलनि जे एहि इलाकामे अनुसंधानक हेतु पर्याप्त सामग्री यत्र-तत्र पसरल अछि।ओकरासभ कँ एहन पुस्कालयमे सुरक्षित राखल जा सकैत अछि।संगहि कबीरदासपर उपलब्ध सामग्रीक उल्लेख करैत ओ कहलाह जे एहि बातक प्रमाण अछि जे कबीरदास मैथिल छलाह आ मैथिलीमे कतेको रचना कएलनि अछि।

१९७३ ई०मे लगभग एकमास डा० सुभद्र झाक राँची स्थित आवास पर रही। तखन ओ योगदा सतसंगविद्यालयक प्राचार्य रहथि।ओही परिसरमे प्राचार्यक निवासमे ओ रहैत छलाह।हुनका संगे परिवारक आर सदस्य नहि छल।घरक काज करबाक हेतु एकटा नौकर छल। भोजन ओ स्वयं बनबैत छलाह।

प्रातःकाल भात-दालि-आलूक सन्ना बनाबथि। रातुक भोजनक व्यवस्था सेहो तखने कए लेथि।रातिमे बेसी काल आँटाक चोकरकँ दूधमे उसनि कए खाइत देखिअनि।रातिमे सूतबासँ पूर्व ओ नियमित रूपसँ पढ़ैत छलाह।साँझमे तिन-चारि गोटे बैसि कए शास्त्र चर्चा करैत छलाह।एक दिन साँझमे डाक्टर साहेबक संग कतहु जाइत रही।रिक्साबला सब जतेक पाइ मांगै, से देबाक हेतु ओ तैयार नहि होथि।रिक्सातकैत-तकैत अन्ततः सौंसे रास्ता बिति गेल।

एक दिन एहिना संगेटहलैत रहीतँ साईबाबाक चर्चा उठल।ओ हुनकर बहुत प्रशंसा करथि आ कहथि जे साईबाबा सरिपहुँ सिद्ध पुरुष छथि जकर हुनका प्रत्यक्ष अनुभव तखन भेल रहनि जखन ओ बाबाक आश्रममे सिरडी गेल रहथि। कहलाह जे आश्रममे हुनका पहुँचते देरी बाबा हुनकर मोनक प्रश्नक उत्तर देबय लगलखिन।आरो कएकटा प्रसंगसभ ओ सुनओलथि।

योगदा सतसंग महाविद्यालय नवे बनल छल। डाक्टर साहेब पूर्ण तत्परतासँ ओहि विद्यालयक विकासमे लागल रहैत छलाह। परिसरमे आश्रमक आबास होइत छल। चारूकात गाछ सभक बीचमे बनल भाषण

मंडपसभ।ओही परिसरमे एकदिस आश्रम छल जाहिमे एक दिन माँ आनन्दमयी आयल रहथि।हम डाक्टर साहेबक संगे ओतए रही।माँ आनन्दमयीक अबितहि पूरा हाँलमे शांति पसरि गेल।ओ किछु बजली नहि।चुपचाप सभगोटे ध्यान केलक।कोनो भाषणबाजी नहि भेल।

एकदिन डाक्टर साहेबक डेरापर आंगनमे ठाढ़ रही। हमरा देखि डाक्टर साहेब गंभीर भए गेलाह आ कहला जे नीकसँ पहिरल-ओढ़ल करह।जीवनमे सफलताक हेतु एहिसभकेँ बहुत महत्व अछि।ताहीक्रममे कहलाह जेएही कारणे ओ कएकबेर उच्च पदसभक चयनमे पछड़ि गेलाहयद्यपि ओ पदक हेतु पूर्ण योग्य रहथि।

डाक्टर साहेबक दोसर पुत्र भास्करजी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे जर्मन भाषाक व्याख्याता छलाह। हुनकर डेरापर डाक्टर साहेब अबैत -जाइत रहैत छलाह। सन्१९८३ ई०क गप्प अछि। एकदिन हम हुनका दुनू गोटेकँ नोत देने रहिअनि। दुनूगोटे कोनो कारणसँ आगा-पाछा भए गेलाह। डा० झा पहिने चलल रहथि। भाष्करजी पाछू चललाह आ डेरापर पहुँचि कएबहुत परेशानीमे रहथि जे आखिर ओ कतए चलि गेलाह। हमसभ गोटे हुनका ताकए लगलहुँ।कतहु नजरि नहि आबथि।रातुक समय छल।भोजनमे विलंब भए रहल छल।ताबत थोड़े कालकबाद मकानक नीचासँ ओ जोर-जोरसँ हमर नाम लए कए चिकरि रहल छलाह।हमरा सभकेँ जानमे जान आएल।पता लागल जे ओ हमर डेरा तकैत-तकैत धोबी घाट चलि गेल रहथि। हमर मकान मालिक धोबी छल आ तकरे अनुमानमे ओ धोबी घाट चलि गेल छलाह।

डाक्टर साहेब अति अध्ययनशील छलाह। जखन कखनो फुरसतिमे रहितथि तँअध्ययन करएलगितथि। एकदिन प्रातः एगारह बजे इलाहाबाद मे भाष्करजीक डेरा पर गेलहुँ। डाक्टर साहेब ओतहिरहथि। कहलाह जे हम एगारह घंटासँ निरन्तर पढ़ि रहल छी।मैथिलीमे शव्दकोशक निर्माणमे लागल छलाह। एकदिन हम डाक्टर साहेबक संगे इलाहाबादमे कतहुँ जाइत रही।रस्तामे पुछलिअनि जे भगवान छथि कि नहि?ओउत्तर देलनि जे ई कहब तँ कठिन अछि जे भगवान छथि कि नहि परन्तु जौँ भगवान छथि तँ बहुत बइमान छथि,कारण दैत ओ कैटा उदाहरण देलनि। जेना पेटमे बच्चाकिएक मरि जाइत छैक?आखिर ओ जन्मसँ पूर्वे की गलती केलक?आ जौँ गलती केलक तँजनमि कए ओकरा भोगए।गप्पक क्रममे ओ कहलाह जे सम्प्रति जीबैत लोकमे बिहारमे संस्कृतक सभसँ पैघ विद्वान छथि।

साहित्य अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष डा० सुनीति कुमार चटर्जीक ओ बहुत प्रशंसा करथि आ कहति जे हमरा लेल ओ भगवाने छलाह।डाक्टर साहेबकसंगे एकदिन टहलैत रही।गप्पक क्रममे ओ अपन प्रवासक दौरान भेल दू गोट घटनाक चर्चा कएलनि। डाक्टर साहेब ट्रेनसँ कतहुँ जाइत रहथि।कोनो टीसनपर गाड़ी रूकल तँ डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्नन ओहिमे सवार भेलाह।डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्नन बैसबाक हेतु घुसबाक हेतु कहलखिन।डाक्टर सुभद्र झा अड़ि गेलाह एवम् डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्नन कँ जगह नहि देलखिन।राँचीमे गप्पक क्रममे एकदिन डाक्टर साहेब कहलाह जे ओ पुस्तकालयमे नौकरी करैत रहथि।ओही क्रममे हुनकासँ जे श्रष्ठ पदपर अधिकारी छलाहसे हुनकासँ किछु गलत काज कराबए चाहैत छलाह।ओ से करबाक हेतु सहमत नहि भेलाह। ताहिसँ कुपित भएकए ओ अधिकार हिनका बहुत तंग करैत छलनि।डाक्टर साहेबकँ पता रहनि जे ओ अधिकारी गलत काज करैत अछि। चुपचाप ओकर गलत काज बला कागजातक

प्रतिलिपि ओ रखैत गेलाह।पुस्तकक क्रय-विक्रय मे ओ अधिकारी बहुत हेरा-फेरी केने छलाह, जकर कागजी सबूत डाक्टर झा लग छलनि।बादमे एहि बातक आरोप भेलएवम् जाँचक बाद ओ अधिकारी दोषी साबित भेल।अपनाकेँ बचाबक हेतु ओ चाहलक जेपुस्तकालयकेँ जे क्षति भेल रहैक से आपस करी मुदा ओकर परिवारक लोक पैसा आपस नहि कएलक।एहिबात सभसँ दुखी ओ भयभीत भए ओ आत्महत्या कए लेलक।

डाक्टर झा सँ जे कनी-मनी हमरा संपर्क भेल ओकरा संयोग कहिसकैत छी। बच्चेसँ हम हुनकर नाम सुनैत रही।सौँसे इलाकामे ओचर्चाक विषय रहथि आ छोटसँ पैघ लोकक संपर्कमे सहजतासँ अबैत छलाह।ओ धुनक पक्का छलाह।जाहि काज मे लागि जाथितकरा पूर्ण करबाक हेतु प्राण-प्रणसँ जुटि जाथि। हुनका अपन गाममे गाछ सब रोपबाक इच्छारहनि। कहि नहि, कतए-कतएसँ आनिकए सालक साल ओ आमक गाछ रोपैत रहलाह।

हुनक प्रतिभा ओ विद्वताक वर्णन करबाक कोनो आवश्यकता नहि बुझा रहल अछि।आडम्वर रहित जीवन शैली एवम्अतिशय सहज व्यवहारक संग स्पष्टवादिताक लेल ओ सभ दिन मोन पड़ताह। धोती-कुर्ता पहिरने, पैरे खेतक आरिए-आरिएचलैत-चलैत पता नहि ओ निरन्तर कोन चिंतनमे ध्यानमग्न रहैत छलाह। अपन मौलिकता एवम् अपन बातकेँ दृढ़तासँ रखबाक लेल ओ सभ दिन मोन पड़ैत रहताह।

रबीन्द्र नारयण मिश्रक

दूटा लघुकथा

<u>पंचैती</u>

जमाना कतए चल गेल मुदा गाम-घरक लोक अखनहुँ दू सौ बर्ख पाछा अछि। लोककेँ अखनहुँ चन्द्रमामे एकटा बुढ़िया चर्खा कटैत देखाइत छैक। लोक अखनहुँ ग्रहण लगिते स्नान करए चल जाइत अछि। किएक तँ ओकरा छुति भए जाइत छैक। लोकक संस्कार-संस्कृति सेहो आधुनिक ओ पुरातनक द्वंदक बीच चलि रहल अछि।

पुरना पीढ़ी आ आधुनिक लोकमे अखनहुँ बड़ अन्तर छैक। तँ एकटा स्वत: सर्वत्र विद्यमान तनाव कोनो क्षण झगड़ाक रूप लए लैत अछि। एही कारणसँ गाम-घरमे पंचैतीक जबरदस्त गुंज़ाइश छैक।

मुरली पाँच भाँइ छलाह। घरक हिसाब-किताब श्याम रखैत छलखिन। मैट्रिक तक पढ़ल छलखिन। बेस चलाक-चुस्त। लगानीक असूल करबामे पारंगत। हुनकासँ छोट तीन भाए- मोहन, रूदल आ लखन। लखन कमे बएसमे दिवंगत भए गेला। हुनकर एक मात्र पुत्र जीवनकेँ पित्ती सभ पहिनहि फराक कए देलकनि। पाँच बीघा जमीन हिस्सामे पड़लनि। लगानी-भिरानी जे किछुछलनि, सभटा श्याम बैमानी कए लेलखिन। शेष चारू भाएमे शुरूमे तँ खूब भेल छलनि मुदा किछु दिनक बाद रूदलक स्वर्ग बास भए गेलनि। हुनका मात्र तीनिटा कन्या छलनि। तीनूक बिआह पित्ती सभ केलखिन। बिआह करएबाक क्रममे

सभटा जमीन तीनू भाए अपना-अपना नामे करा लेलनि। मसोमातकेँ किछु नहि रहि गेल छलैक। गामक किछु फनैत सभ ई गप्प मसोमातक कानमे दए देलकनि। मसोमात तँ ओहि दिनसँ अगिआ-बेताल छथि। एक्को दिन एहन नहि भेल जे हंगामा नहि भेल।

बुध दिन रहैक। गाममे हाट लगैत छलैक। गाम-गामक लोक हाटपर जमा छल। सरपंच साहेब उर्फ पलटू बाबू चिकरि-चिकरि कए सैकड़ो लोककेँ जमा कए लेलनि। सभ गोटे तय कएल जे मसोमातक संगे बड़ भारी अन्याय भेलैक अछि।परिणामत: दोसर दिन तीन बजे सरपंच साहेबक दलानपर पंचैती करबाक निर्णय भेल।

दोसर दिन दुपहरियेसँ सौंसे गामक लोक सह-सह करए लागल। सरपंचक ओहिठाम बैसारी रहैक।बेर खसैत-खसैत सौंसे दरबाजा लोकसँ भरि गेल। अगल-बगलक गामक प्रमुख-प्रमुख लोक सभ सेहो बजाओल गेल छलाह। मुखियाजी एखन धरि नहि आएल छलाह तँ ओहि टोलपर आदमी पठाओल गेल। चारि बजैत-बजैत लोकक करमान लागि गेल। सरपंच साहेब अपन स्वागत भाषण कही या जे कही, प्रारम्भ केलनि। मसोमात सेहो कोनटा लागल ठाढ़ि छलीह। चारू भाएकेँ कोनो फज्झति बाँकी नहि रहल। गाम-गामक पंच सभ सेहो 'छिया-छिया' कहय लगलखिन। मुदा श्याम बेस चलाक लोक छलाह। ओ मुखियाकेँ रातियेमे पाँच साए टाका दए अपना गुटमे कए लेने छलखिन। मुखियाजी सरपंचपर कड़कि उठलाह-

"ई अन्याय नहि चलत। आखिर तीनटा जे कन्यादान पित्ती सभ केलखिन ताहिमे खर्चा तँ अवश्ये भेल हेतैक। फेर मसोमात तँ असगर छथि। जमीन लए कए करतीह की? बारह मोन खोरिश हिनका अवश्य भेटक चाही। बाजू यौ श्याम बाबू, अपने एहिपर तैयार छी?"

श्याम बाबू स्वीकृतिमे अपन मुड़ी हिला देलखिन।

ई बात सरपंचकेँ एकदम नहि रूचलैक। ओ बमकए लागल। संगे जे ओकर चारि-पाँचटा लठैत सभ छलैक सेहो सभ बमकए लागल। जबाबमे चारू भाए सेहो भोकरए लागल। सरपंचक दरबाजापर बेस हंगामा बजड़ि गेल। अन्ततोगत्वा ई निर्णय भेल जे दूनू गोटे एकादशी दिन पाँच प्रमुख-प्रमुख व्यक्तिक समक्ष हरिवंशक पोथी उठा कए सप्पत खाथि आ ओहीसँ बात फड़िछा जाएत।

प्रात:काल सरपंच साहेबक ओहिठाम गाएक गोबरसँ ठाँव कएल गेल। ओहिपर हरिवंशक पोथी राखल गेल। पाँचो पंच बैसल रहथि। श्याम मोने-मोन खुश छलाह। पता नहि, कतेक बेर ओ एहिना हरिवंशक पोथी उठाए लोकक घर-घड़ारी घोंटि गेल रहथि। हनहनाइत, फनफनाइत अएला आ हरिवंशक पोथी उठा लेलाह। पंच सभ तकैत रहि गेला। मसोमात ओहीठाम अचेत खसि पड़लीह। मसोमातकेँ बारह मोन खोड़िसक अधिकार मात्रक घोषणा पंच समुदाय कए देलक। पंचैती समाप्त भए गेल।

बुधन गामक मानल लठैत छलाह। परमा बाबू बी.डी.ओ. साहेबसँ एकटा चापा कलक व्यवस्था करौने छलाह। कलक तीन-चौथाइ खर्चा सरकारी मददितिसँ भरल जएतैक। बुधन ओ परमा बाबूक घर सटले छल। कल कतए गाड़ल जाए ताहि हेतु जबरदस्त झगड़ा बजरि गेलैक। तय भेलै जे हीरा बाबूकेँ पंच मानि लेल

जाए। ओ जे फैसला कए देथिन से मानि लेल जाए। हीरा बाबू प्रतिष्ठित, पढ़ल-लिखल एवम् ओजस्वी लोक छलाह। सम्पतिक नीक संगह कएने छलाह। प्रात: काल ओ घटना स्थलक निरीक्षण कएलाह। बुधन लठैत छल। कखनो ककरो गरिया सकैत छल। बेर-कुबेर ओ लाठी लए कए ठाढ़ो भए सकैत छल। परमा बाबू पढ़ल-लिखल सभ्य ओ शान्त स्वभावक लोक छलाह। परिणामत: हीरा बाबू फैसला कए देलनि जे कल बुधनक घर लगक खाली स्थानपर गाड़ल जाए। बुधन प्रशन्न भए गेलाह। परमा बाबू चुप, समाजक लोक चुप।

सोमन बाबू कामरेड छथि। गाममे कतहु क्यो कोनो गड़बड़ी करैत तँ ओ अवश्य ओहिठाम पहुँचि जाइत छलाह। गरीब लोक हुनका अपन नेता मानैत छल। अमत टोलीक एकटा स्त्रीगण अपन घरबलाकेँ छोड़ि कए निपत्ता भए गेल छलि। चारि-पाँच दिनुका बाद सौंसे गाममे जबरदस्त हंगामा भए गेल। शोभा बाबू ओहि मौगीक संग निपत्ता। मुदा एहि बेर कोनो पंचैती नहि भेलैक। जे जतहि सुनलक ओ ओतहि गुम्मी लादि देलक। समरथकेँ नहि दोष गोसाई सद्य: चरितार्थ भए गेल।

जीबछ क अबाजमे बेस टीस छनि। लोक कहैत अछि जे हिनकर पिता बड़ सुखी-सम्पन्न छलखिन। मुदा देखिते-देखिते ओहने दरिद्र भए गेलखिन। ओहि घटनाक पाछू सेहो एकटा पंचैतीक हाथ छलैक। जीबछक पिताक श्राद्धछलनि। गामक प्रमुख-प्रमुख लोकक बैसार भेलैक। जीबछ बाबू सन प्रसिद्ध ओ धनीक लोकक श्राद्धमे कमसँ कम जबार तँ खेबेक चाहैक छलैक। सएह भेलैक। चारि दिन धरि भोज होइते रहलैक। जीबछ एहि काजमे बीस हजार टका घरसँ निकाललाह। दस हजार टका कर्ज लेबए पड़लनि। अमरू दियादे छलखिन। धर दए बिना कोनो हिचकसँ हुनका पैसा दए देलक। काजक बाद कहलक-

"कोनो बात ने। जखन पैसा हो तखन दए देब।"

दू साल बीति गेल। जीबछक हालत दिन-दिन बत्तर होइत गेल। तीन सालक बाद अमरू एकाएक चढ़ाइ कए देलक। ओकरा हिसाबे सूद सहित ३५००० टाका कर्ज भए गेल छलैक। अमरूअपन लठैत सभक सहायतासँ ओकर सभटा जमीन जोति लेलखिन। गाममे बेस बबंडर भेल। पंचैती बैसल। सौंसे गामक नीक लोक सभ जमा भेलाह। अमरूक विजय भेल। सभ पंच अमरूक पक्षमे हाथ उठा देलखिन। अमरू सभ जमीन जोति लेलाह। सएह भेल पंचैती। जीबछओही पंचैतीक परातसँ फक्कर भए गेलाह।

कहबी छैक जे पति-पत्नीक पंचैती नहि करी। कारण कहि नहि, ओ कखन झगड़ा करत आ कखन एक भए जाएत। मुदा आइ-काल्हि एहनो कलाकार सभहक कमी नहि अछि जे दून्‍ू व्यक्तिमे झगड़ा लगा कए मटरगस्ती करैत रहैत छथि। बेरपर पंचैती सेहो कए दैत छथि। बतहु मिसर एहने व्यक्ति थिकाह। पुवारि गामवाली बेस हराहि छलीह। दूनू व्यक्तिमे खटपट होइते रहैत छनि। ओहि दिन पुरवारि गामवाली कतहु हकार पुड़ए गेल छलीह, घुरैत-घुरैत अबेर भए गेल रहनि। घुमैत-फिरैत बतहु बाबू पहुँचलाह। पुरवारि गामवालीक घरबलाकेँ लोक खलीफा कहैत छल। खलीफा दरबाजापर गरमाएल छलाह। बतहु मिसरपुछलखिन-

"की बात छैक? आइ बड़ गरमाएल लागि रहल छी?"

एतबा ओ पुछलखिन की खलीफा अपन घरवालीकेँ एक हजार फज्झति करए लगलखिन। ताहि पर बतहु मिसर टीप देलाह-

“हँ बेस कहैत छी भाए। आइ-काल्हिक स्त्रीगण सभ तँ एहने होइत छैक। हुनका तँ हम जट्टाक घरमे गप्प हकैत देखलियनि अछि।”

एतबा गप्प बाजि ओ ओतएसँ हटि गेलाह।

थोड़ेक कालक बाद पुरवारि गामवाली लौटलीह। दूनू व्यक्तिमे महाभारत जे भेल से देखएबला छल। चारूकातसँ लोक सभ दौड़ल आएल। पुरवारि गामवाली बजैत रहि गेलीह। अन्ततोगत्वा, खलीफेकेँ लोक उठा कए दोसरठाम लए गेल। दूनू व्यक्ति ओहि दिनसँ फराक-फराक रहए लगलाह। घरमे खान-पान बन्द। बतहु मिसर फेर उपस्थित भेलाह आ खलीफाकेँ कहलखिन-

“भाइ! एहि तरहेँ केते दिन चलत? आपसमे बैसार कए लिअ आ मेल-जोलसँ समय बिताउ।”

तय भेल जे काल्हि आठ बजे बैसार होएत। दोसर दिनबैसार भेल। दूनू व्यक्ति अपन-अपन पक्ष कहए लगलखिन। बहुत रास गप्प-सप्प भेलाक बाद बतहु मिसर ई तय कए देलखिन जे आइ दिनसँ खलीफा अपन घरवालीक गंजन नहि करताह।

ताहि पर पुरवारि गामवाली कनखी मारलखिन। खलीफा मुँह तकैत रहि गेलाह। बतहु मिसर तमाकुल चुनबैत-चुनबैत थपरी मारलाह आ ओहिठामसँ घसकि गेलाह।

गाम-घरमे पंचैती एहिना होइत अछि। जकर लाठी तकर महिष।

।
।

<u>**मुखिआक चुनाव**</u>

साँझ कए गाममे समाचार-पत्र आर्यावर्त अबैत छलैक। गाम भरिक लोक चौकपर एकट्ठा भए जाइत छलैक। चाहक दू-तीन दोकानपर लोक भन्न-भन्न करैत रहैत छल भादो जकाँ। अखबार अबैक कि गामक पढ़ुआ सभ ओहिपर टुटि पड़ए। ओहि दिन अखबारमे सरकारक एकटा सूचना बहराएल रहैक जे राज्य भरिमे मुखियाक चुनाव एक मासक भीतर सम्पन्न भए जाएत। औ बाबू! ई समाचार कि आएल जे सौंसे गाममे जेना करेन्ट लागि गेल। ओहि गाममे एकसँ एक सरगना लोक छलाह। धने-जने परिपूर्ण। मोहन बाबू, पलटन बाबू, हीरा बाबू, झगड़ू बाबू आदि-आदि।मुखिया के बनए, सरपंच के बनए। विभिन्न गुटमे इएह घोल-फचक्का शुरू भए गेल। सौंसे गाम खण्ड- खण्डमे बँटल छल।

पूबाइ टोलक सरगना मोहन बाबू छलाह। पलटन बाबू ओ हीरा बाबू दक्षिणवाइ टोलक प्रभावी लोक छलाह आ झगड़ू पछबाइ टोलक मानल लठैतमेसँ एक छलाह। उत्तरवाइ टोलक क्यो नेता नहि छल, कारण

ओतए बेसी जन-बोनिहार रहैत छल आ अपनेमे ताड़ी पीब कए कटा-कटी करैत रहैत छल। ओकरा सभहक भगबान रोटिये छलैक। मालिक सभहक ओहिठाम जाए, जखन जे काज भेटैक से करए आ बोनि लए कए चल आबए। एमहर जहिआसँ चुनाव सभ होमए लगलैक अछि ओहो सभ किछु सुगबुगाएल जरूर अछि, मुदा कोनो खास नहि। कहिओ काल बाहरसँ नेता सभ अबैत छैक तँ ओहू टोलमे चहल-पहल रहैत छैक।

चारू टोलमे झगड़ू बाबूकँ बेस चलाचलती छैक। लाठीक बल छैक। पाँचटा बेटा छनि। सभकँ पहलमानीमे पारंगत कराओल गेल। बेस लठैत सभ छल पाँचू बेटा। ओकरा सभहक डरे इलाका शान्त भए जाइत छल। तँए केहनो पढ़ल-लिखल लोककँ झगड़ू बाबकँ नमस्कार करए पड़ैत छलैक।

चुनावक समाचार पबिते झगड़ू बाबू बमकए लगलाह। प्रात भेने हुनका टोलक सभ लठैत अपनामे बैसार केलक। मुखिया आ सरपंचक नामक फैसला तँ नहि भए सकलैक मुदा एतबा तय भए गेल जे वर्तमान मुखिया आ सरपंचकँ अबश्य हराबक अछि।

झगड़ू बाबू भोरे सात बजे नहा-सोना कए चौकपर पहुँचलाह आ बमकए लगलाह-

“सभ चोर है, मुखिय चोर है। सरपंच चोर है, सभ को ठीक करेगा।” आदि आदि...।

चारूकात भन्न-भन्न करैत लोक सभ जमा होमए लागल।

“की बात छैक झगड़ू बाबू?”-किओ ओहिमे सँ पुछलखिन।

“की बात छै से तोरा सभकँ कोना बुझेतह? एहन बैमान सरपंच आ मुखिया आइ धरि एहि इलाकामे नहि भेल। कहिओ गामबलाकँ कोटाक चीनी ठीकसँ भेटलैक? एहि बेरक चुनावमे एहि बैमान सभकँ हरेबाक अछि..!”

लोक अबैक, लोक जाइक मुदा झगड़ू बाबू भाषण ओहिना अनबरत चलिते रहनि। रेलगाड़ीक पहिया जकाँ घुरा-फिरा कए ओतहि पहुँचि जाइत छला :

“इस बैमान सभको हराना है।”

झगड़ू बाबूक भाषण चलि रहल छलनि कि ताबतेमे सरपंच साहेब घुमैत-फिरैत आबि गेलाह। चारूकातक लोक हुनका दिस तकैत छल। मुदा झगड़ूक भाषण यथावते चलि रहल छल। सरपंच साहेब एक-दू बेर झगड़ूकँ बुझाबक प्रयास केलथि। ताबतेमे सरपंचक भातिज मुनमा पहुँच गेल। हाथमे बेस मोटगर एकटा लाठी छलैक। ओ ने आब देखलक ने ताव आ धराम-धराम दू लाठी मारलक झगड़ूकँ।

झगड़ू बाबू असगर पड़ि गेलाह। गरियबैत गाम दिस दौड़लाह आ पाँचो बेटाकँ हाँकि देलखिन। सौंसे चौकपर गरमा-गरमी भए गेल छलैक। झगड़ू बाबू मारि बिसरि फेरसँ गरजए लगलाह-

“कहाँ भागा। आए सामने तो जानें।”

झगड़ू बाबूक पाँचो बेटा सेहो फराके गरजैत एवम् प्रकारेण चुनाव अभियान शुरू भेल।

पर्चा भरबाक समय करीब आबि रहल छल। घरे-घर गुटपैंची शुरू भए गेल। वर्तमान मुखिया आ सरपंच बेस टकाबला लोक छलाह। कोनो कीमतपर चुनाव जीतबाक हेतु कृतसंकल्प छलाह। मुदा नवतुरिआ सभ हुनकर विरोधी छल। गामक आरो लोक सभ सेहो हुनका सभसँ सन्तुष्ट नहि छल। अन्ततोगत्वा पर्चा भरबाक अन्तिम दिन धरि मुखिया आ सरपंचक हेतु पाँच-पाँच गोट उम्मीदवार पर्चा भरलनि। ओहिमेसँ मुखियाक हेतु तीन आ सरपंचक हेतु दू गोटाक पर्चा सही पाओल गेल। नवतुरिआक उम्मीदवार पलटू बाबू आ मोहन बाबू भेलाह। वर्तमान मुखिया ओ सरपंच सेहो एक बेर फेर मैदानमे अड़ल छलाह। ओकर अलाबा उत्तरवाइ टोलसँ गरीब लोक सभक उम्मीदवार बलचनमा सेहो अखाड़ामे उतरल छल।

मुखियाक चुनाव गाममे तूफान अनलक से कोनो नब बात नहि छल। सभ बेर एहिना होइत छलैक। जहिआ कहिओ चुनाव होइक तऽ लोक सभ एहिना घोल-फचक्का करए लागय। मुदा एहि बेरक चुनावमे विशेषता ई छलैक जे उत्तरवाइ टोलक गरीब लोक सभ सेहो फाँर बन्हने छलैक। बाहर-बाहरसँ नेता सभ अबैत दलैक। नित्य ककरोने ककरो ओहिठाम बैसार अबश्य होइतै। मतक हिसाबे आधासँ अधिक मत गरीबक छलैक आ जँ ओ सभ एक भए जाए तँ बलचनमाकेँ मुखिया बनबासँ कियो नहि रोकि सकैत छल। एहि बातक प्रतिक्रिया आन तीनू टोलमे सेहो भेलैक। मुदा कोनो हालतमे वर्तमान मुखिया चुनाव दंगलसँ हटए नहि चाहैत छलाह आ नवतुरिआ सभ हुनका अपन नेता मानबाक लेल तैयार नहि छल। एवम् प्रकारेण संपन्न वर्गक मत दूठाम बँटब स्वाभाविक भए गेल छलैक। मुदा बलचनमाक प्रचार जोर पकड़ने छलैक।

झगड़ू बाबूक हेतुस्वर्णिम अवसर छल। खने बलचनमाक संगे घुमितथि तऽ खने पलटन बाबूक ओहिठाम आ खने वर्तमान मुखियाक ओतए। पर्चा भरलाक बाद चुनाव दिन धरि झगड़ू बाबूक हेतु अगहन रहैतछलनि। हुनका ईहो कोनो ठेकान नहि छलनि जे कखन कोन दलक संग भए जेताह।

बड़का लोक सभहक मत दू ठाम बटबासँ रोकबाक हेतु साँझमे पूबाइ टोलमे बैसार भेल। क्यो किछु बजितथि ताहिसँ पहिने झगड़ू बाबू बमकए लगलाह। वर्तमान मुखियाकेँ एक हजार फज्झति कएल।

अन्ततोगत्वा ई निर्णय लेल गेल जे नवतुरिआक उम्मीदवार पलटन बाबूक समर्थन करताह। सरपंचक पदक हेतु मात्र दूटा उम्मीदवार छलाह- मोहन बाबू आ वर्तमान सरपंच नवत राय। नवत राय कमे पढ़ल-लिखल मुदा बेस फनैत लोक छलाह। कतहु किछु होइतैक कि भदवरिया बेंग जकाँ टर्र-टर्र बाजए लगितथि। घर-घर झगड़ा लगेबामे ओस्ताद छलाह। जँ किछु खर्च-बर्च कए दियैक तँ पंचयतीमे फैसला अहाँक पक्षमे सुनिश्चित कएल जा सकैत छल। जँ नीक-निकुत भेटि जान्हि तँ कतहुँ खा सकैत छलाह अन्यथा बेस नेम-टेमसँ रहैत छलाह।

एहि सभ कारणसँ गामक लोक ओकरासँ एकदम ना-खुश छलैक। मुदा क्यो ओकरा नाराज नहि करए चाहैत छलैक कारण ओ बेस फचाँरि छल आ ककरहुँ कतहु बइज्जत कए सकैत छल।

झगड़ू बाबू नवतुरिओपर चिकरए लगलाह। नवतुरिआ सभ सरपंचक हेतु मोहन बाबूकेँ समर्थन देबाक आश्वासन देलखिन। प्रात भेने नवतुरिआ सभ इन्नकिलाब, जिन्दाबादक नारा दैत गाम भरिमे पलटन-मोहन जिन्दाबादक स्वर गुंजित कए देलक।

एमहर गरीब लोक सभ एकदम एक भए गेल छल। लाठी लए कए सभ करे कमान छल। एवम् प्रकारेण सपष्ट लगइत छल जे मुखिया पदक हेतु बलचनमा आ सरपंचक हेतु मोहन बाबू चुनाव जीतताह। वर्तमान मुखिया ओ सरपंचजी बेचैन छलाह। रातिक बारह बजे झगड़ू बाबूक घर पहुँचलाह। दूनू गोटे झगड़ू बाबूक पैर पकड़लखिन।

“झगड़ू बाबू, अपने हमरा सपोट करू।”

“किएक नहि। हमर सपोट तँ सभदिन अहींक संगे रहल अछि।”

“से तँ ठीके मुदा एहि बेर हालत बेसी गड़बड़ छैक।”

फेर कहि नहि, दूनू गोटे की फुस-फुसेलाह। २००० टाकापर सौदा भए गेल। प्राते भेने झगड़ू बाबू चौकपर फेर गरजए लगलाह-

“मुखियाजीक जे विरोध करत से हमर दुश्मन। एहन मुखिया सरपंच तँ ने कहिओ भेल छल आ ने होएत।”

आदि आदि। सुननाहर सभ गुम्म।

काल्हि चुनाव होएत। राति भरि गाममे धोल-फचक्का होइत रहल। सभठाम काना-फुसी बेस जोर पकड़ने छल। पुस्तकालयपर चुनाव दल आबि गेल छल। चारिटा पुलिस लाठीलेने सेहो गश्त लगाबए लागल। पहिलुका चुनावमे उत्तरवाइ टोलपर चुनावक मतदान केन्द्रनहि होइत छलैक। मुदा एहि बेर गरीब लोक सभ बी.डी.ओ. साहेबक ओहिठाम धरनाधए देलक। एहि बेर उत्तरवाइ टोलमे सेहो मतदान केन्द्रबनल छलैक। झगड़ू बाबू आ हुनक बेटा सभ बेस मजगुतगर लाठी फनैत चुनाव मतदान केन्द्रसभपर चक्कर लगा रहल छलाह। पुवाइटोलक मतदान केन्द्र पर नवतुरिआ सभ कब्जा कए लेने छल। कसिकए वोगस मतदान भए रहल छलैक। ई खबरि झगड़ू बाबूकेँ जहाँ भेटल कि ओ अपन लठैत बेटा सभकेँ संग कए ओतए पहुँचला आ पलटन एवम् मोहन बाबूकेँ धराम-धराम दू-दू लाठी लगाओल। पीठासीन पदाधिकारी अकबका गेलाह। चारू दिस हरविर्रो मचि गेल।

ओहि बीचमे झगड़ूक दूटा बेटा आगा बढ़ल आ सभटा मतपत्र छीनि जबरदस्ती मोहर मारि खसा कए खसकि गेल। मुदा एकर जबरदस्त प्रतिक्रिया उत्तरवाइ टोलक मतदान केन्द्र पर भेल। एक-एकटा मतपत्रपर बलचनमा अपने मोहर मारि कए खसौलक। कोनो दोसर उम्मीदवारक पोलिंग एजेन्ट ओहिठाम नहि टिकि सकल। बलचनमाक जीतब निश्चित प्राय छलैक ओही मतदान केन्द्र क, कारण आधासँ अधिक मत ओही

टोलक छलैक। सरपंचक सभटा मत नवत रायकेँ भेटलैक। आन मतदान केन्द्रसभपर सामान्य रूपसँ मतदान भेल आ कने-मने मत सभकेँ भेटलै।

साँझमे मत गणना प्रारम्भ भेल। बारह बजे रातिमे जा कए चुनावक परिणाम बहार भेलै। बलचनमा ओ नवत चुनाव जीति गेलाह। गरीब लोक सभ विजयक खुशीमे मत्त छल। नारा बुलन्द होमए लागल-

"जीत गया जी जीत गया, बलचन जीत गया।" पुबारि टोलसँ लए कए पछबारि टोलक सभ लोक सन्न छल।

¦

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

आगाँ...

११.

एक दिन भोरे सौंसे गाममे हाक पड़ि रहल छल। भेलैक ई जे मास्टर साहेब अपन घरसँ निपत्ता भए गेल छलाह। काल्हि साँझ धरि तँ कै गोटा हुनका ठामहि देखने रहनि। मुदा राता-राती की भेल? ककरा एहन दुश्मनी भए गेल जे विपत्तिसँ आहत, बौक भेल ओहि व्यक्तिकेँ ओहू हालमे नहि छोड़ि सकल।

मास्टर साहेबक अपन के छलैक? जेहो छलैक सेहो कात भए गेल। जाहि व्यक्तिक सामर्थ्यपर विपत्तिक ग्रहण लागि गेल हो तकर संग के पुरत आओर कथी लेल?

थाना-पुलिसमे के जाइत? ओहिना मास्टर साहेबक नाम आन्दोलनकारी सभक संगे सुमार होइत छल। कतेको तरहक फसादमे हुनकर नाम जाने-अनजाने अबैत रहैत छल। तेहन व्यक्ति हेतु अंग्रेजक पोसल पुलिस किएक किछु करितैक।

असलमे मास्टरक माथा हिल गेल रहैक। पूर्णकालिक बताह भए गेल रहथि। ई कोनो एकाएक भेलैक से बात नहि। क्रमश: होइत एहि परिवर्तनकेँ क्यो बुझि नहि सकलैक आओर एक दिन जखन ओ प्रचण्ड बताह भए गाम छोड़ि कतहुँ चलि गेलाह तँ लोकक चर्चाक विषय भए गेलैक। चर्चेटा, क्यो किछु केलक नहि। मास्टर साहेबक ओहिठाम भेल डकैतीमे, आओर तकर विरोध केलापर परिवारक सदस्यक हत्यामेमोछा ठाकुर गिरोहक हाथ छल। मोछा ठाकुर भने मरि गेल छल वा मारि देल गेल छल मुदा ओकर गिरोह अखनहुँ सक्रिय छल। तूँ डारि-डारि, हम पात-पात से कहब छल डकैतक ओहि गिरोहक। फिरंगीसभ थाकि गेल, किछु नहि कए सकल।

असलमे डकैत बनबाक फैक्ट्री छल ओहिठामक समाज। लोकमे बढ़ैत गरीबी, सामाजिक उत्पीड़न, समाजक सम्पन्न लोकक अत्याचारक प्रतिकार करबामे असमर्थ लोक सभ कतेको बेर एहि रस्ताकेँ अख्तियार करैत छल आओर सदा, सर्वदाक हेतु समाजक मूख्यधारासँ कटि जाइत छल।

एक हिसाबे शासन तंत्र मजगूत भेल शोषक तत्वक संवर्धकबनि कए रहि गेल छल। गाम-घरमे कतेको लोक नर्कक जिनगी जीबैत छल। जखन सेहो सम्भव नहि होइत छल, दिन भरि खटि कए साँझमे बिना बोनि लेने एक छीट्टा गारि-मारि संगे घर धरि धिया-पुता आओर पत्नीकेँ सहैत देखैत छल, तँ सोचल जाए सकैत अछि जे ओकरा मोनमे की-की होइत रहल होएत? कहक माने जे सामाजिक अन्तर्विरोध प्रतिकारक एकटा अभिव्यक्ति छल डकैती। एकरा पाछु आर्थिक विषमता मूल कारण छल। भए सकैए जे मोछा ठाकुरक गिरोहक लोक सभक एही तरहक समस्या रहल हो। मुदाछल ओ सभ देश भक्त। ओहिमे सँ किछु गोटे स्वतंत्रता आन्दोलनसँ रूचि रखैत छल। गाहे-बगाहे जनाधार पार्टीक समर्थक सभक विचारसँ अवगत होइत रहैत छल। मुदा ओकरा सभकेँ ओ रस्ता पसिन नहि छल। क्रान्तिकारी युवक सभसँ ओकरा मेल खाइत छलैक।

ओकर सभक सोच रहैक जे जखन अंग्रेज बलपूर्वक शासन कए रहल अछि तखन ओकरा बलपूर्वक विरोध करब कतहुसँ गलत नहि कहल जा सकैत अछि। से सभ तँ अपना जगहपर जे रहैक से रहैक मुदा कतेको बेर निर्दोष आदमी सेहो ओकर सभक चपेटमे आबि जाइत छल। वएह हाल भेल रहैक पुष्पाक।

पुष्पाक पाछा डकैतक गिरोह एहि लेल पड़ि गेल रहैक जे ओ मोछा ठाकुरक खिलाफ मुखविरी केने रहैक। ओकरा सभक मोछा ठाकुरक प्रति बहुत सम्मान रहैक। मोछा ठाकुर ओकर सभक एक हिसाबे मार्ग दर्शक रहैक, सरगना तँ रहबे करैक।

१

१२.

मोछा ठाकुरक गिरोह हाथ धो कए पुष्पाक पाछु पड़ल छल। ओकरा सभकेँ पता लागल रहैक जे पुष्पा मास्टर साहेबक ओहिठाम अछि, तँ हुनका ओहिठाम ओ सभ चोट केने छल। परिणाम तँ बूझले अछि।

पुष्पा अपने अपसिऑंत छलि। ओकर बेटाक कोनो अता-पता नहि रहैक। पैतृक सम्पत्ति सभटा मोछा ठाकुर हरपि लेने रहैक। यद्यपि आब ओ जीवित नहि छल, मुदा ओकरगिरोहक भय तँ छलहे। तँ क्यो पुष्पाक संगे ठाढ़ होमए हेतु तैयार नहि छल।

पुष्पा गाहे-बगाहे अपन गाम गेबो केली। मुदा ओहिठामक हालत देखि रहि नहि सकलीह। किछु गोटेकेँ हुनकासँ सहानुभूति रहैक। मुदा ओहो सभ डरे चुप्पे रहि गेल। पुष्पा आपस हमरा ओहिठाम आबि गेलीह।

पुष्पा अपन सम्पत्ति आपस प्राप्त करबाक हेतु चिन्तित रहैत छलि। मुदा ओहूसँ बेसी चिन्ता ओकरा अपन एकमात्र बेटाक छलैक जकर कोनो अता-पता नहि चलि सकलैक। जीवितो छै की नहि, सेहो नहि पता। पुष्पाकेँ विश्वास रहैक जे ओकर बेटा सलामत छैक। कतए छैक, कोना छै की करैत छैक से तँ नहि जनैत रहैक मुदा माएक हृदय बेरि-बेरि कहि उठैत जे ओ जिबैत छै। से सोचि कए ओ आओर अहुरिआ काटए लगैत छलि। कखनो अपनापर, कखनो भाग्यपर तामस होइत छलैक। समाधान किछु फुराइत नहि छलैक। ओकरा एहि बातक सन्तोख छलैक जे मोछा ठाकुरक ठेकान लागि गेलैक। एहि बातक ओकरा कनिको पश्चाताप नहि रहैक जे ओ मोछा ठाकुरक लहास देखि केना ताण्डव केने छलि। अपितु ओकर हृदयमे तेहन धधरा अखनो उठैत छलैक जे गामक गाम सुड्डाह भए जाइत।

ओकर आँखिक प्रचण्ड ज्वाला क्यो देखि नहि पबैत छलैक। ओकर अन्तर्मनक अशान्ति समुद्र जकाँ अथाह छलैक मुदा कहिओ ने कहिओ ज्वार भाटा तँ अएनहि छलैक, से अएलैक।

ओहि दिन दुपहरिआमे पुष्पा असगरे असोरापर बैसलि छलि। एकाएक जेना ओकरा घुरमा उठलैक। ओ भागए लागलि। कतबो क्यो प्रयास केलकै, ओ नहि रुकल। ततेक बेगसँ ओ आगा बढ़ल जे ककरो हाक धरि देबाक हिम्मति नहि भेलैक। पुष्पा भगैत गेली, अविराम।

बाप रे बाप! ई के छै?एना किएक दौड़ि रहल अछि? जैह देखलक से देखिते रहि गेल। अबाक, शून्य भेल देखैत रहि गेल। भगैत-भगैत एकटा पूलपर जा कए जोर-जोरसँ अट्टाहास करए। पगला मास्टरकेँ पुलपर गाँधी टोपी पहिरने देखिते चिचिआ उठल-

"फेक एहि टोपीकेँ!एहिसँ किछु नहि हेतौ। पकड़ ई दबिला...।"पता नहि की-की चिकरैत रहल। असगरि हाथमे दबिला लेने ओ मास्टर दिस बढ़लि।

"हे भगवान!आब की होएत? की भए गेलैक एहि बुढ़ियाकेँ केहन बढ़िआँ संच-मंच रहैत छलैक। आइ तँ ककरोचिन्हओ नहि रहल छैक।"

अबैत-जाइत लोक बजैक। जाधरि ओ पूलपर ठाढ़ि रहलि, लोक ओ रस्ता छोड़ि कात भए गेल। छगुन्तासँ देखैत रहल। पूलक ओहि छोरपर पागल भेल मास्टर आओर ओहि छोरपर दबिला लेने पुष्पा।

कहीं पुष्पा मास्टरक हत्या नहि कए दैक। कहीं मास्टर आत्म रक्षार्थ पुष्पाक दबिला ओकरेपर ने चला दैक। लोक सभ बेचैन छल मुदा किछु कए नहि पाबि रहल छल।

पुष्पाक रक्त रंजित नेत्रमे मुण्डसँ आच्दादित कालीक दर्शन होइत छल। पुष्पा आगा बढ़ल जा रहल छलि। मास्टर एकटक ओकरा देखैत रहल। ओकरा भेलैक जेना असुर भयाविनी समस्त दुष्टक संहार कए मुण्डमाल धारण केने ओहिठाम सद्यः उपस्थित भए गेल छथि।

मास्टरक आवेग देखैत बनैत छल। ओ वायुवेगसँ दौड़ल। पुष्पाक आगा धराम दए दण्डवत खसि पड़ल। आओर करवद्ध प्रार्थनाकरैतरहल-

"या देवी सर्वभूतेषू शान्ति रूपेण संस्थिता।नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥"

एहि दृष्यकेँ क्यो देखलक, क्यो नहि देखलक। जे नहि देखलक से सभ की-की नहि सुनलक। जे देखलक से की-की नहि बजलक। क्यो कहैक साक्षात् काली सवार भए गेल छथि। क्यो कहैक जे ओ निट्ठाह बताहि भए गेल अछि। जतेक मनुखक, ततेक रंगक गप्प।

पुष्पा मास्टरकेँ धाराशायी देखैत जेना विचारमग्न भए गेलि। फेर जोरसँ अट्टाहास करए लागलि-

"तोँ के छह?टोपीबला एहन भाभट किएक धेने छैं? अपन असली रूपमे आबिजो नहि तँ चला देबौ दबिला।"

ओ सचमुच दबिला आगा बढ़ौने छलि कि घोड़ापर सवार एकटा युवक ओकर हाथ पकड़ि लेलक।ओहि घुड़सबारक पाछा-पाछा पाँचटा आओर घुड़सबार चलि रहल छल। ओसभ बेहद मजगूत छल। सभ गोटे अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित छल। बीच-बीचमे "बन्दे मातरम्" केर जयघोष करैत आगा बढ़ि रहल छल कि पुलक बीचमे एहन दुर्दान्त दृष्य देखि ठमकि गेल। पुष्पाक हाथ संधानसँ पकड़ि ओ घुड़सबार घोड़ासँ उतरिगेल। पुष्पा ओकरा देखिते चिकरि उठलैक-

"के?"

"हम छीराज कुमार, तोहर बेटा!"

"नहि, नहि तोँ राज कुमार नहि छैं। क्यो छली हमर बेटाक नाम लए हमरा धोखा देबए चाहैत छैं।"

कतबो राज कुमार बुझाबक प्रयास करैक ओ मानए हेतु तैयार नहि छल। कतेको दिनसँ अपन बेटाक प्रतीक्षामे छलि आओर आइ जखन ओ सद्यः अकस्मात ओकरा सम्मुख ठाढ़ छैक तँ पुष्पाक मति-गति सभ हरा गेल अछि। मुदा राज कुमार अपन माएकेँ चिन्हि गेलैक। अनमन ओकरे सन माएक मुँह छलैक। ओ माएकेँ गोहरबैत रहल। पुष्पा किन्नहुँमानबाक हेतु तैयार नहि छलैक। ओकर आँखि अखनहुँ रक्त रंजित छलैक। हाथमे दबिला ओहिना छलैक, मुदा पैर ठमकि गेल छलैक। प्रायः अन्तर्मनसँ कोनो ध्वनि ओकरा सुनाइत छलैक-

"ई तँ हमरे बेटा अछि।"

माएक ई दशा देखि राज कुमार के तँ जेना बज्र खसि पड़लैक। ओना, ओकरा कोनो उमीद नहि रहैक जे ओकर माए जीवित होएत। ओकरा अपनो जीवित रहबाक कोनो सम्भावना नहि रहैक मुदा कहबी छैक जे मारए-बलासँ जियाबए-बलाक हाथ बेसी नमगर होइत छैक।

गामसँ अपहरणकए लए जाइत काल मोछा ठाकुर ओकरा बीचमे पड़ैत धारमे धकलि देलकै। अन्हार गुज्ज रातिमे उफनैत धारक प्रवाहमे ओ भसिआइत-भसिआइत काशी पहुँच गेल। ओहिठाम मलाह सभ महाजाल फेकने छल।

ओहि महाजालमे ओ फँसि गेल। मलाह सभकेँ बहुत पैघ माँछकेँ फँसि जेबाक ततेक प्रशन्नता छलैक जे ओ सभ धराधर जाल खींचए लागल। मुदा जखन ओहि महाजालमे पाँच हाथक बेहोश मनुक्ख भेटलैक तँ ओ सभ गुम्म रहि गेल। क्यो कहैक जे मुर्दा छैक, फेरसँ दहा दही।

मुदा एकटा बुढ़बा मलाह डाक्टर बजा अनलकै। डाक्टर गौर केलक तँ साँस चलैत बुझेलैक। ओ इएह ले वएह ले राज कुमारकेँ अस्पताल लए भागल। धन्न कही ओकर प्रयासकेँ आओर राज कुमारक भाग्यकेँ। तीन दिनक बाद ओ आँखि खोललकै। आगा-पाछा क्यो ओकर देखनिहार नहि छल। दस दिनक लगातार इलाजक बाद ओकर जान तँ बाचि गेल मुदा समस्या छल जे आब ओ जाए तँ कतए।

संयोगवश अस्पतालमे एकटा क्रान्तिकारी गुटक युवकक इलाज चलि रहल छल। ओकर बेड सीट अगले बगल छल। इलाजक क्रममे ओकरा राज कुमारक स्थितिक जानकारी भेलैक। ओ एहि बातक चर्च अपन संगी-साथी सभसँ केलक। सभ गोटे ई निर्णय केलक जे राज कुमारकेँ अपने संगे नेने चली।

दोसर दिन भने राज कुमार आओर ओकर अस्पतालक पड़ोसी संगे संग अस्पतालसँ छुट्टी पाबि अज्ञात स्थान दिस विदा भए गेल। राज कुमार लग कोनो दोसर विकल्पो नहि रहैक।

q

१३.

एमहर हमर ससुर अपन एक मात्र संतानक बिआह, कोजगराक बाद दुरागमनक प्रतीक्षामे नित्य महादेवकेँ गोहरबैत रहैत छलाह। हमर सासुक स्थिति तँ आओर खराप छलनि। एक-एकदिन गनि रहल छली। एहि बातक किछु संज्ञान नहि रहलनि जे हम मात्र १२ बर्खक छलहुँ। एतेक छोट नेनाकेँ माएक कोरसँ फराक करब अन्याय होएत। ओतबे नहि, हमर माए एकदम एसगरि भए जाएत।

सभ अपने अपने समस्यासँ फिरसान छल। ककर के सुनत? हमर सासुकेँ सेहो किओ दोसर नहि छलनि। पुतहु आबि जएबाक उमीदमे कतेको दिनसँ जीबि रहल छलीह।

आखिर ओ समय आबिए गेल। हमर ससुर हमर नैहरमे हठ कए देलखिन। हमर पित्ती बड़ कानल। ओ कि कनलाह, कानल तँ हमर माए। एक मात्र संतानक वियोगक अवश्यभावी आशंकासँ क्षत-विक्षत अन्तर्मन हाकरोस पाड़ि रहल छल। कखनहुँ कानए, कखनहुँ चिकरए, भोकरए। हमर ससुर अड़ि गेल छलाह। ओहिसँ पूर्व दू बेर दिन फेरा गेल छल।

भोरसँ साँझ-धरि कन्नारोहटि होइत रहैत। जखन कखनो खाएक अबैत, तखन कनबाक नवीन श्रृंखला प्रारम्भ होइत। माएक हाल बेहाल छल। ओकर जन्म तँ जेना कानए हेतु भेल रहैक। जखने भरल जवानीमे हमर बाप गुजरि गेलखिन तखने ओकर सर्वस्व चलि गेलैक। सुखकछाँहो कतहुसँ नहि रहि गेलैक।

हमर जन्मसँ जे कनेक आशा जगओलक सेहो आब हटि रहल छल। उपायो की छल? आखरि बेटी भए जन्म लेने छलिऐक। जँ भागक तेजगर रहैत तँ हम बेटा भए आएल रहितहुँ। ओतेकटा राज-काजक मालिक होइतहुँ, माए-बापक वंशक रक्षा कए सकितहुँ। मुदा एहिमे हमर की दोख?

भगवानो मानव निर्मित एहि देबारकेँ नहि तोड़ि सकैत छलाह। जनमिते दू रंगक दुनियाँ, दू रंगक रेबाज, दूरंगक कानून। आश्चर्य ई जे ओ सभ अन्याय देखितहुँ चुप रहैत छथि। सभ किछु जनितहुँ अनजान बनल रहैत छथि। द्विरागमन हेबाक छलैक से भए गेल। ओहि समय हम तेरह बर्खक बच्चा रही। बेसी चीज बुझबे नहि कएलिऐक। नैहरसँ सासुर पहुँच गेलहुँ। हमर सासुक आनन्दक तँ अन्ते नहि छल। गाम-गाम बैन बँटैत रहि गेलीह। क्यो खाली हाथ नहि गेल। गीत-नादसँ तँ समस्त वातावरण कतेको दिन धरि आनन्दक बर्खा करैत रहल।

हमरा सासुरमे ततेक मानदान भेल, सासु ततेक ध्यान राखए लगलीह जे सभ बिसराए गेल। कखनो काल कए माएक उचाट जखन आबए, तँ कनाइत जरूर। से सुनि हमर ससुर हंगामा ठाढ़ कए देथि।

“कोनो कष्ट नहि होनि हिनका।”

सासु, ससुरक एहन सिनेह भगवान सभकेँ देथु।

मुदा हमर नैहर तँ हराए गेल छल। माएसँ भेँट होएब दुर्लभ भए गेल छल। अपन स्कूलक संगी सभ मोन पड़ैत रहैत छल। एक दिन हमर नैहरसँ खबासिन आएल। हमर माएकेँ बहुत मोन पड़ैत छलिऐक, तँ जिज्ञासा हेतु, पठओलकै। खबासिनीसँ बहुत रास पता लागल। ईहो बुझलिऐक जे स्कूल खसि पड़लैक, जे मास्टर पागल भए गेलैक। आओर-आओर कतेको समाचार सभ भेटल।

q

१४.

मास्टर साहेबक समाचार सुनि हम छगुन्तामे पड़ि गेल रही। रहि-रहि कए खबासिनीसँ हुनका बारेमे प्रश्न करैत रहलिऐक। मुदा किछु समीचीन उत्तर नहि भेटए। आखिर एहन सोझराएल सरल एवम् समाजिक लोकक ई स्थिति कोना भेल?

पुष्पा कोना दहाड़ि कए मास्टरक गाँधी टोपी खसौलक, कोना मास्टर ओकर पैरपर खसि पड़ल से सुनि तँ छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। ई सभ तँ कोनो खिस्सासँ बेसी चोटगर लगैत छल। जाबे ओ खबासिनी रहल हम ओकरा एहि बातसभकेँ खोद-बेद करैत रहलहुँ।

खबासिनी आपस गाम आएलि। गामक रस्तेमे मास्टर देखा गेलैक। नंग धरंग, आधा धोती ओढ़ने, आधा पहिरने। कखनहुँ उजरा टोपी माथपर, कखनहुँ जमीनपर। बानरबला हाल भए गेल रहनि। ताहिपर सँ रहि-रहि कए भाषण करए लागथि।

महात्मा गाँधी, तिलक, गोखलेककर, ककर नाम लए जोर-जोरसँ भाषण करैत रहैत छल। जेना सौंसे स्वतंत्रता आन्दोलनक छार-भार ओकरे माथपर होइक। महात्मा गांधीक नाम लए ओ कै बेर उत्तेजित भए जाइत छल। ओकर भाषण सुनि क्यो छगुन्तामे पड़ि जाइत। कतहुसँ कोनो दुबिधा नहि बुझाइक। लगैक जेना ककरो आत्मा ओकरामे घुसिया गेल होइक। कनीकाल भाषण देलाक बाद फेर वएह ताल-पैतरा शुरू कए दितथि। एक दिन तँ दौड़ल-दौड़ल स्कूलक खसल टाट सभकेँ सोझ करए लागल। हाथमे छड़ी लए जोर-जोरसँ चटिआ सभपर बिगड़ए लागल-

"पढ़बे करोगे कि मरबो करोगे।"

मुदा ने ओतए कोनो चटिआ छल आओर ने क्यो मास्टर।

"निट्ठाह बता भए गेलाह।"

सभ सएह कहैत आगू बढ़ि जाइत।

ओहि दिन स्कूलक सामनेक मैदानमे स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल जनाधार पार्टीक नेताक आगमन रहैक। ध्वनिविस्तारकसँ गाम-गाम लोक सभकेँ बैसारमे अएबाक हकार देल गेल। चारि बजेसँ बैसार रहैक। स्वतंत्रताक हेतु लोकक मोन छटपट करैत छल। तेँ लोकक करमान लागि गेल। बैसार शुरू हेबाक छल। जनाधार पार्टीक टोपीधारी नेता सभ आबि चुकल छल। "बन्दे मातरम्" केर नारा लागि रहल छल। सम्पूर्ण वातावरण देश भक्तिक गीतसँ ओत-प्रोत भए गेल छल।

एतबेमे मास्टर एकटा छोटसन माइक हाथमे लेने जोर-जोरसँ बाजए लागल।

"जनाधार पार्टी मात्र ढोंगीक जमावरा अछि। समाजमे चारूकात अन्याय पसरल अछि। स्त्री समाज अधिकार हीन भए नाना प्रकारसँ शोषित भए रहल अछि। की होएत एहेन स्वतंत्रता लए कए, जतए आधा आवादी अशिक्षित, अधिकारहीन भए सदिखन अपन अधिकारक हेतु लड़ैत रहितहुँ अनाथ रहैत अछि?"

जनाधार पार्टीक नेता सभ ओहि विक्षिप्त व्यक्तिक भाषण सुनि गुम्म पड़ि गेलाह। लोक सभकेँ ठकविदरो लागि गेलैक। आपसमे कानाफूसी प्रारम्भ भए गेल।

"ई किन्नहुँबताह नहि अछि।"

मास्टर जे माइक पकड़लक से पकड़ने रहि गेल। चुप्प हेबाक नामे ने लिअए। बैसारक आयोजक सभक सभ प्रयास व्यर्थ साबित भए रहल छल। मास्टर अड़ि गेल छल जे जाधरि स्कूल फेरसँ नहि बनत ओ चुप नहि होएत। किन्नहुँ बैसार नहि होमए देत।

एतबहिमे चारिटा मुस्टंड कतहुँसँ आएल। सभ मोछ पिजा रहल छल। ''जनाधार पार्टीक जय''क नारा संग आगा बढ़ल आओर मास्टरक माइक छीनि लेलक। किओ ओकर नरेठी पकड़लक तँ किओ ठामहि उठा कए लए भागल। बैसार चलि पड़ल। क्रान्तिकारी सभक अपन सोच छलैक। ओ सभ प्रगतिशील मंचक नामसँ काज करैत छल। ओकर सभक कहब छलैक जे स्वतंत्रतासँ बेसी जरूरी अछि सामाजिक परिवर्तन। ओ सभ कहैत छल जे राजनीतिक स्वतंत्रता जँ भेटिओ गेल, तैओ गरीब, महिला ओ अन्य शोषित वर्गक उद्धार ताधरि नहि होएत, जाबे शोषक व्यक्ति समूल नाश नहि होएत, ताहि हेतु चाहे भले किछु अनट करए पड़ैक। तकर पाछा ओकर सभक अपन सोच छलैक। आखिर राजनीतिक सत्ता अपन वर्चस्वक स्थापना हेतु बलप्रयोगक तँ करिते अछि। सही की से तँ भविष्यक बात रहैक मुदा ओकरो समर्थक छलैक। युवक पुरुष ओ स्त्री सभ ओकर संग छल। फिरंगीसभ हाथ धो कए ओकर सभक पाछा पड़ल रहैत छलैक।

क्रान्तिकारी कही, प्रगतिशील मंचक कार्यकर्ता कही, ओ सभ अपन उद्देश्यक हेतु किछु करबाक हेतु कृत संकल्प छल। दिन-राति गबैत रहैत छल-

''सरफरोशी की तमन्ना, आज मेरे दिलमे है।

देखना है जोर कितना बाजुए कातिलमे है।''

जनाधार पार्टीक लठैत सभ मास्टरकेँ उठा-पुठा कए कात केनहि छल कि बैसार स्थलपर घोड़ापर चढ़ल दन-दन करैत प्रगतिशील मंचक युवक लोकनि हबाइ फाइरींग करैत पता नहि कतएसँ टपकि पड़ल। बैसारमे पड़ाहि लागि गेल। कनीकालमे पूरा मैदान खाली छल। सैंकड़ोक चप्पल, जुता, यत्र-तत्र खसल छल।

प्रगतिशील मंचक युवक आगा बढ़ल। जनाधार पार्टीक मंचासीन नेता सभकेँ चुनौती दैत फेर हबाइ फाइरींग केलक। नेता सभ इएह ले वएह ले जान लए लए भागल। मुस्टंड सभक हालत तँ कहए जोगर नहि रहि गेल छल। किछु पैसाक चक्करमे ओ सभ अपन आत्माकेँ बेचि चुकल छल।

प्रगतिशील मंचक युवकमे एकटा छल राज कुमार जे किछु दिन अपन विक्षिप्त माएकेँ पुलपर सँ लए भागल छल। आइ मास्टर साहेबकेँ ओही हालमे देख ओकरा नहि रहल गेलैक। ओ चिकरि उठल। ततेक जोरसँ चिकड़ल जे लगलैक कोनो बम बिस्फोट भए गेल होइक। ओ मोचण्ड सभ जान लए भागल से घुरि नहि तकलक। राज कुमार मास्टर साहेबकेँ घोड़ापर बैसओलक आओर अपन संगी सभक संगे आगू बढ़ि गेल।

ओहि दिनक घटनाक चर्चा कतेको दिन धरि परिपट्टामे होइत रहलैक। क्यो कहैक जे जनाधार पार्टीक विचार सही अछि तँ क्यो 'प्रगतिशील मंच'क समर्थक भए जाइक। कुल मिला कए एकटा जबरदस्त वैचारिक संघर्षक वातावरण बनि गेल छल।

प्रगतिशील मंचमे आधासँ बेसी महिला सभ छलैक। कतहु-ने-कतहु कोनो अन्यायक प्रतिकार नहि हेबाक कारणेँ विद्रोही स्वभावक भए गेल छलैक। अधिकांश महिला गरीब परिवेशसँ अबैत छलि मुदा सम्पन्न परिवारक लोक सेहो छलीह। एकटा महिला तँ श्मसान घाटसँ प्राण बचा भागल रहैक। समाजक अत्याचारक पराकाष्ठा

तँ तखन भए गेलैक जखन ओकरा जबरदस्ती ओ अनिक्षापूर्वक सती करबाक हेतु श्मसान घाट धरि पहुँचा अएलैक। मुदा की ने की भेलैक जे ओ जान-बेजान भगलैक। से तेहन भगलैक जे घुरि नहि तकलकै। एहन जान-बेजान भगैत महिलाकेँ क्यो प्रगतिशील मंचक कार्यकर्ता देखलकै। ओकरा मंचक डेरापर लए अनलकै। बचि गेलै। सम्भवत: ओकरा जीनाइ छलैक। मुदा कतेको लोक सतीक नामपर जीविते डाहि देल गेल। जेकरा संगे से नहि भेलैक ओहो जीवन भरि वैधव्यक पीड़ा सहैत रहली। नाना प्रकारक यातना, अपमान सहैत चल गेली। यद्यपि सभ पुरुष कोनो-ने-कोनो स्त्रीक कोखसँ जनमैत अछि, तथापि ओकर आस्तित्वपर ग्रहण लागल रहैत अछि।

एहि सभ तरहक अन्यायक सामाजिक प्रतिकार करए चाहैत छल प्रगतिशील मंच। मुदा सभसँ बड़का समस्या रहैक अर्थक व्यवस्था। ताहि हेतु ओकरा सभकेँ कै बेर गैरकानूनी तरीका अख्तियार करए पड़ैक। ओही क्रममे ओकरा सभक भेँट-घाँट समाजकक प्रगतिशील लोक सभसँ होइक मुदा प्रगतिशील मंचक सोचसँ कमे लोक सहमत होइक तथापि जानक डरे किछु-ने-किछु चन्दा दए दैक।

q

१५.

साल भरिक बाद हमर विदागरी भेल। नैहरमे माए हमरा देखिते ततेक कानए लागलि जे सौंसे गामक स्त्रीगण सभ जमा भए गेलैक। हमरो बहुत कनाए लागल। लोक सभ ओकरा बुझौलक। कन्ना-रोहटि बन्द भेलाक बाद हमर हाल-चाल पुछए लागलि। सासुरमे हमरा सभ तरहेँ सुख छल से जानि माएकेँ बहुत प्रशन्नता भेलैक। लोक सभमे बैन बाँटल गेल। सभ अपन-अपन घर गेल।

हम अपन संगी सभक हाल-चाल पुछलिऐक। माए सभकेँ समाद देलकै। बेरा-बेरी सभ आबि कए हमर भेँट कए गेल। मुदा मास्टर साहेबक किछु समाचार नहि भेटए। सभ एतबे कहलक जे ओ बताह भए गेल छथि। आब कतए छथि, कोन हालमे छथि से निजगुत बात क्यो नहि कहि सकल।

पुष्पाक समाचार सेहो ओतबे बुझलिऐक जे ओ आब एहिठामसँ पता नहि कतए चल गेल। ओकर उग्र व्यवहारक चर्चा सेहो लोक केलक मुदा फिलहाल कोन ठाम अछि, ओकर की हाल छैक, से क्यो नहि कहि सकल।

अपन गाम अपने होइत छैक। लोक-बेद, खेत-पथार, पोखरि-इनार सभसँ अपनत्व भए जाइत छैक। ताहि सभकेँ एकाएक छोड़ि बेटी सासुर जा बसैत अछि। छैक ने मार्मिक बात? हमर तँ बाते अलग रहैक। नान्हिटा बच्चाक बिआह कए हमर पित्ती निश्चिंत भए गेलाह। मुदा हमर नेन्ना तँ हरा गेल। नैहरसँ सासुरक रस्तामे हम स्वयं किछु आओर भए गेल रही।बएसतँ ततबे रहए जे माएक आँचरसँ बाहर भए दरबाजा धरि जा सकितहुँ, खेलितहुँ, धुपितहुँ। मुदा भाग्य नियंताकेँ से मंजूरो होइक तखन ने? साल भरिक बाद नैहर आएल रही। अपन संगी, साथी सभ एक-एक कए भेँट भेल। तरह-तरहक खिस्सा पिहानी सभ सुनैत-सुनैत दिन

बीति जाइक। साँझ होइते माए घर लए आनथि। दिन भरि जतेक घुमि सकी, जतेक गोटेसँ भेँट भए सकए से करी। ताहिमे कोनो रूकाबट नहि।

एक दिन सभ बच्चा संगोर कए स्कूल पहुँचलहुँ। टूटल, ढनमनाएल माटिक देबार सभ अवशेष पड़ल छल। एकटा विद्यार्थी नहि। क्यो मास्टर नहि। हमर सभक प्रिय मास्टर तँ बताहे भए गेल रहथि। हम बच्चा रही, मुदा अखियास अपन बएसक संगतुरिआ सभसँ बहुत बेसी छल। अपने बएसक पितिऔत सभकेँ स्कूल जाइत देखिऐक, खेलैत देखिऐक, अपने आपमे ग्लानि होमए लागैत। भगवानकेँ मोने-मोन उपराग देबए लगिअनि-

“हे विधाता!हमर कोन कसूर। अहाँ हमरा पुरुष बनबितहुँ तँ आइ हम अपन माए, बापक वारिस रहितहुँ। अपन घर-घराड़ी, खेत-पथार सभक रक्षा कए सकितहुँ। मात्र बेटी हेबाक चलते हमर सभ किछु स्वाहा भए गेल। हाथ मलिते रहि गेल हमर माए। दियाद- बाद सभटा लूटि लेलक।”

बात एतबेपर नहि ठहरल। आगा कोनो फिरसानी नहि होइक, तँ जल्दीसँ बिआह-दान करए निश्चिन्त भए गेल। बाह रे समाज। केहन-केहन कानून बना लेलक। अपने लोक जखन शत्रु भए जाइछ तँ रक्षा के करत? सएह सभ सोचैत रही कि हमर संगी सभ आबि गेल आओर हम खेल-धूपमे लागि गेलहुँ।

बहुत दिनक बाद एतेक रास बच्चा सभक संगे उन्मुक्त भए खेलेबाक अवसर प्राप्त भेल छल। तँ जी-जानसँ खेल-धूपमे लागि जाइ। दुपहरिआ खसिते तरह-तरहक खेल-धूप शुरू भए जाइत। आस-पासक बच्चा सभ जमा होइत आओर तेहन धमाचौकड़ी होइत जकर कोनो अन्त नहि। बेसी हल्ला सुनि कै बेर हमर पित्ती चिकरि उठितथि मुदा हमरा देखिते सकदम भए जैतथि। कतहु-ने-कतहु मोनमे ग्लानि होमए लगितनि। “एतेक कम बएसमे सासुर बसैत छैक। कनीक दिन लेल अएलैक अछि। फेर सासुर चलि जाएत। कहिआ आओत, नहि आओत...।” से सभ सोचि ओ गुम्म पड़ि जाइत छलाह। अबाक रहि जाइत छलाह।

ओहि दिन साँझमे गबैआ आएल छल। सौंसे गामक लोक ओकर गीत-नादक आनन्द लए रहल छल। नचारी, भगवती गीतसँ प्रारम्भ कए विद्यापतिक कतेको गीत गओलक। धिया-पुताक संगे हमहूँ कतेक आनन्दित रही। मुदा हमर माए सोगाएल, असगरे घरेमे पड़ल रहथि, कारण हमर विदागरीक दिन मनबए सासुरसँ क्यो आबि गेल छल।

२

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

उपन्यास- हमर गाम

1. हमरो गाम मिथिले मे छै

हम कोनो पढ़ल-लिखल लोक नहि छी, अपितु यदि कहियै जे हमरा गाममे एकटा कँ छोड़ि कियो पढ़ल लिखल नहि अछि तऽबेसी उचित होएत। घीच-घाँचि कए कहुना दशमा पास केलहुँ आ चल गेलहुँ दिल्ली रोजगारक खोजमे। शुरुएमे बुझा गेल जे एतए अपनाकँ दशमा पास कहलासँ लाभ नहि नोकसाने अछि तें एहि बातकँ नुका रखलहुँ आ जे काज हाथमे आएल से धरैत करैत गेलहुँ। अवसर देखैत काज छोड़ैत पकड़ैत कहुना दस साल बाद लगलहुँ टेम्पू चलबए। ताबत गाम दिश सेहो सड़क सब सुधरि रहल छलैक, फोर-लेन बनब शुरू भऽगेल रहै तऽसोचलहुँ जे गामे घुरि चली, ओतहि टेम्पू चलाएब। कने कमो कमाइ हैत तऽबेसिए लागत कारण गाममे कमसँ कम दिल्लीक सड़लाहा बसातसँ त्राण भेटत। कतबो किछु महग होउ, गाममे एखनहु बसात साफे छैक आ फ्री सेहो कारण एखन तक ओहिपर कोनो मालिक हक नहि जतौलक अछि।

हमर नीक कि खराप लति बूझू एतबे जे भोरमे तीन टाकाक एकटा अखबार कीन लैत छी आ टेम्पूपर जखन बैसल रहैत छी तखन ओकरा पढ़ैत रहैत छी। एक दिन एहने अखबारमे पढ़ल जे मिथिलामे नवका चलन एलैक अछि अपना अपना गामक महान विभूतिक वर्णन करैत किताब लिखब। किछु एहने किताब बजारसँ कीन अनलहुँ। देखलहुँतऽहर्षो भेल आ ताहिसँ बेसी इर्ष्यो आ ग्लानि भेल। हर्ष एहि लऽकए जे पहिल बेर बुझलहुँ मिथिलामे एहन महान विभूति सब भेलाह आ इर्ष्या आ ग्लानि एहि लेल जे हमरा अपन गाममे एहन कोनो विभूति किएक नहि भेलाह।

हमरा चिन्ता भेल- की सत्ते हमरा गाम मे कोनो विभूति नहि भेला? किछु बूढ़ पुरान सँ गप कएल। एक गोटे पूछि देलनि-

"खाली पढ़ले लीखल लोक विभूति होइ छै की?"

हम सोचए लगलहुं। ठीके, से रहितै तऽ सिनेमा स्टार आ कि खिलाड़ी सब कें कियो चिन्हबे नहि करितै। हमरा बुझा गेल जे आन गामक विभूति सन तऽ नहि,तैयो एतेक जरूर जे हमरा गामक विभूति सब एक हिसाबें कतबो विचित्र रहथु मुदा ओहो लोकनि अपना समय मे गामक नाम कोनो तरहें उजागर करबे केलनि ।

सेहन्ता भेल जे हमहूँ अपना गामक बारेमे किछु लीखी। मुदा की लीखब? लिखबाक लुरियो तऽनहि भेल। तैयो हम ठानि लेल जे लिखबे करब। विभूति लोकनि जे छलाह, जेहन छलाह, भेलाह तऽमिथिलेक सुपुत्र/सुपुत्री ने। आ हमरो गाम जेहने अछि, अछि तऽओही माटिपर कमला बलान कोशीसँ घेराएल, रौदी दाही भोगैत अशिक्षा आ गरीबीमे उबडुब करैत। तें हम निश्चय कएल जे हिनका लोकनिक कीर्तिक गाथा लीखल जाए।एखुनका युगे विज्ञापन आ प्रचारक छिऐ, से गामक नुकाएल छिड़िआएल रत्न सबकें बहार करबाक चाही। हम गौआँ भऽकए यदि नहि लिखबनि तऽअनगौआँकँ कोन मतलब छैक?

ओना तऽलिस्ट पैघ बनि गेल मुदा हम बहुत पुरान लोककेँ पहिने छाँटि कए मात्र दसटाक वर्णन एतए प्रस्तुत करए जा रहल छी। एहिमे पहिल नौटा छथि हमरा गामक नवरत्न आ दसम भेलाह विशिष्ट अतिथि रत्न। आशा करैत छी गौआँ लोकनि हमर एहि प्रयासक प्रशंसा करबे करताह। यदि किछु अनगौआँ मैथिल समाजकेँ हमर गामक एको गोटेक कीर्ति नीक लगलनि तऽहमर प्रयास खूबे सफल बूझल जाएत। नहि तऽकमसँ कम किछु लिखित तऽरहिए जाएत जे एखनुक बूढ़ पुरानक दिवंगत भऽगेलाक बाद नवका पुस्तकेँ पूर्वजक यशक किछु ज्ञान देतैक।

हमर लिखल वस्तु सबकेँ मटिकोरबा गामक मिडिल स्कूलक हेडमास्टर साहेब बहुत कटलनि छँटलनि आ शुद्ध केलनि ताहि लेल हुनका बहुत धन्यवाद। बिना हुनकर सहयोग के ई अपने सबकेँ पढ़बा योग्य नहिए भेल रहैत।हम अपना गामक विभूतिक फोटो नहि छापि रहल छी। एकर कारण अपने सब पूरा पुस्तक पढ़लाक बाद बुझिए जेबैक।

विनीत

रामलाल परदेशी

(गामक एक उत्साही युवक)

गाम : खकपतिया

डाकघर:मटिकोरबा

जिला : मधुबनी ।

2. बीए

मूल नाम: राम किसुन सिंह

पिताक नाम: अजब लाल महतो

जन्म तिथि: 1 जनवरी 1940। ई हुनकर सर्टिफिकेटमे लिखल छनि, मुदा हुनक पिताक अनुसार ओ तीन चारि बरख जेठ जरूरे छथि। जखन ओ मटिकोरबा गामक मिडिल स्कूलमे नाम लिखौलनि तऽहेडमास्टरकेँ जे बूझि पड़लै से लीख देलकै। हुनकर जन्म तऽभरदुतिया दिन भेल छलनि।

शिक्षा: यथा नाम, माने ओ बी.ए. पास छथि। ओ गौरवसँ एखनहुँ लोककेँ सुनबै छथिन जे मैट्रिक, आइ.ए. आ बी.ए.मे लगातार ओ तृतीय श्रेणीमे पास केलनि। संगहि मैट्रिकमे दू बेर, आइ.ए.मे तीन बेर आ बी.ए.मे चारि बेर फेल केलनि।

उपलब्धि: हुनक सबसँ पैघ उपलब्धि छनि हमरा गामक पहिल आ एखन तक के अन्तिम ग्रेजुएट भेनाइ। पछिला करीब पचास बरखसँ एहि रेकॉर्डकेँ पकड़ने छथि। ओहू पुरान जमानामे ग्रेजुएट भैयो कए हुनका जखन दस साल तक कतहु नोकरी नहि भेलनि तखन ओ हारि कए पुस्तैनी काज, खेती,मे लागि गेलाह।

एहन नहि जे सत्ते कतहु नोकरी नहि भेलनि। पुर्णियामे एक ठाम हाइ स्कूलमे अध्यापक भेलाह मुदा पहिले दिनक हिनक पढ़ाइ देखि कए ओतुका विद्यार्थी सबकेँ हिनक योग्यताक बेस अन्दाज लागि गेलैक आ ओ सब हड़तालपर बैसि गेल। एमहर साँझमे हिनका जे मच्छर कटलक से बोखार भऽगेलनि। दोसर दिन स्कूल जाइ के काजे नहि पड़लनि। कहुना एक हप्तापर गाम घुरि एलाह। विद्यार्थी सबकेँ विचारल बात विचारले रहि गेलैक। फेर दोसर बेर एहन योग्य शिक्षकसँ भेँट नहिए भेलनि हुनका सबकेँ।

स्वस्थ भेलाक बाद ओ नियारलनि जे मास्टरी हुनका बुते पार नहि लगतनि। चल गेलाह कलकत्ता भाग अजमबै लेल।कलकत्तामे एखनहु बीए पैघ योग्यता बूझल जाइत छलैक। ओना जाहि समय बीए बीए केलनि ताहि समय बिहारक परीक्षा पद्धतिक चर्चा आन आन ठाम शुरू भऽगेल छलैक आ किछु लोक बिहारी बीएकेँ ओकर उचित हक देबा लेल तैयार नहि छल। कलकत्तामे मटिकोरबा गामक एक गोटे कोनो सेठक ड्राइवर छल। ओ हिनक पैरवी केलक सेठ लग। किछु बेसिए बढ़ा चढ़ा कए कहि देलकै सेठकेँ। फल ई भेल जे सेठ हिनका बिना कोनो पूछताछ के अपना गद्दीपर मनेजर बना देलकनि। ई बहुत खुसी भेलाह।

मुदा भाग्यकेँ किछु दोसरे रस्ता देखेबाक छलैक। तेसर दिन सेठक एकटा मित्र आबि गेल आ ओकरा अनुपस्थितिमे ओहिना हिनका संग गपसप करए लागल। ओकरा मोनमे कोनो दुर्भाव नहि छलैक मुदा समस्या छल घेघ कतहु नुकाएल रहए ! सेठक मित्रकेँ बीएक असली घिबही बीए हेबापर कने सन्देह भऽगेलै आ एकर चर्चा ओ साँझमे अपना मित्र लग केलक। अगिला दिन जखन बीए गद्दीपर बैसलाह तखन सेठ आबि कए हुनका पछिला तीन दिनक हिसाब किताब पूछि बैसल। बीए घबरा गेलाह। ओना ओ कोनो गड़बड़ी नहि केने छलखिन मुदा हिनका ई बात सिखले नहि छलनि जे यदि किओ हिसाब किताब पूछत तऽउत्तर कोना देल जाए। एखन तक ओ खाली किताबी प्रश्नक उत्तर रटैत आएल छलाह। व्यावहारिक काजक उत्तर देब सिखबे नहि केलनि। से एतए ओ गड़बड़ा गेलाह। फल जे ओही दिन दुपहरियामे गामक गाड़ी धेलनि।

एहिना ओ पटना, दिल्ली मुम्बइ आदि कतेको छोट पैघ शहरमे सेहो भाग्य अजमौलनि मुदा भाग्य तऽहुनका गाम घीचऽचाहैत छलनि से पुर्णिया रहओ कि पटना,लखनउ कि लुधियाना, सब ठाम कोनो ने कोनो एहन परिस्थिति भइए गेलनि जे दू चारि दिनसँ बेसी नहि टिक सकलाह।

बीए सौंसेसँ बौआ कए गाममे खेती करए लगलाह। खेतीमे खूब नाम कमौलनि। दस किलो के मूर आ सात किलो के बैगन हुनके खेतमे उपजल छलनि। हमरा गाममे गुलाब आ गेंदा फूलक खेती हुनके शुरू कएल छिएनि। एखन हमर गाम एकर नीक व्यवसाय कऽरहल अछि। आब तऽदेखादेखी अगल बगलक गाम

सबमे सेहो फूलक नीक खेती भऽरहलै अछि। एहि प्रयास लेल हुनका गामक पंचायतसँ विशेष पुरस्कार भेटलनि।

बीएक सबसँ पैघ उपलब्धि भेलनि गामक लोककेँ स्कूली आ कौलेजिया पढ़ाइक प्रति अविश्वास करौनाइ। तकर बाद कियो अपना धीया-पूताकेँ स्कूल कौलेज नहि पठौलक। मात्र साक्षर बनै लेल मटिकोरबाक मिडिल स्कूल तक। हमहू जे दशमा पास केलहुँ से एही कारण सम्भव भेल जे बाबूजी गुजरि गेला आ माएकेँ हम कहियो ई बूझऽनहि देलियै जे हम कतए जाइ छी आ की करै छी।

दस साल तक विभिन्न शहर सबमे घुमैत ठोकर खाइत बीएकेँ किछु नीक बुद्धि तऽभैए गेलनि। एकर उपयोग ओ केलनि गाममे झगड़लगौनाक रूपमे। हुनकर विशेषता अछि जे हुनका संग जे लोक पाँचो मिनट बैसि गेल आ हुनकर देल एक खिल्ली पान खा लेलक ओ अपना दियादी आ कि पारिवारिक झगड़ामे जरूर फँसत। आ ओहि झगड़ाक पंचैतीमे बीए जरूरे रहता। बेसी झगड़ा गामक पंचैतीसँ उपर नहिए जाइ छैक। किछुए एहन घटना भेलैक जे बीए बादमे सम्हारि नहि सकला आ मोकदमा भऽगेलै। कतबो माँजल ओझा गुणी रहथु, किछु भूत हुनको हाथसँ छुटिए जाइ छनि ने। तहिना बूझू।

हमरा गामक सीमामे जे चारू कातक चारि पाँच गामक लोकक जमीन जाल छैक ओहो सब एहि झगड़लगौना प्रेतक चक्करमे फँसिये जाइत अछि। सबकेँ बूझल छैक जे बीए संग बैसनाइ आ हुनकर पान खेनाइ माने भेल कपारपर दुरमतिया सवार। मुदा कहाँ कियो बचि पबैत अछि? बीएक मधुर सम्भाषणक आगू सब फेल।

बीए एहि लूड़िसँ कोनो कमाइ नहि करैत छथि, ई तऽमात्र हुनकर मनोरंजन छिएनि। एहन उदार चरित्रक लोक परोपट्टामे नहि भेटत। एहि किताब लिखबाक क्रम मे एक दिन हम पूछि देलिएनि-

“एखन तक कतेक लोकक बीच झगड़ा लगा देने हेबै?”

ओ तऽ सबटा लीख कए रखने छला। एकटा पैघ लिस्ट हमरा आगू पसारि देलनि। हम चकित भऽ गेलहुँ। बीए तऽ नारदोक कान कटलनि मुदा किनको बूझल नहि। जरूर एकरा एक बेर गिनीज बुक अथवा लिमका बुक मे छपबैक कोशिश करबाक चाही। से भऽ गेला सँ अहीं कहू हमर गाम अपना जिला आ कि प्रदेश मे नाम करत की नहि?

q

3. खुरचन ठाकुर

मूल नाम: किसुनलाल ठाकुर, प्रसिद्धि खुरचन ठाकुर

पिताक नाम: तिरपित ठाकुर

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: सन उनैस सौ सतासी सालक बाढ़िमे

उपलब्धि: खुरचन ठाकुरक प्रसिद्धि खुरचने लऽकए भेल। हुनका लेल अस्तूरा बेकार छल। अनेरे लोक टाका खर्चा करत। ओ खुरचनकेँ पिजा लैत छलाह आ केहनो बढ़ल केस-दाढ़ी रहओ, काटि दैत छलाह।ओहीसँ नह सेहो काटि दैत छलाह। जखन केश छँटबैक प्रचलन बढ़लै तखन खुरचन ठाकुर अपन ओही औजारसँ केश छाँटब सेहो शुरू केलनि। केशमे ककबा सटा दैत छलखिन आ ओहि उपरसँ खुरचन चला दैत छलखिन। देखनिहारकेँ चकचोन्ही लागि जाइ छलनि जे बिना कैंची के केश कोना एतेक सुन्दर छँटा जाइत छलैक।

आ केहनो फोरा-फुन्सी रहओ खुरचन ठाकुरक डाकदरीक आगू सब जेना सरेंडर कऽदैत छल। फोराक डाकदर रूपमे खुरचन ठाकुर परोपट्टे नहि दश कोसमे नामी छलाह। कहियो कए तऽहुनका दूरापर लोकक लाइन लागि जाइत छल। खुरचन ठाकुरक खुरचनक स्पर्श होइतहि लोककेँ आरामक बोध होमए लगै छलै।

बीए जखन एक बेर कोनो शहरसँ घुरलाह तऽखुरचन ठाकुर हुनका देखलक ओतुका सैलूनमे केश छँटेने। बीएकेँ एखनहुँ मोन छनि खुरचन ठाकुरक हुथान। आ ओहि 'अलूरि' नापितक लेल प्रयोग कएल गेल अपशब्द सब जे बीए हमरा सुना तऽदेलनि मुदा लिखबासँ मना कऽदेलनि।

पूरा गाममे खुरचन ठाकुर एकसर, सौंसे गाम हुनकर जजमान। मुदा मात्र एकटा औजार, खुरचन, आ गाम नेहाल। एहन छलाह रत्न हमर खुरचन ठाकुर।

q

4. टहलू दास

मूलनाम : सियाराममण्डल

पिताक नाम: जगदेव मण्डल

जन्मतिथि: अज्ञात

मृत्यु: अकालकवर्ष (सम्भवतःउनैससौछियासठि)

उपलब्धि : टहलूटहलैततऽकमेछलाहमुदाहुनकचालिमेबड़काबड़काहारिजाइतछल। बूढ़लोकसबखिस्साकहैतछथिजे एकबेरककरोसारसाइकिलपरचढ़िकए

हमरागामएलाह। हुनकरगामकरीबसात-आठकोस (एखुनकालोकलेलबूझूचौबीस-पचीसकिलोमीटर) दूर। साइकिल ओहि समय ककरो ककरो रहैत छलै, हमरा गाममे ककरो नहि छलै से बूझू सौंसे गाम जमा भऽगेल साइकिल देखबा लेल।

टहलूहुनकापूछिदेलखिन-

“कतेकसमयलागलसाइकिलसँहमरागामअबैमे?”

ओगर्वसँबजलाह-

“इएहगोटेकघंटाबूझिलिअऽ।”

ओहो अन्दाजे बजलाह कारण हाथमे घड़ी तऽछलनि नहि आ ने टहलूएकेँ बूझल छलनि जे एक घंटा कतेक समय होइत छैक। टहलूहुनकादूसैतबजलाह-

“एतेककालमेतऽहमपएरेचलजाएबआघुरिकएचलोआएब, आयदिइन्तजामकएलरहततऽअहाँकघरपरभोजनोकऽलेब।”

सारकेँभेलनिजेअनगौआँबूझिकनेडींगहँकैतछथि। ओहुनालोक गाममे आएल ककरोसारकसंगहँसीमजाककऽलैतेछल। एहनोकतहुभेलैएजेलोकसाइकिलसँदूनोसँबेसीचलिलेत? मुदाएकरफरिछौहटिको नाहोअए?ओजमानातऽमोबाइलटेलीफोनकछलैनहिजेतुरत्तेईककरोखबरिकऽदितथिनगाममेजँचैलेलजेसत्तेमेटहलूओहिगामप हुँचलाहकिनहि।

योजनाबनलजेबड़कीपोखरिकचारूकातदूनूगोटेघुमता। सारसाइकिलसँआटहलूपएरे। पोखरिक चारू कात रस्ता साइकिलो चलबै लेल नीके छलैक। जेना कि ओहि समय सब ठाम रहैत छलै, कच्चिए मुदा समतल आ पीटल-पाटल।
जतेकतेजअपनचलिसकथिसेचलथु। यदिटहलूसत्तेमेबड़तेजचलैतछथितऽचक्करलगबैमेकमेसमयलगतनि। ओचक्करलगबैत रहताहजाबतसारमहोदय

साइकिलसँएकचक्करपूरानहिकऽलेथि। यदिसारेमहोदयपहिनेएकचक्करलगालेताहतऽओहोताबततकचक्करलगबैतरहता जाबतटहलूएकचक्कर

पूरानहिकऽलेथि। अन्तमेजेजतेकबेसीचक्करलगौनेरहतसेततेकसौटाकाजीतत। मानेभेलजेएकचक्करकेसमयमेयदिकि योदूचक्करलगालेततऽएक चक्कर बेसी भेलैक ताहि लेल
एकसौरुपैयाजीतत। यदिआधाचक्करबेसीलगाओततऽपचासरुपैयाजीतत। एहिसँकमभेलापरदूनूकेँबरोबरिएबूझलजाएत।

गौआँजमाभऽगेलदेखबालेल। सारकबहिनोकेँकहलगेलनिहुनकेपक्षमेरहैलेलजेकोनोतरहकबेइमानीकगुंजाइसनहिरहै। खेलाशुरूभेल। जतेकताकत

छलनिततेकपैडिलमेलगबैतसारमहोदयसाइकिलदौड़ेलनि। मुदाटहलूतऽनिपत्ता। जाबतओएकमोहारटपथिताबतटहलू एकचक्करपूराकऽलेलनि।

साइकिलआपएरेदौड़चलैतरहल। अन्तमेसारमहोदयपूरेतीनसौटाकाहारिगेलाह।

ओजेहमरागामसँपड़ेलासेफेरघुरिकएकहियोनहिएएला। टहलूदासकएहिगुणकजानकारीगामोमेबहुतोलोककेँनहिछलैक। आबतऽहिनकरगुणक

बखानसबतरिहोमएलागल। डाकविभागहिनकादौड़हाकनोकरीदेबालेलतैयारभऽगेलआएहिआशयकेचिट्ठीसेहोहिनकापठादेलकनि। मुदाई

अस्वीकारकऽदेलखिन।

“उत्तम खेती, मध्यम बान, अधमचाकरी, भीखनिदान”

बलाफकराजेरटनेरहथि। ओकोनोदशामेचाकरीनहिकरताह। नहिए केलनि।

एहनमहानछलाहटहलूदास।

q

5. चिलमसोंट भाइ

मूलनाम : केवलराउत

पिताकनाम : बनारसीराउत

जन्म तिथि : अज्ञात

मृत्यु: करीबचालीससालपहिने।

उपलब्धि : नामगुणकाजछलनिहुनकर। चिलमसोंटनामेपड़लनिजखनहुनकाचिलमसँबीतभरिधधराउठएलगलै। गामैकगजेरीसाहुकअभिन्नमित्र। गजेरी

साहुगाजाबेचथिआचिलमसोंटकीनथिआताहिपरसोंटलगाबथि।सोंटलगबैमेकिछुगोटेआरसंगदैतछलखिनमुदाओसबह मरासंकलनलेल

महत्वपूर्णनहिछथि।

एकबेरगाममेदूटाबबाजीएला।ईदूनूएकनम्बरकेगँजेरी।ओ बरकी पोखरिक पाकरि गाछ तर अपन आसन जमा लेलनि। एकटा गौआँकेँ चेला मुड़लनि, ओहि दिनक बुतातीक जोगार सेहो केलनि आ चिलम लेल गाजाक जोगार सेहो। अपनामे मस्त ई दूनू लगलाह चिलम सोंटए।

किछु गौआँ हिनक चिलमक सोंट देखि रहल छल। अति साधारण रूपें ई सब सोंट लगा रहल छलाह। ओ टिप्पणी कैए देलक-

“अहाँ दूनूसँ नीक तऽहमर गौआँ चिलम धुकैत अछि, ओकर नामे पड़ि गेलैक चिलमसोंट भाइ।”

बबाजी सबकेँ लगलनि जे गौआँ सब हिनकर निन्दा कऽरहल छनि। ओ चिलमसोंटकेँ बजबै लेल कहलखिन।

चिलमसोंट बजाओल गेलाह। फोकट के गाजा आ तकर सोंट ई बात सोचिए कए ओ मुदित भेल छलाह। तैयो अपन गुणकेँ नुकबैत बबाजी दूनूकेँ टिटकारी देलखिन नीकसँ सोंट लगबै लेल। ओ सब पूरा दम लगा कए सोंट खिचलनि तऽएक बेर कने दू-तीन आँगुर धरि धधरा उपर उठलैक। चिलमसोंट विनम्र भावें अपन चिलम सुनगौलनि आ लगला सोंट खीचए। जेना जेना गाल धँसैत गेलनि तेना तेना धधरा उपर उठैत गेलै। अन्तमे पूरे हाथ भरि धधरा उठि गेलै। एहन चमत्कार तऽपहिने कोनो गौआँ नहि देखने छल। बबाजी सब तऽचकित आ डराएल। ओहिमे एक गोटे दोसरकेँ कहलखिन-

“एकरा चेला बना लेब ठीक रहत।”

चिलमसोंटकेँ गाजा चढ़ि गेल छलनि। ओ उनटे ओहि बबाजीकेँ भरि पाँज कऽधेलनि आ बजलाह-

“रौ सार, चिलम सोंटैक लूरि तऽछौके नहि, हमरेपर गुरुआइ करमे? हमरा चेला बनेमे? ढहलेल नहि तन। चल, आइसँ तो दूनू हमर चेला बनि जो आ हमर नोकर जकाँ काज कर। साँझुक पहर हम तोरा दूनूकेँ चिलम सोंटैक लूरि सिखाएल करबौ।”

आब तऽदूनू बबाजीक बोलती बन्द। कहुना अपनाकेँ छोड़ा कए ओ दूनू नाङरि सुटकबैत गामसँ भगलाह।

चिलमसोंट भाइ अपना काजमे अद्वितीय छलाह। इलाकामे करीब दस गामक बीच हुनकासँ हाथ मिलबै बला कियो नहि भेल छल।

q

6. नक्छू पहलमान

मूल नाम: परमेसर यादव

पिताक नाम: शीतल यादव

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: सन उनैस सौ बेरासी साल

उपलब्धि: नक्छू कने नकिआइत छलाह बजबामे तें ई नाम भेलनि। हुनका हनुमानजीक सराप आ आशीर्वाद छलनि जे कोनो कुश्ती खेलामे पहिल दू बेर तोरा हारए पड़तौ। जखन तों दू बेर हारि जेमे तखन तेसर बेर केहनो पहलमानसँ भिरमे, जितबे करमे, से ओ साक्षात भीमे किएक नहि आबि जाथु। बूझि ले हम अपनहि तोरा शरीरमे प्रवेश कऽजेबौ।

ई बात ककरहु नहि बूझल छलैक हुनकर बाबूजीकेँ छोड़ि। साधारण भिड़न्तमे हारि-जीत चलिते रहैत छलैक। लोक एतेक ठेकान नहिए करैत छल जे कोना दू बेर हारलाक बाद नक्छू निश्चिते तेसर बेर जीत जाइते छथि।

एक बेर दरभंगा राजक पोसुआ कैलू पहलमान हमरा गाम दिससँ जाइत छला। हुनका गुमान जे पूरा जिलामे हुनकासँ हाथ भिरबै बला कियो नहि छनि। ई गप ताहि दिनक छी जहिया मधुबनी जिला नहि बनल छलै आ दरभंगे जिलाक सवडिविजन छलै। हमरा गाममे कियो अगत्ती छौंड़ा हुनका टिटकारि देलक जे गामक नक्छू पहलमानसँ एक बेर हाथ भिरा लेथि। पहिने तऽओ अपन प्रतिष्ठा बूझि एकरा अनठबए चाहलाह मुदा गौआँक जिदपर अखाड़ामे उतरि गेला। नक्छू सेहो उतरला आ हनुमानजीकेँ स्मरण केलनि।

खेला शुरु भेल। कैलू आ नक्छू अखाड़ामे चक्कर्घिन्नी कटैत आ एक दोसरापर दाओ बजारैक चेष्टामे लागल। कियो दोसराक देहमे सटि नहि रहल छल। आ कि नक्छू किछु केलनि आ क्षणेमे कैलू चित, नक्छू हुनका छातीपर सवार। लोक अकचकाएले रहि गेल। तालीपर ताली परए लागल। कैलूकेँ किछु बुझाइये नहि रहल छलनि जे की भेलै, कोना भेलै, कोन दाओ लगलै जकर ओ सम्हार नहि कऽसकला।

दूनू पहलमान उठलाह, देह झाड़लनि, हाथ मिलौलनि आ अपन अपन गन्तव्य दिस विदा भेला।

नक्छू जीत गेलाह मुदा हुनका एकर कोनो गुमान नहि छलनि। हुनका बूझल छलनि जे अगिला दू कुश्ती हुनका हारबाक छनि। ओ अपनाकेँ कहियो महान नहि कहलनि, ई हुनकर नम्रता छलनि।

q

7. पण्डितजी

मूल नाम : राधाकृष्ण मिश्र

पिताक नाम: लक्ष्मण मिश्र

जन्म तिथि: उनैस सौ पचास सालक फगुआ दिन।

उपलब्धि: हमरा गामक एकमात्र ब्राह्मण पुरोहित परिवार, पण्डितजी खाली नामेसँ पण्डित छथि। हिसाबें औंठा छापे रहि गेला। भरि गामक जजमनिका सम्हारै लेल भागिनकेँ बजा अनलनि। अपने ओकरा संग खाली नोंत खेबा लेल जाइ छथि।

मुदा पण्डितजी अद्वितीय भैए गेलाह। ई भेल हुनक अद्भुत गुणक कारण। ओ महिंसलेट भऽगेला। महींसपर बैसल बाधे बाध बौआइत रहबामे ओ ककरो कान काटि सकैत छथि। बच्चहिंसँ ओ महींसपर जे चढ़ए लगलाह से एखन तक कइए रहल छथि। महींसे पोसब हुनक मुख्य व्यवसाय भेलनि। एकटा ब्राह्मण कुलमे जन्म लइयो कए ओ कोनो यादव परिवारसँ बेसी दूधक व्यापार केलनि आ ओहिना कोनो यादव परिवारसँ बेसी पानि दूधमे मिलबैत रहला। तैयो हिनक दूधक बिक्री कम नहि भेल। महींसक खरीद बिक्री केलनि, ओकर दवाइ दारू सेहो बुझैत छथि आ सब तरहें महींसक विशेषज्ञ रूपें इलाकामे प्रसिद्ध छथि। हिनका प्रसादें कतेक महींस कें प्राण बचलै। ब्लॉक के मवेसी डाकदर सेहो हिनकर ज्ञानक प्रशंसा करैत छनि।

पण्डितजी एकटा आर गुण लेल प्रसिद्ध छथि आशीर्वाद देबाक हिनक शब्दकोष बिल्कुल अलग अछि। 'जीबू जागू ढनढन पादू' तऽ हिनकर तकिया कलाम अछि मुदा जखन कियो कोनो तरहक छोट पैघ गलती कऽ बैसैत अछि तखन हिनक मुह सँ बहराएल शब्द विश्वक कोनो कोष मे भेटऽ बला नहि। आ सुननिहार केहनो मोट चामक बनल रहओ, कान मूनहि पड़ैत छैक। ओ आशीर्वाद-वर्षा लोकक धैर्यक परीक्षा सेहो लैत छैक। आ जे कने अधीर भेल तकरा तऽ भूलुण्ठित भेनहि कल्याण।

महींसक संग संग ई गायक व्यापार सेहो करैत छथि। गाय दरबज्जापर पोसैत कमे छथि, खाली खरीद बिक्रीक काज हाटपर करैत छथि। मटिकोरबा गामक हाटपर मरदुआरि कैल गाय सस्त दामपर कीनैत छथि, ओकरा दस दिन नीक जकाँ खुआ पिआ कए आ जहिना आइकालि लोक केश रंगैत अछि तहिना नवका तरीकासँ रंग चढ़ा कए कारी गायक रूपमे दुन्ना-तिगुन्ना दाममे बेचि लैत छथि। बेचबा काल ध्यान रखैत छथि

जे ग्राहक बेस दूरक इलाकासँ रहए। लग पासक ग्राहककेँ ओ कारी गाय नहि बेचैत छथि। एक दू बेर गौआँकेँ सर सम्बन्धीक मारफत सुनबामे एलै जे मासे दिनक भीतर गायक रंग बदलए लगलै। मुदा ई शिकाएति सीधे पण्डितजी लग कियो नहि पहुँचेलक। आशीर्वाद-वर्षा मे भिजबाक डर जे रहैत छैक।

एखन तक पण्डितजी बेदाग अपन व्यवसायमे लागल छथि।

जारी....

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ आ दूटा लघुकथा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

4.

सीतापुर गामसँ लऽ कऽ मिथिलांचल होइत सौंसे देशे स्वतंत्र भेल।देशक जन-जनमे स्वतंत्रताक जे खुशी होइ छै ओ खुशीक लहैर उठबे कएल।ओना, शासकक रूपमे अंगरेज सत्ता छोड़लक, मुदा देशक जे अपन समस्या हजारो बर्खसँ जनमैत आबि रहल छल ओ तँ आरो जटिल भइये गेल छल। जइसँ आगू बढ़ैक बदला पाछूए मुहेँ देश ससैर रहल छल। तैसंग अंगरेज बहादुर हिन्दु-मुसलमानक बीच भारत-पाकिस्तान बना नमहर झगड़ाक बीआ छीटिये देने छल। ओना, जँ देखल जाए तँ भारतक पच्छिमी सीमापर पच्छिमी पाकिस्तान भेल आ पूबसँ बंगाल कटि पूर्वी पाकिस्तान भेल, जे समुद्रसँ सेहो सटल अछिए। ओ भूभाग पाकिस्तान देशक रूपमे भेल, मुदा ऐठामक समाज माने मिथिलांचलक संग सीतापुरक समाज अदौसँ हिन्दू-मुसलमान, एक्के गाममे मन्दिरो आ मस्जिदो बना अपन पूजा-इबादत करैत आबिये रहल अछि। धर्मक नाओंपर जखन देशक विभाजनो भेल आ नव देशक रूपमे सेहो स्वतंत्र भऽ कऽ ठाढ़ भेल, तखन जातीय उन्माद नइ जगै सेहो तँ असम्भव नहियेँ अछि, सम्भव अछिए। एक-दोसरकेँ एक दोसर कहैत रहबसँ विवादक जड़ि मोटाइते छल। जइसँ दुनूक बीच जहाँ-तहाँ मारि-पीटि, खून-खच्चरसँ लऽ कऽसम्पैतिक संग इज्जत-आवरूक लूट-पाट सेहो भेबो कएल आ अखन धरि होइतो आबिये रहल अछि।

देशक अजादीक लेल जे देशभक्त छला हुनका सबहक सोझामे देश स्वतंत्र भेलासँ पूर्व जेतेक समस्या छेलैन तइसँ कतेको गुणा बेसी स्वतंत्रता प्राप्तिक पछाइत आगूमे एलैन। उजरल-उपटल, शोषित-पीड़ित देशक बागडोर देशवासीक हाथमे एलैन। जइसँ सबहक विचारमे द्वन्द्व उठबे कएल। ओना, अजादीसँ पूर्व वैचारिक चिन्तनधाराक ओ रूप नहि छल जइसँ समस्याक समाधान होएत। एकमुहरी कहियौ आकि एकसूत्री, सभ आन्दोलनीक उदेस अंगरेजी शासनक विरूद्ध छेलैन, तँए दोसर-तेसर समस्या गौण पड़ि गेल छल, जे स्वतंत्र भेला पछाइत प्रमुखतासँ आगू आएल।

आइक जे देश भारत छी, वएह अजादीक समय 1947 इस्वीमे सेहो छल, किसानेक देश भारत तहियो कहबै छल आ आइयो कहबैए। भलेँ लोक अपन जमीन-जत्था, गाम-घर छोड़िशहर-बजार किए ने पकैड़ रहला अछि। खाएर जे अछि, मुदा एते तँ हमरा सभकेँ बुझए पड़त किने जे औझुका जकाँ 1947 इस्वीमे देशक जनसंख्या नइ छल मुदा तैयो खाएब-पीब नइ घटै छलसेहो केना नइ कहल जाएत। आन-आन देशसँ अन्न, कर्जक रूपमे अबै छल आ हम सभ जनेर-गहुम खा-खा प्राण बँचबै छेलौं।

किसानक दशा-दिशा देखाएबो आ सुधारबोमे स्वामी सहजानन्दजीक जबरदस भूमिका रहलैन। किसानक समस्याकेँ ओ अति सुक्ष्म दृष्टिसँ देखै छला। सीतापुर गामक जे काँग्रेसी कार्यकर्त्ता सभ छला, ओ सभ स्वामीजीक भक्त रहथिन, जइसँ आन गामक अपेक्षा सीतापुरमे बकास्त जमीनक वापसी सफल रूपमे संचालित भेल। ओना, गाममे वामपंथी विचारधारा सेहो प्रवल रूपमे रहबे करइ। जेकर प्रमाण अखनो सद्य: सबहक सोझमे अछिए जे मिथिलांचलेक आन-आन गाममे अखनो बास भूमिक समस्या अछि, मुदा सीतापुरमे से नहि अछि। ओना किसानक जे निम्न-कोटि होइए माने सीमान्त किसानओ सीतापुरमेबेसी अछि। किसान परिवारक जे नव पीढ़ीक लोक छैथ, ओ अपन-अपन खेतो-पथार आ घरो-दुआर छोड़ि शहर-बजारमे घर-दुआर बना रहए लगला अछि। मुदा गामो तँ गाम छी, जहिना एक दिस जमीन छोड़निहार छैथतहिना खेती केनिहारक अभाव सेहो भइये गेल अछि। सइयो रंगक ओझरी जमीनक बीच ठाढ़ अछिए।

एक दिस अजादीक किछुए दिनक पछाइत गाँधीजीक हत्या भेलैन तँ दोसर दिस देशक शासन-बेवस्था चलबैले संविधान सभ सेहो बनि, कार्यरत भेल। किसानी-ले जहिना माटिक जरूरत अछि तहिना पानियोँक अछिए। पानिक साधन बनबैले पच्छिमी-पूर्वी कोसी नहरक चर्च जोर-शोर चलिये रहल छल। तैसंग धार-धुरक बाढ़िक बचाउ-ले धारकेँ घेरबोक जरूरत छेलैहे। तैसंग सिंचाइक जरूरत सेहो छेलैहे। बोरिंगसँ पतालक पानि ऊपर आनि खेतकेँ पटौल जाइए, ई लोक मात्र सुनितेटा छल। वास्तविक रूपमे केतौ छल नहि। ओना, गाम-गाममे चरो-चाँचर आ पोखरियो-झाँखैर अछिए मुदा ओइसँ सिंचाइक समुचित बेवस्था हएब सम्भव नहि छल। एक तँ गाम-गामक पोखैर कोसी-कमला धारमे कटबो कएल आ भथानो भेल, मुदा जइ गाममे नहि भेल तहू गाममे छोट-छोट पोखैर रहने ओइमे ओते पानि जमा रहितो ने छल जइसँ सिंचाइक पूर्ति सम्भव होइत।

ओना, गाम-गाममे पोखैरबला, माने जिनकर पोखैर छिऐन ओ खेत पटबैक कोन बात जे लोककेँ नेहेबोमे रोक लगेने छल। किछु गामक पोखैरमे नहाइ-ले घाट फुटा-फुटा बनौल गेल छल तँ किछु गाममे किछु जाइतिक समुदायकेँ नहाइसँ रोकल जाइ छल। ओना, अट्ठारह गण्डा पोखैरबला सीतापुर गाममे सिर्फ पाँचेटा पोखैरओहन छल जइमे किछु जातिकेँ नहाएबसँ रोक छेलइ। ओना, सहजानन्द स्वामीजीक छत्रछायामे गाम-

गामक किछु पोखैर सार्वजनिक भऽ गेल,मुदा अधिकांश गामक अधिकांश पोखैर बचले रहल। ओना, जहिना माटि उपजाक बखारी छी तहिना पानियोँ छीहे। मुदा से तँ समुचित बेवस्था भेला पछाइत हएत।

गुलामीसँ अजादीक सीमापर तँ देश ठाढ़ भेल मुदा हजारो रंगक अन्ध-बिसवासो आ रूढ़िवादितो चिन्तन धाराकेँ जकैड़ कऽ पकड़नहि छल जइसँ नव चिन्तनधारा बनियेँ ने पेब रहल छल। हजारो बर्खक विदेशी शासनसँ त्रस्त समाज अखनो स्वतंत्रताक महत बुझिये ने पेब रहल छल। जइसँ मनुखक जिनगीक आधार मजगूत होएत। जहिना किसानी जिनगी अनबिसवासू छल तहिना आन-आन छोट-मोट धन्धोक छेलैहे। एक दिस जहिना गाम-समाजक किछु चुनल-चानल लोक समाजक आधारकेँ मजगूत बनबैक विचारक संग क्रियागत रूपमे सेहो दिन-राति एकबट्ट केने छला, तहिना अज्ञानक अन्धकारमे पसरल समाजकेँ अन्ध-बिसवासक अन्धकारे दिस समाज विरोधी शक्ति धकेल रहल छल, जइसँ देश आगू बढ़त आकि पाछू जाएत से निर्णय करब कठिन छेलैहे।

किसानक दुर्भाग्य छेलैहे जे जे पानि कृषि लेल अमृत छी ओ मौनसूनपर निर्भर छल। सालक मात्र तीन-चारि मास ओहन अछि जइमे बरखो होइए आ बर्खाक सम्भावित मास सेहो मानल जाइए, मुदा मौनसूनोक एहेन निसचित ठेकान नहियेँ अछि जे एते बरखा साले-साल हेबे करत। सम्भावित बर्खासँ कोनो साल बेसियो भऽ जाइए आ कोनो साल कम्मो होइए। तैबीच एहनो तँ होइते अछि जे कोनो साल नहियोँ भेल।

पैछला शताब्दीक सबहक ऐतिहासिक अनुभव लोककेँ छैन्हे जे जहिना उनैसमी शताब्दीमे पचीसटा रौदी भेल तहिना अठारमी शताब्दीमे सेहो भेबे कएल। रौदी तँ रौदी छी, ओकरो कि कोनो ठेकान अछि जे एत्ते हएत कि एतबे हएत? एक मौसमक सेहो होइए आ दू-तीन-चारि-पाँचक संग बारह बर्खक सेहो भेबे कएल अछि। बारह बर्खक रौदीक अनुभव मिथिलांचलक मिथि मालिनिकेँ सेहो छैन्हे। बुझले अछि जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत सीताक जन्म भेलैन सेहो जखन जनकजी अपने हाथे हर पकैड़ जोतलैन, तखन।

किसानक लेल जहिना माटि पूजनीय सम्पदा अछि, तहिना पानियोँ अछि। मुदा ओ तँ तखन पूज्य हएत जखन ओकर विधिवत् अराधना करब। मुदा ऐठाम से तँ छल नहि। मिथिलांचलमे अनिसचित जीवन सभ जीब रहल छला जइसँ कोनो साल समुचित बरखा भेने जहिना खुशहाली अबै छल तहिना समुचित बरखा नइ भेने ओकर विपरीत स्थिति सेहो होइते छल। तैसंग समाजमे पसरल रूढ़वादी चिन्तनधारा भाग्य-तकदीरकेँ अगुआ समाजक पछुआ पकैड़ सेहो पछुऐबते छल। माने नव चेतनाक उदयकेँ रोकिते छल। मनुखक जिनगीक एक-एक समस्याकेँ हजार-हजार रंगक विचार तेना ओझरा देने छल जे अपनो जीवन-मरण लोक अपनेसँ नइ बुझि रहल छला। बरखा नइ भेलतँए कियो जटा-जटीनक नाच नाचि-नाचि बेंगकेँ उखैरमे कुटि, ओहन लोकक आँगनमे फेकै छल, जेकर गिनती समाजमे झगड़ाउ लोकमे होइ छल। रौतुका घटना भोर होइते झगड़ा-लड़ाइक रूप लइ छल। तहूमे सामुहिक रूपसँ फेकल बेंग, एकाकी परिवारक बीच विवाद ठाढ़ होइते छल। तेतबे नहि, बरखा नइ भेने पैघ-पैघ भगताइयो होइते छल आ जगो-जाप होइते छल। एक तँ उपजा नइ भेने लोकक घर खाली रहै छेलै जइसँ जीवन कठिन छेलै, तैपर सँ परियाप्त खर्च सेहो होइते छेलइ।

माटि-पानिक संग किसानी जिनगी-ले नीक-नीक बीजक संग नीक-नीक लूरि[1]क जरूरत सेहो अछिए। कोनो देशक, माटि-पानि-खान-पहाड़ मूल उत्पादित सम्पदा छी। ओनाऐ चारूक हिसाबे, माने माटि-पानि-खान-

पहाड़सँ अप्पन देश बहुत सम्पन्न अछिए। तहूमे मिथिलांचल तँ आरो बेसी सम्पन्न अछि। मिथिलांचलक जेहने माटि पवित्र[2]अछि तेहने पानि सेहो गुनगरक संग परियाप्त सेहो अछिए। दर्जनो नदी जहिना सालो भरि बहता अछि, तहिना मौसमक अनुसारे बरखा सेहो होइते अछि। दुनियाँक कोनो देश एहेन नहि अछि जेकर माटि एहेन उर्वर होइ। जँ कोनो देशक माटि एहेन उर्वर अछियो तँ ओकर दोसर साधन ओहन नइ अछि, जेहेन अपना सबहक अछि। कृषिक पैदावार मौसमक अनुकूल सेहो होइते अछि। तहूमे अपन देश आन-आन देशसँ बेसी नीक अछि। किएक तँ किछु देश एहेन अछि,जैठाम सालो भरि एकरंगाहे मौसम रहैए वा एकसँ आगू बढ़ि डेढ़-दू मौसमक होइए। माने ई जे कोनो देश सालो भरि ठण्ढे रहैए तँ कोनो देश सालो भरि गरमे रहैए। तहूसँ विचित्र ई अछि जे कोनो देशमे बरखा होइते ने छै, तँ कोनो देशमे सालो भरि बरखा होइए। जइ देशमे सभ साल, सालो भरि बरखे हएत तइ देशमे कृषि कार्य केना हएत? मुदा ओइठाम प्रकृतिक अनुकूले पैदावार होइए। तथापि अखन धरि माने बीसमी सदीक पाँचम-छठम दशक धरिक बीच जे किसान देश भारतक किसानी जिनगी रहल ओ आन बहुतो देशसँ पछुआएल रहल, जइसँ जे उत्पादन[3] हेबा चाही, से नहि भऽ पबै छल। तेकर अनेको कारण छल। जहिना समुचित जानकारक[4] अभाव छल तहिना समुचित खेती करैक सम्बन्धित औजारक संग समुचित बेवस्थाक अभाव सेहो छेलैहे। जुग-जुगसँ अबैत जहिना कृषि औजार छल तहिना जुग-जुगसँ अबैत कृषि कार्यक तकनीको छेलइ। बेवस्था ओहन छल नहि जे समुचित ढंगसँ कृषि संचालित कएल जाइत। ओना,बेवस्थाक एक नहि दू दिशा अछि, मुदा दुनू दिशा अन्धकारपूर्णे छल।

जहिना नव सरकार गठित भेनेसाइयो-हजारो रंगक नव-नव समस्या उठैए, तहिना देशीसरकार गठित भेने,तहूमे अंगरेजी हुकुमतक तुरन्त पछाइत देश भरिमे अनेकानेक समस्या आगूमे आएल। ओना, सरकारी तंत्रकेँ मजगूत आ कमजोर हेबाक सेहो कारण अछि मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जैठाम पेटक[5] समस्या विकराल रूपमे मुँह बौने छल, तैठाम जिनगीक जे दोसर मूल आवश्यकता छल तैपर धियान केना जाएत? तहूमे अंगरेजी शासनक खिलाफ साधारण लड़ाइयो तँ नहियेँ भेल। कोनो दू देशक बीच लड़ाइ भेने जेकरा जमीनपर लड़ाइ होइए, ओकर अर्थबेवस्था कमजोर होइते अछि। तँए सरकारी बेवस्था कमजोर छेलैहे जइसँ कृषि पंगु बनले रहल। ई भेल एक दिशा, दोसर दिशा अछि समाजिक बेवस्था। अपना देशक समाजिक बेवस्था सेहो कृषि क्षेत्रक प्रतिकूले छल। समाजिक रूपमे कहियो कृषिकेँ समुचित ढंगसँ बेवस्थित करैक विचार समाजक मनमे उठबे ने कएल। ओना, सोल्होअना नहि उठल, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। गामक-गाम बीच जखन रौदी पसरैत छलतखन ओइ गाम होइत जे बहता धार सभ छेलै, ओकरा समाजिक रूपमे बान्हि[6] गामक खेत पटौल जाइ छल। मुदा तोहूमे जबरदस बाधा उपस्थित भेल। बाधा ई भेल जे जिनका जेतेक बेसी सिंचाइ होइतैन तिनकर सहयोग तेतेक कम भऽ जाइत छल। माने ई जे जिनकर खेत बेसी पटै छेलैन, जइसँ बेसी उपजा होइ छेलैन, ओ रौदी-दाहीक ताकमे रहै छला। ताकक कारण ई जे महगकेँ अन्नो बेचलौं आ सूदि-सबाइक संग बन्हकी-भरनाक लाभ सेहो उठेलौं। मुदा मध्यम किसानसँ लऽ कऽ सीमान्तो किसान आ खेतमे काज केनिहार मजदूरोक दशा कमजोरे होइ छल। जइसँ जहिना कृषि क्षेत्र पंगु बनल छल तहिना खेतीपर जीवन धारण करैबला किसानो-बोनिहार पंगु बनले छला। ओना, जएह साधन वा जएह सम्पदा छल ओकरो उपयोग समुचित ढंगसँ कएले जा सकै छल। कम्मो साधनसँ नीक काज होइए आ बेसियो साधन रहनौंजँकरैक इच्छा नहि रहल तँकिछु ने होइए।

नव सरकार गठित भेला पछातियो कृषि क्षेत्रकेँ अनदेखी कएल गेल, जइसँ अछैते साधनक[7] रहने पेटक भूख रहबे कएल। यएह देश छी जे 1971 इस्वीक पछाइत भूखक[8] समस्या मेटौलक से तँ उन्नैस साए पचासो-बावनमे मेटाएल जा सकै छल। जे समस्या भूत बनि देशकेँ पछुएने रहल।

कृषि क्षेत्रमे विशाल साधन मौजूद अछि। जे ओहिना-क-ओहिना पंगु बनल रहल। ने पानिक उपयोग समुचित ढंगसँ भेल आ ने माटिक भेल। दुनियाँक अनेको छोट-पैघ देश ओहन अछि जे कृषि पैदाबारसँ सम्पन्न आइये नहि, बहुत पहिनहिसँ रहल अछि।

1952 इस्वीक चुनाव भेल। बहुत किछु अधिकार आमजनकेँ देल जा चुकल छल, मुदा समाजिक ढाँचा ओइ अनुकूल नइ छल, तँए बेसी अधिकार-कर्तव्यक बोधो आ बेवहारो संविधानक पन्नेमे दबल रहि गेल। ओना, सौंसे देशमे चुनावक पद्धतिकेँ अपना चुनाव भेल, मुदा नेंगरा देशक नेंगरी अजादीक जे होइ छै, सएह भेल।

सीतापुर गाममे मात्र लोअरे प्राइमरी स्कूलटा छल, आगूक नहि छल। ओना, सीतापुरक बगलक गाम ____ रोहितपुरमे मिडिल तकक पढ़ाइ होइ छल। ओहू गाममे हाइ स्कूल नहि छल। सीतोपुर आ रोहितोपुरसँ दस कोस हटि नन्दपुरमे हाइ स्कूल छल, मुदा ओइठाम पढ़ैले छात्रावासमे रहब जरूरी छेलैहे।

1953 इस्वीमे हरिचरण मिडिल पास केलक। ओना, देवचरण सेहो साठि बर्खक उमेर पार कइये चुकल छला जइसँ जेना पहिने काज-उदम करै छला तेना आब नहियेँ कएल होइ छेलैन। जेहनो खेती पहिने होइ छेलैन, तेहनो आब नइ भेने उपजा-बाड़ी सेहो कमए लगलैन। देवचरणक बेटा- राधाचरण अकिंचन छला। खेती करैक अपना कोनो ऊहि नहि छेलैन आ जेहो छेलैन तहूमे देह चोरबै छला। देह चोराएब भेल काजसँ छाँह काटब, माने नइ करब। राधाचरणक बेटा- हरिचरण सेहो तेरह-चौदह बर्खक भइये गेल छल। साधनक अभावमे हरिचरण हाइ स्कूलमे नाओं नहि लिखा सकल। अपन गिरैत शक्तिकेँ देखैत देवचरण हरिचरणकेँ कहलैन-

"बौआ, आब हमर कोनो आशा नइ करह। तखन तँ खेती करैक जे लूरि अछि, बेसी-सँ-बेसी ओ तोरा बुझा देबह।"

हरिचरणक मनमे अखन तक नोकरी करैक कोनो विचार नहि उठल छल। उठबो केना करैत, एक तँ बेसी पढ़ल-लिखल नहि, दोसर- गामक-गाम बेरोजगार युवकसँ भरल छल। बाबाक विचार हरिचरण मानि बाजल-

"बाबा, अपन काज हुअए आकि अनकर काज, केतौ तँ मेहनतेक फल भेटत। तहूमे जखन अपना खेत-पथार अछितखन जँ नोकरी करए जाएब तँ अपन खेती-पथारी केना हएत?"

हरिचरणक नव उदित विचारकेँ देवचरण नीक जकाँ विचारलैन। जेते विचारमे गम्भीरता अबैत जानि तेते मन मुदितसँ प्रमुदित होइत वा फुलितसँ प्रफुलित वा फलित होइत बढ़ल जाइन। अपन परिवारसँ परिचित करबैत देवचरण बजला-

“बौआहरि, पूर्वजक अरजल जे सम्पैत छह ओ बीचमे बोहा गेल छेलह, माने निलाम भऽ गेल छल, ओकरा हम पुन: जीवित करैत अपन बनेलौं। गामेमे नजैर उठा कऽ देखह जे केते परिवार अछि जेकरा तीन बीघा खेत छइ। से तँ अपना भइये गेलह।”

बिच्चेमे हरिचरण बाजल-

“हँ, से तँ भइये गेल बाबा।”

हरिचरणक स्थिर होइत विचारक वृक्षकेँ देवचरण आरो सिंचित करैत बजला-

“बौआहरि, अखन तूँ नव-उदित सूर्य जकाँ लौहित लाल तँ नहि मुदा पीड़ित पिरौंछ लालीक रूपमे जरूर छह,जेना-जेना समय आगू बढ़ैत जाएत, तेना-तेना लालीपन धबैत जेतह। तँए, अखन बेसी नइ कहबह। एकेटा अन्तिम बात अछि से पुछि लइ छिअ।”

पिपाशु पक्षी जकाँ हरिचरण बाजल-

“की पुछए चाहै छी बाबा?”

देवचरण बजला-

“बौआ, मौखिक परीक्षा जकाँ पुछबेटा नइ करै छिअ। संकल्पित रूपमे पुछै छिअ। अपन समर्पण अपना-ले करबह आकि अनका-ले?”

बाबाक विचार सुनि हरिचरण बाजल-

“बाबा, अखन अहाँ जीबै छीतखन हमर संकल्प आकि विकल्पे की।”

q

शब्द संख्या : 2177, तिथि : 24मई2018

---

[1]तकनीक

[2]उर्वर

[3]उपज

[4]कृषिकार्यक जानकार

[5]भूखक

[6]धारक पानिकेँ घेरि

[7]कृषि सम्पदाक

[8]पेटक

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

दूटा लघुकथा-

'हारि-जीत', 'बापक चलैत'

हारि-जीत

विश्रामान्त समय। जीवन काका एकान्त, एकाग्र एकवनांग बीच बैस सरयुग नदी तीरपर बैसल तुलसी बाबा जकाँ नहि, आ ने काशी स्थान पेब कबीर बाबा सदृश बल्किराहुल भाय आ यात्री भाय सदृश जे सदिकाल अपन ओछाइन-बिछाइन समेट कन्हेठ एक बनसँ दोसर बनक बीच बिचड़ैत अनेक जिनगीक रूप-रंग देखनिहार यायावर जकाँ देशक कोण-कोण तँ नहि मुदा कोणे-काणी घुमि-घुमि साठि बर्खक जिनगी खपा चुकल छैथ। अपन बनल-बनौल जिनगीक कोण-कोणकेँ झाँकि-झाँकि देखैक परियास कऽ रहल छैथ। भाय, दुनियाँमे केकरा एते पलखैत छै जे अनकर जिनगीक पनचैती करैमे समय लगौत? पनचैतियो तँ पनचैती छीकिने जे किओहुना- माने बिनु बुझलो कएल जाइए आ बुझियो-गमि-सुगैम कऽ कएल जाइए। मुदा अपनो अपन दायित्व तँ सभकेँ अछिए। जँ अपनो पनचैती अपने नइ कऽ लेब तँ तेहेन खच्चर दुनियाँ अछि जे दोखीकेँ निरदोखी आ निरदोखीकेँ दोखी बना बना अनेरे चौरासी लाखक मत्यभूमिमे टहलबैत रहत। कियो ऐ दुनियाँक भलेँ ने राजा छी आ ने रंक, मुदा अपन-अपन दुनियाँमे तँ सभ राजो छी आ रंको नइ छी से केना नइ कहबै। छुच्छे हाथे आ खालिये बुधिये ने इजोत-अन्हारक दुनियाँमे आएल छेलौं। तखन तँ भेल जे 'खेलौं-पीलौं धौलौं हाथ, भाय तोरा-हमरा कोन साथ।' जानह तू आ जानी हम, दुनियाँ जनलक सेहो बड़बढ़ियाँ नइ जनलक सेहो बड़बढ़ियाँ..! बिना महिमा जनने जँ महिमावाने बनि जाएब सेहो बड़ बढ़ियाँ आ महिमा (महि+माँ) महिमावान बनब सेहो बड़बढ़ियाँ, आनी वा मानी सेहो बड़बढ़ियाँ आ नइ जानी सेहो आ नइ मानी सेहो अहाँक बुधिपन भेल। कियो अपना हाथीकेँ अंकुशसँ वश करए वा कियो अपना हाथीकेँ काने छेद कनौसी पहिरा दिअए सेहो बड़बढ़ियाँ...।

अपन जिनगीक पंचनामा लिखैत जीवन काका अपन गामक स्कूल आरम्भसँ शुरू केलैन। जहिना पढ़ल-लिखल परिवारक अग्रिम बच्चा स्वत: अपन अग्रिम भाए-बहिनक अनुकरण करैत ओइ बच्चा सभ जकाँ नहि जे स्कूल जाइ दुआरे कियो नारक टाल आ कियो जनिजातिक बनौल तौला-खपटा पेकल गाड़ा[1]-गहबरक अढ़मे नुकाएत। मुदा मिडिल स्कूल टपला पछाइत हाइ स्कूलक प्रवेश द्वारपर जीवन कक्काक परिवारमे भुमकम भेल।

चारि पीढ़ीसँ अबैत जीवन कक्काक एक पुरखियाह परिवारमे पिताक मृत्यु तहिये भेलैन जहिया जीवन काका तीन बर्खक छला। मुदा परिवारक जे रूपरंगक रोहाणी छल ओ एक समृद्धतम रूपमे छल। ओना, जीवन कक्काक माइक उम्र मात्र तेइस बरख छेलैन, जहिया ओ वैधव्य जिनगीमे प्रवेश केली। मुदा दू सन्तानक (बेटाक) आशा भविसक ड्योढ़ीपर प्रहरीक रूपमे आँखिक सोझ रहबे करैन। तैसंग दोसर आशा ईहो बनले छेलैन जे सिंहासिनीक (माने जीवन कक्काक भाए) अपन खास मौसी विघ्नवासिनी (सात भाए-बहिनमे सभसँ जेठ मृदुराशनी, बीचमे पाँच भाए, सभसँ छोट विघ्नवासिनी) विघ्नवासिनी सेहो अही गाममे (माने जीवन कक्काक गाममे) बसै छेली। सासुर एला साले भरिक पछाइत विघ्नवासिनी वैधव्य बनि अपन जिनगीक साठि बरख बिनु सन्ताने बीता चुकल छेली। मुदा माए सदृश सिंहासिनीक आगूमे ठाढ़ भेली। गोर-नार रंग, चौरस देह, मध्यम कद रहने भरल-पुरल शरीर विघ्नवासिनीक। कसमीरा सोन जकाँ माथक सभ केश अपन समरथाइक रंग बदैल चुकल छेलैन। आर्थिक रूपे सम्पन्न सेहो आ समाजिक रीत-रिवाजक सेहो सम्पन्ता छेलैन्हे। तँए गामक अधिकांश लोक 'मैयाँ' नामसँ सम्बोधित करैत रहैन। जेकरा जीवन काका दुनू भाँइ 'नानी मैयाँ' कहैत छेलैन। ओना, आजुक समाजक परिवेशमे अबैत बदलाउसँ लोक-लाजमे ह्रास भेल अछि। मुदा जइ समाजिक परिवेशक चर्च छी ओइ समाजमे लोक-लाज निष्कलुष विशाल रूपमे जीव रहल छल।

ओना, गाम समाजक बेवहारमे विविधता रहने समाजक हर मनुखकेँ शुभ्र जिनगी जीबैक धारणा सेहो अछिए। समुद्रे जकाँ समाज सेहो होइते अछि, जइमे घोंघा-सितुआक संग लाल-मोतीक बेवहार सेहो सभ दिनसँ आबिये रहल अछि। मुदा समाजक जे मूल रीत-रिवाज अछि सेहो कोनो-ने-कोनो रूपमे नइ जीवित अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। महजालक सूत जकाँ जँ कोनो टुटल अछि तँ कोनो-ने-कोनो जोड़ल सक्कत सेहो अछिए।

पिताक मृत्युक समय जीवन काका तीन बर्खक आ जेठ भाय- उमेदलाल पाँच बर्खक छल। मनुखक रूपमे माने परिवारमे जन संख्याक हिसाबसँ सेहो जीवन कक्काक परिवार सम्पन्न छेलैन्हे। जीवन कक्काक पिता- रघुवंशलाल दू भाए-बहिन। जेठ रूक्मिणी आ छोट रघुवंशलाल। ओना, समाजमे बाल-बिआहक चलैन रहने रघुवंशोलालक बिआह भऽ गेल छेलैन आ रूक्मिणीक बिआह सेहो भऽ गेल छल।

चालीस बर्ख पूर्व रूक्मिणीक सासुर-गाम कोसीक चपेटमे आबि गेल। शुरूमे पाँच-सात बेर सालमे बाढ़ि गाममे आएब शुरू भऽ गेल। कोसी धारसँ पच्छिम किसानपुर गाम! कोसी धारक झुकाव माने बाढ़िक बहाव, पच्छिम रूखिये होमए लगल। शुरूमे खेतक अन्न-पानिक क्षति होइत रहल, पछाइत गाछ-बिरीछ सुखए लगल। जे किसानपुर गाम गाछ-बिरीछसँ सुन्दर वन सदृश छल ओ धीरे-धीरे सुखि-सुखि उजाड़ हुअ लगल। ओना, किसानपुरमे जहिना जामबन्तो फलक गाछ छलतहिना जामबन्तो फूलो आ काठ-सुकाठक गाछ सेहो छेलैहे। तैसंग सुन्दरे वन जकाँ चन्दनसँ लऽ कऽ बगुरबोनी धरि सेहो छेलैहे। जनकक फुलवाड़ी-फलवाड़ी जकाँ फुलवाड़ी-फलवाड़ी सेहो छेलैहे। फलोमे आम-जामुन,लताम, बेल वनक संग खेतमे साले-साल उपजैत खीरा-गुरमीक संग फुइट-काँकैड़-तरभुज सेहो लुबैधते रहै छल। बारहो विरहिणी अन्नोक उपज सेहो होइते छल। कृत्रिम रूपमे खुनाएल पोखैर-इनारसँ सेहो किसानपुर सम्पन्न छेलैहे।

दुखोक सीमा होइ छइ। जाबे धरि रूक्मिणी किसानपुरमे बाढ़िक प्रकोपकेँ अंगेज सकली ताबे धरि अपन पुर्खाक घर-घराड़ी आ खेत-पथार दुखो काटि धेने रहली। मुदा जखन असहाज दुख हुअ लगलैन माने

खेतक उपजाक संग खेतो कटि-कटि बहता धार बनि गेलैन आ घर-घराड़ी चौरी सदृश बनि गेलैन तेकर बाद दुनू परानी- रूक्मिणी अपन दुनू बेटाक संग जे एकटा सात बर्खक आ दोसर चारि बर्खक छल अपन गाम किसानपुर छोड़ि देलैन। ओना, अपन चारू घरो खसि (धारमे कटि) पड़लैन, बीघा भरिक गाछी-कलम सेहो सुखि गेलैन। पनरह कट्ठाक पोखैर आ दलानक आगूक इनार सेहो कटानसँ नष्ट भऽ गेल छेलैन।

एक तँ ओहुना बेटीक दरकार माता-पिताक संग अछिए, तहूमे बिपैतिक मारल रूक्मिणी छेलीहे, अपन सासुर- किसानपुर छोड़िचारू परानी नैहर- लालपुर अबैक विचार केली। ओना, रूक्मिणीक मनमे नैहरक बासक प्रति आह्लाद रहैन मुदा पति- श्यामलालक मनमे रहैन जे दुनियाँमे केतौ बास करी मुदा सासुरक गाममे नहि बास करी। तँए दुनू परानीक विचारक बीच कनी-मनी दूरी रहबे करैन। मुदा स्वबस आ बेबसक सेहो अपन चास-बास होइते अछि। मानेजहिना स्वबसीक लेल चास-बास चाही तहिना चास-बास उजड़ने लोक बेवस भऽ स्वबससँ बेवस भइये जाइए। ओना, बेवसक बीच केना स्वबसी बनि जीवन धारण करब, ई दीगर बात भेल। जे मनुखक बिचड़ैत बुधिक बीच गोलानुमा[2] विवेकक बीच बिचड़ैत अछि। रूक्मिणी सपरिवार किसानपुर सँ लालपुर विदा भेली। लालपुर गामक सीमापर पहुँचते रूक्मिणीकेँ बुकौर लगि गेलैन। बुकौर लगैक कारण भेलैन जे जे गाम, माने नैहर, सँ माइयो-बाप (मातो-पिता) आ सरो-समाज दुरागमनमे अरियाति विदा केलैन, सासुर (किसानपुर) कें उजड़ने पुन: अही गाम (नैहर) क भेल। यएह सीमा (गामक सीमा) छी जैठाम जैठाम तक सभ अरियाति विदा केलैन। गामक सीमानपर एकटा पाखैर-गाछ रस्ते-कातमे अछि। ओकरे छाहैरमे चारू प्राणी रूक्मिणी बैस लालपुर गाम दिस देखए लगली। तही बीच लालपुरेक एक बेकती बजारसँ अबै छला। पाखैर-गाछ लग अबिते दुखमोचनो रूक्मिणीकेँ चिन्हलैन आ रूक्मिणी सेहो दुखमोचनकेँ चीन्हलक। चीन्हिते रूक्मिणी फफैक-फफैक कानैत बाजल-

“भैया हौ भैया, जइ गामसँ सभ विदा कऽ देने छेलह आइ ओही गामक आशा भेल हौ भैया।”

ओना, दुखमोचनकेँ बुझल जे किसानपुर कोसी धारमे कटि गेल तँए सभतूर रूक्मिणी लालपुर आएल अछि। दुखमोचन बाजल-

“बहिन, लोकेक आशा लोककेँ होइ छइ। तूँ ते सहजे अपन भाए-बापक ऐठाम एलँ हेन। कान जुनि, चल हमरा संगे।”

चारू गोरे रूक्मिणियो आ दुखमोचनो गाम दिस बढ़ल।

ओना, एहेन परिस्थितिमे अनेको रस्ता अछि, जेना रूक्मिणीकेँ अलगसँ बेवस्था करब। मुदा से नहि भेल। भाए-बहिन जकाँ रूक्मिणीक परिवार आ रघुवंशलालक परिवार सम्मिलित रूपमे रहए लगल। बाल-बिआहक चलैन रहने रूक्मिणीक दुनू बेटाक बिआह सेहो लालपुरेमे भेल। मुदा श्यामलालक मन अपन पैतृक भूमिक नष्टक सोगसँ दिनानुदिन खसैत गेलैन। ओना, धन-सम्पैतकेँ गौण बुझि मनुखकेँ अपन भविसक जिनगीक पूजा-अर्चना करक चाही मुदा से तँ समझदारीमे समाएल अछि जे कियो-कियो बुझबो करै छैथ आ कियो-कियो नहियोँ बुझै छैथ। श्यामलाल सेहो नहि बुझि सकला। किछु सालक पछाइत मरि गेला। ओना, धन-सम्पैतक संग पतिक मृत्यु रूक्मिणीक मनकेँ सेहो धकियबैत रहैन मुदा दुनू बेटा आ नैहरक परिवार रूक्मिणीक मनक विचारक टुटैत धारकेँ कोनो-ने-कोनो रूपमे बान्हि-छेक रखने रहलैन।

समय बीतल। रूक्मिणीक दुनू बेटाक दुरागमन सेहो भेलैन। भाइयो (रघुवंशलाल) जीबिते छेलैन। एक दिस पतिक बिछोह तँ दोसर दिस भाइक संग बेटा-पुतोहुक सहारा, रूक्मिणीकेँ भेटबे केलैन। मुदा जहिना कोनो रोग शरीरमे जन्म लऽ नहु-नहु बढ़ैत जाइए, जेकर अन्त मृत्युक रूपमे होइए तहिना रूक्मिणीकेँ सेहो भेलैन। लालपुर एला करीब पनरह बर्खक पछाइत रूक्मिणी मरि गेली। अपन धर्मक हिसाबसँ रघुवंशलाल घराड़ीक संग दस कट्ठा जोतसीम जमीन दुनू भागिनकेँ कीन देलखिन।

चालीस बर्खक पछाइत किसान्पुर गामसँ कोसी हटल। गामक खेत-पथार जगल माने उपजा-जोकर भेल। मुदा काश-पटेर-झौआ इत्यादिक वन सेहो स्वत: लगि गेल। अपन बाप-दादाक खेत-पथार जगने दुनू भाँइ- माने जीयालाल आ सियालाल अपन गाम- किसान्पुर जा कऽ रहैक विचार केलैन। मातृक-लालपुरसँचारि-पाँच दिनक खाइ-पीबैक सामान लऽ जा कोदारिसँ खेत-पथार बनबए लगला। मास दिनक मेहनतसँ एक बीघा उपजाउ खेत बनौलैन। तैबीच मनेजर[3], झौआ आ काश-पटेरक एकटा रहैक घर सेहो बना नेने छला। दुनू भाँइ- जीयालाल आ सीयालाल अपन पैतृक गाम चलि गेला। तइ समय जीवनलाल मिडिल स्कूलसँ निकैल हाइ स्कूलमे प्रवेश कऽ चुकल छला आ पिताक मुइना सेहो दस बर्ख भऽ चुकल छेलैन। जे परिवार दस बेकतीसँ सम्पन्न छल, माने सब तरहक (सभ उमेरक) रहने परिवार नीक जकाँ चलि रहल छल, ओ एकाएक टुटि कऽ तीन बेकतीपर माने दुनू भाँइ जीवन काका आ उमेदलाल कक्काक संग विधबा माएपर आबि अँटैक गेल।

दोसर घटना (भुमकम) जीवन कक्काक परिवारमे ई भेलैन जे अपन परिवारिक खेत ओते नइ रहैन जेतेक खेती परिवारमे होइत आबि रहल छेलैन। सभ दिन एक जोड़ बरद राखि एक हरक खेती होइत रहलैन। आजुक परिवेशमे खेतीक नव-नव तकनीक एने जहिना खेतक उपज बढ़ल तहिना खेतक काज सेहो बढ़ल। ओइ समय दसो बीधाक खेती असान छल किएक तँ धानक खेती मात्र मुख्य फसिल छल बाँकी फसिलक खेती ओहन नइ छल। गहुमक खेतीक वैज्ञानिक (आधुनिक) रूप नहि पकड़ने छल। रासायनिक खाद आ नव-नव उपजशील बीआक चरचो नहियेँ छल। मात्र धानक खेती असानीसँ होइत रहइ। बिहरिया हाल[4] भेला पछाइत किसान धानक बीआ पाड़ैत रहैथ, जे मास दिनसँ लऽ कऽ डेढ़-दू मास धरिक बीच रोपाउ रहै छल। तेकर अतिरिक्तो खडुहर (खौड़) बीआ खेतीसँ एक-डेढ़ मास आगू तक चलैत रहइ। रब्बीक खेती जे कातिकमे बाउग कएल जाइ छेलैओ खेतेमे छीटुआ बाउग होइ छेलइ। ओना, किछु दलिहनक खेती जेना बदाम टोभुआ सेहो होइत छल आ जोता सेहो होइत छल। जइ साल मघाइर बरखा[5] होइत छलतइ साल रब्बीक उपज नीक होइत छल आ जइ साल नइ होइत छलतइ साल दब होइत छल।

लालपुर गाममे पाहीपट्टीक (पाहीपट्टी भेल अनगौंआँ) जमीन बेसी छल माने गामक तीन-चौथाइ जमीन पाहीपट्टीक छल आ एक-चौथाइ गौंआँक। पाहीपट्टीबला अपन हर-बरद नइ रखने छला जइसँ गौंआँ सभ अदहा-अदहीक दरे बँटाइ खेती करै छला। जीवन कक्काक परिवारमे सेहो चारि बीघा बँटाइ खेत छेलैन। संयोग बनल, देशक स्वतंत्रताक किछु दिन पूर्वहि जमीनक अधिकार लेल उथल-पुथल शुरू भेल। अनगौंआँ सभ अपन-अपन आन गामक जमीन बेचि-बेचि अपना गाम दिस बढ़ला। लालपुरक जमीन सेहो बिकाएल,जे लालपुरेबला कीनलक। गौंआँक हाथ जमीन एने जीवन कक्काक जे बँटाइ जमीन छेलैन ओ छुटि गेलैन जइसँ उपज अधियापर चलि एलैन।

मिडिल स्कूलसँ टपला पछाइत जीवन काकाकेँ हाइ स्कूल प्रवेश करैक बीच परिवारमे दुनू घटना भेल छेलैन। हाइ स्कूलमे दृढ़ताक संग जीवन काका नाओं लिखौलैन जे एम.ए. तक जरूर पढ़ब। संजोग बनियेँ गेल छेलैन जे घरसँ (लालपुरसँ) पाँच-छह मीलक दूरीपर हाइ स्कूलक संग बी.ए. तकक कौलेज सेहो खुजिये गेल छल। जीवन कक्काक परिवारमे जाबे तक दुनू पिसियौत भाय रहै छेलैन ताबे तक खेतीक संग-संग नगद आमदनीक लेल महींस पोसब सेहो छेलैन, जे पिसियौत भायकेँ अपन गाम चलि गेने ओहो समाप्त भऽ गेलैन।

देशक अजादीक, माने उन्नैस साए साठि इस्वीक लगभगक समय छी। अखन धरि[6]माने पैछला पीढ़ी तक लालपुरमे अंग्रेजी शिक्षा नहि आएल छल...। मुदा संस्कृत शिक्षाक विकास भऽ चुकल छल। अजादीक बाद माने 1947 इस्वीक बाद जे पीढ़ी माने ऐगला पीढ़ी शिक्षाक क्षेत्रमे बढ़ल ओ अंग्रेजी शिक्षाक माध्यमसँ बढ़ल, जइसँ बी.ए. तकक डिग्रीक प्रवेश पौलक। अखन धरिक जे जीवन कक्काक परिवार रहलैन ओइमे जबरदस झमार पड़िये चुकल छेलैन। मुदा तैयो एतेक आशा तँ जीवन कक्काक मनमे रहबे करैन जे परिवारक हिसाबसँ जमीनो अछिए। किए तँ जे परिवार दस गोरेक छेलैन ओ तीन गोरेपर आबि गेल रहैन, भलेँ ओ बाले-बोध आ विधवेक किए ने हुअए। किसान जहिना सालक शुरूहेमे माने खेती करैक समयसँ पूर्वहि अपना मनमे जोड़ए लगै छैथ जे फल्लाँ खेतमे ई धान रोपबआफल्लाँ खेतमे ओ धान रोपब, चाहे गाछी-कलम लगौनिहार जहिना गाछ लगबैसँ पूर्वे मनमे रोपि लइ छैथ जे फल्लाँ-फल्लाँ आमक गाछ रोपब, चाहे कोनो बेपारी जहिना अपन कारोबार करैसँ पहिनहि मनमे रोपि लइ छैथ जे फल्लाँ-फल्लाँ वस्तुक कारोबार करब तहिना ने लोअर प्राइमरी स्कूल वा मिडिल स्कूलक बच्चा सेहो अपनामे रोपिते अछि जे डॉक्टरी पढ़ब, इंजीनिरिंग पढ़ब, वकालत पढ़ब इत्यादि-इत्यादि। अपन चढ़ैत-उतरैत परिवारक स्थितिकेँ जीवन काका तँ नीक जकाँ नहि बुझि पबै छला मुदा अपन जिनगीक विचार तँ मनमे उठिते छेलैन। मनमे जागि चुकल छेलैन जे अखन तक गामक शिक्षाक ऊँचाइक सीमा बी.ए. तक रहल, ओकरा बढ़ा हम एम.ए. जरूर बनाएब। जखने पैघ घर बनबैक विचार कियो मनमे रोपै छैथ तखने नमहर घराड़ियो आ बेसी समचोक ओरियानक पाछू लगबे करै छैथ।

समाजिक आ परिवारक जीवनमे (माने जेहेन वातावरण, अर्थात्संस्कार) जइ परिवारकेँ जेहेन वातावरण भेटैत अछि माने प्रतिकूलोमे जेहेन प्रतिकूल आ अनुकूलोमे जेहेन अनुकूल ओही हिसाबसँ ने ओइ परिवारक बच्चाक मनोदशा सेहो ओहि दिशा दिस नहु-नहु बढ़ि जाइ छइ। अदम्य साहस आ बिसवासक संग जीवन काका हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलैन।

आइ धरिक माने स्वतंत्रतासँ पूर्व धरिक जे समाजिक-परिवारिक जीवन रहल ओ जीवनक रहस्यसँ दूर हटैत गेल,जे परतंत्र शासनक हटबैक गुण छी, ओही अनुकूल उमेदलालक जीवन बनि गेल छेलैन जे विभीषण-रावण सदृश जीवन कक्काक पढ़ाइक बाधक बनि गेल छेलैन। भाय, दुख हुअए कि सुख, ओ तँ चाहे तरे-मुहेँ आकि ऊपरे-मुहेँ किछु-ने-किछु बढ़ैक अपन प्रभाव तँ छोड़िते अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहए।

संजोग बनल, हाइ स्कूल- जइमे मैट्रिक तक पढ़ाइ होइ छल, ओ हायर सेकेण्डरी बनि गेल। तइसँ पहिने कौलेजमे जे दू साल आइ.ए. आ बी.ए.क छल ओ बदैल कऽ एक साल प्री बनि गेल आ बी.ए. घुसैक कऽ तीन सालक बनि गेल। ओना, ओइ समयमे मैट्रिकोक आ ओइसँ ऊपरको क्लासक रिजल्ट प्राय:

आर्यवर्तआइण्डियन नेशन अखबारक माध्यमसँ निकलै छल। स्कूलक पहिल हायर सेकेण्डरी बैचक नीक रिजल्ट भेने स्कूलक संस्थापको आ शिक्षकोक संग विद्यार्थियो आ अभिभावकोक मनमे खुशीक लहैर उठिये गेल छल।

हायर सेकेण्डरीसँ पास केला पछाइत जीवन काका कौलेजमे नाओं लिखौलैन। कौलेजक वातावरण अनुकूल नहि रहितौ, कौलेजक माहवारी फीसक छूट भेटबे केलैन। हायर सेकेण्डरीसँ पास केला पछाइत जीवन कक्काक एडमिशन सोझे बी.ए. पार्ट वनमे भेलैन। मंजील दूर नहि, भाय! दुखसँ दुखाएल दुखी सुनू, जागरूकक जय निसचित अछि, गमाए चुकैत सुतैबला।

कौलेजक अध्ययनमे जीवन काका मनसँ हारि गेला। हारि ई गेला जे जइ विषयमे रूचि गड़ि चुकल छेलैन ओइ विषयक पढ़ाइ ओइ कौलेजमे नहि होइ छलजइ कौलेजमे पढ़ब सुविधाजनक रहैन। जीवन काकाकेँ घरपरसँ शिक्षण संस्थान पहुँच शिक्षा ग्रहण करब अनुकूल छेलैन मुदा घर छोड़ि, माने परिवारसँ अलग भऽ शिक्षा ग्रहण करब सोल्होअना प्रतिकूल रहैन। तेकर अनेको कारणमे तीन कारण प्रमुख छेलैन। पहिल, समाजिक वातावरण एते विषाक्त अछि जे जहिना मुँहपर बच्चाकेँअसिरवाद देनिहार जे सुबुध हेबाक दइ छल ओ परोछमे सुबुध देख जरबो करै छल जइसँ समाजमे छोट-पैघक बीच आगि लगले छल।दोसर, जेठ भाइक चरित्र एते निम्नसँ निम्नतर स्तरमे पहुँच गेल छेलैन जे भौयारीक बीच वैचारिक सम्बन्ध बनब असहज भऽ गेल छेलैन। तेसर, जइ परिवारकेँ उठबैले (परिवारेसँ समाज निर्मित होइए) जीवन काका अपन शक्ति समर्पित करए चाहै छला वएह नष्ट हेबाक कागारपर पहुँच चुकल छल तँए घर छोड़ब कठिन छेलैन।

ओना, जीवन काकाकेँ बी.ए.सँ आगू पढ़ैमे आर्थिक मजबूरी ओतेक नइ रहैन जेतेक वैचारिक। किएक तँ माए अपन नैहरक गहना पढ़ैक पाछू गमबैले तैयार भऽ चुकल छेलैन। माइक मनमे सदैत यएह नचैत छेलैन जे पढ़ि-लिखि बाल-बच्चा सुबोध बनैए जइसँ सुचालि पकैड़ सुशील बनि परिवारक सान चमकबैए। माता-पिताक यएह विचार ने परिवारक भविस निर्माणक नीव गाड़ैत चलैए। जी-जाँति जीवन काका प्राइवेटसँ अनार्सक तैयारी करए लगला। दोसर कौलेजसँ परीक्षा देबाक आदेश युनिवर्सिटीसँ भेट गेलैन। बी.ए. आनर्स प्राप्त करैत बिनु कोनो लागि-लपेटक जीवन काका एम.ए.मे नाओं लिखा लेलैन। ओना, ओइ समयमे- माने छठम-सातम दशकमे सभ जनै छल जे हाइ स्कूल जकाँ कौलेज नअ मास नहि चलि मात्र छअ मास चलैए। जइसँ दू बर्खक बाहरक जिनगी एक बर्ख भेल। तहूमे एक लखाइत नहि। बीचो-बीच दुनू चलैत, माने पढ़ाइयो आ छुटियो...।

एम.ए.मे प्रवेश करैसँ पहिनहि जीवन काका अपन किसानी जिनगीकेँ मनमे रोपि नेने छला। तेकर कारण छल जे जीवन कक्काक मनक मैलकेँ विचार तेना धोइ देलकैन जे पवित्र बनैत पवित्रतम बनि चुकल रहैन जइसँ विचार बनि गेल छेलैन जे जखन गूँह-मूत करैबला डॉक्टरकेँ समाजमे एते पूछ अछि, लोहा-लक्कर करैबला इंजीनियरकेँ एते पूछ अछि तखन कृषि कर्मी बनब कोना अधला? तहूमे जखन कृषि फार्म बनबैले पैछले पुरखा एतेक अरैज गेल छैथ जे अपना सिर्फ ओकरा करामाती चालि पकड़ा करामात करैक अछि तखन...। जीवनक असीम सम्भावना तँ कृषिमे अछिए। तोहूमे ओहन गीति गाइन केतबो भोला बाबाक नचारी गौती आ रहती गाम छोड़ि आन गाममे, तखन जेहेन नचारीक उधारी हेतैन से तँ रामजीकेँ सेहो दशरथजी अपन पत्रमे जनाइये देने छेलखिन।

एम.ए. करैसँ पहिने जीवन काका विचारिये नेने छला नोकरियोक अपन स्तर छइ। से नहि भेने तँ मनमे कुवाथ होइते छइ। कुवाथोकँ तँ अपन प्रभाव छइ। कियो कुवाथकँ हँसि-बाजि उड़ा दइए आ कियो कुवाथकँ हँसिया हँसि हँसा पचन करैए।

साठि बर्खक अपन जिनगीक अनुभवकँ जीवन काका ओइ सीमापर आनि ठाढ़ कऽ लेला जैठामसँ परिवारक अग्रिम पीढ़ीक शुरूआत होइए। अनायास मनमे एलैन जे अपन जिनगी तँ जिनगी जकाँ जीलौं, अखनो महाभारतक अभिमन्यु जकाँ मन बनले अछि। मुदा अपनो दायित्वक तँ सीमा अछिए। दुनू बेटा-पुतोहुपर नजैर बढ़लैन, बढ़िते जहिना धानक अधपकू चासपर थारी फेकने छिछलए लगैए, पोखरिक पानिपर झुटका फेकने ऊपरे-ऊपर छिछलैत अपन गणतव्य तक पहुँचैए तहिना जीवन कक्काक मन बेटा-पुतोहुपर सँ छिछलैत पोता-पीतीपर पहुँच समुच्चा परिवारपर छिछलए लगलैन।

हार-जीतक बीच सीमापर ठाढ़ जीवन काका अपन जिनगीक समीक्षा कऽ रहल छैथ। मारियो खेलौं, जहलो गेलौं,मारबो केलिऐ आ जहलो कटौलिऐ, यएह तँ जिनगी रहल। मुदा मारि किए खेलौं, जहल किए गेलौं आ मारलिऐ किए आ जहल किए केकरो कटौलिऐ..? ऐठाम आबि एकाएक विचार ठमैक गेलैन। अमती काँटक झोंझ जहिना काँटक होइए तहिना तँ बिनु काँटोक झोंझ होइते अछि। मुदा कोन झोझकँ केना पार कएल जाइए, ऐठाम आबि जीवन कक्काक मन बिहुसए लगलैन। जीवन कक्काक बिहुँसैत मन एकाएक फुरेफुरेलैन। नीक-बेजए आ हार-जीत तँ जनगीक बीच धारक दुनू कछेर छी, तैबीच काँटक खरोंच लगबे करत किने।

अपन आगूक पीढ़ीक दुनू बेटापर नजैर उठितेजीवन काकाकखनो ऊपर देखै छला तँ कखनो नजैर निच्चाँ उतैर जाइ छेलैन। मनमे अनायास उठलैन- जइ पीढ़ीकँ माने दुनू बेटाकँ एक बढ़्‌ धारक दिशामे बहाबैक छल ओ कहाँ भऽ सकल! की अनाड़ी कुम्हार जकाँ बरतन गढ़ैमे केतौ भूल भेल? जँ भूल भेल तँ ओही समय ने ओइ भूलकँ सुधारैक समय छलमुदा से भेल कहाँ..?

जिनगीक धारक बीच फुटैत मोनिक कारण जीवन कक्काक मनमे नीक जकाँ किछु आबिये ने रहल छेलैन। नजैर उठा जखन देखै छला तँ जेठ बेटा- सुशील आ छोट बेटा- कुशीलक बीच बुझिये ने पेब रहल छला जे दुनूक बीच एतेक दूरी केना बनि गेल? दूरी सिर्फ वैचारिके नहि, बेवहारिक सेहो बनबे कएल।

अपन जिनगीक क्रियापर जखन जीवन काका नजैर दौड़बैथ तँ अपन भूल केतौ ने बुझि पड़ैन। मुदा बिना भूल भेने एहेन परिणाम किए भेल? दुनू बेटाक बीच जखन माता-पिताक रूपमे सीमांकन करए लगलातखन जीवन काकाकँ अपन सीमापर नजैर पड़लैन। सीमापर नजैर पड़िते अपन दुनू परानीक बीच जीवनक बाट जखन सोझामे पड़लैन तखन मन मानि गेलैन जे दुनू परानीक बीच बेवहारिको दूरी अछिआ वैचारिको दूरी किछु-ने-किछु नहि अछि सेहो कना नइ मानल जाएत। मुदा जैठाम सभ कियो ऐ दुनियाँकँ अपन बुझि भ्रमण करैए तखन किछु-ने-किछु भ्रमित भइये जाइए। हेबो किए ने करत। जहिना बारह घन्टा धरि सुर्ज अकासमे उगि दुनियाँ देखैक इजोत पसारैए तहिना कि अन्धकार अपन अन्ध पसारि बाहर घन्टा अन्हार नइ पसारैए? पसारिते अछि। अही अन्हार-इजोतक बीच ने दुनियाँक यात्री दुनियाँक भ्रमण करैए।

विचारक दुनियाँमे भरमैत-भरमैत जीवन काका अपन जखन सीमांकन केलैन तखन बुझि पड़लैन जे अपन जे जिनगी अछि ओकरा जँ दोखी वा हारल मानब तँ निरदोखी वा जीतल सेहो मानए पड़त। दोसराक

ऊपर जँ सोल्होअना नजैर राखि देखैत रहब सेहो तँ सम्भव नहियेँ अछि। अपनो तँ हाथ-पएर लऽ कऽ किछु करैये-ले आएल छी।

अन्तो-अन्त जीवन काका अपन जिनगीकेँ नहियेँ सोझरा पेला जे दोखी बनि जीबै छी आकि निरदोखी बनि। माने ई जे हारल जिनगी जीला आकि जीतल जिनगी जीला। जखन दोख-निरदोखक निर्णये नहि हएत तखन जिनगीक हार-जीत बुझब केना?

q

शब्द संख्या : 3191, तिथि : 24जून2018

बापक चलैत

सरकारी होहामे हमहूँ पुलिसक हाथ चढ़ि गेलौं। 'सरकारी होहा'क माने भेल जे राज्यमे शराब बन्दीक कानूनो बनल आ लागूओ भेल। ओना, बहुतो एहेन कानून बनले अछि जइसँ जनहितकेँ लाभ होएत, मुदा ओइ सभकेँ ठण्ढा वस्तामे रखि देल गेल अछि जइसँ टिभिका लागू भेने असरदार नहियेँक बरबैर अछि। खाएर जे अछि मुदा अन्यायिक प्रति न्यायिक कानूनी बेवस्था नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। से तँ अछिए, भलेँ लाभ जे हौ वा लाभक बदला हानियेँ भऽ जाउई दीगर बात भेल।

ओना, शराबक कारोबार अपन बड़ नमहर नहियेँ अछि मुदा तैयो दस-पनरह हजार मासक कमाइ भइये जाइए। अपने बनबै छी आ घरेपर बेचबो करै छी। ने केतौ जाइ-अबैक खगता होइए आ ने वेपारी जकाँ एजेन्टे-एजेंसीक जरूरत पड़ैए। छोट-मोट कारोबार रहने थानामे कमीशन तँ नहि भरए पड़ैए मुदा कहियो काल रोहू माछे आकि मुर्गे-मुर्गी नइ पहुँचाबए पड़ैए सेहो बात नहियेँ अछि। तैसंग जँ थानाक सिपाहीए वा बड़े-बाबू आकि छोटे-बाबू, गाममे प्रवेश करै छैथ तँ चाह-पानक खर्च तँ होइते अछि। ओना, सलामे-मालकीमे काज ससैर जाइते अछि।

अपना विषयमे जखन निचेनमे अपने विचारए लगै छी तँ अपन पेशासँ घृणा होइते अछि, मुदा परिस्थितिये ओहन बनि गेल अछि जे मजबुरी कहियौ कि लाचारी, करए पड़िये रहल अछि।

शुरूमे, जहिया हाइ स्कूलक बोर्ड परीक्षामे फेल केलौं, तहिये पढ़ाइ दिससँ मन भिन-भिना गेल, तँए ने दोहरा कऽ बोर्ड परीक्षा देलौं आ ने आगू पढ़ैक विचारे मनमे रखलौं। संजोग नीक बैसल जे जखन दसमामे पढ़ैत रही तखने बिआहो भऽ गेल। पढ़ल-लिखल लड़िकाक रूपमे बिआह भेल। जँ से नइ भेल रहैत तँ जेना लड़की सभ पढ़ए लगल अछि आ आई-ए-बी.ए. केला पछाइत बिआह करए लगल अछि, तेनामे बिआहसँ छँटाइये जइतौं, मुदा से माता-पिताक गुण-धरमे रच्छ रहल।

पढ़ाइ छोड़ला पछाइत नेतागिरी शुरू केलौं। माता-पिता जीबै छला, घर-परिवारक कोनो धनि-फिकिर नहियेँ छल। दस बर्खक अन्तरालमे पाँचटा बेटी भेल। ओनाअपना मनमे तहिये, माने दूटा बेटी भेला पछातिये

भेल जे समय-साल तेते खराप भऽ गेल अछि जे एकोटा बेटीक बिआह करैमे माता-पिताक मुसरा ढील भइये जाइ छैन, तैठाम दूटा तँ सहजे ओकर दोबर भेल! मुदा से अपन विचार नइ चलल, माता-पिताक विचारक आगू अपन विचारकेँ कण्ठ मोकि बरदास केलौं। ओना, मातो-पिता अपन विचारमे संशोधन कइये नेने छला जे जखने पोता हएत तखने परिवार नियोजन करा देबइ। दोसर-तेसर पोताक आशा, दहेजक आमदनी दुआरे नइ राखब...। अपनो मनमे भेल जे कुल-खनदान बँचबैले तँ एकोटा बेटाक जरूरत अछिए। अही आशा-बाटीमे पाँचटा बेटी भऽ गेल। मातो-पिता बुढ़ाइये गेला। ओना, साठि बर्खसँ अधिक उमेर नइ भेल छेलैन, मुदा हमरा सन-सन परिवारमे तँ चालिस बर्खक पछातिये लोक घपचालिस हुअ लगैए। जँ संजोगवश मृत्यु नहियोँ भेलैन तैयो रोगसँ रोगाइये जाइ छैथ। जइ सेवा करैमे बेटा-पुतोहुक दम खराइते अछि। ओइ दम खराएबसँ नीक मरिये जाएब। मुइला पछाइत एतबे ने हएत जे कर्जा-बर्जा लऽ कऽ सराध करए पड़त, से तँ कोनो धरानी लोक पुराइये लइए। ओना, गाम-घर केतबो गरीब भेल अछि तैयो पढ़ै-लिखै वा बर-बेमारीमे लोककेँ कर्जा नइ भेटौ, मुदा माए-बापक सराध-ले कर्जा भेटते अछि। जँ से नइ भेटत तँ दसो दिनमे पँच-पँच हजार पंचकेँ भोज खुआएब पार लगत। तहूमे मरला-जरौला पछाइत चारि दिन तक सारा झँपिल नइ जाइए, आ जाबे सारा नहि झँपाएत ताबे सराधक किरिये-कर्म आकि भोजे-भातक विचारे आकि ओरियाने थोड़े कएल जाएत। मुइला पछाइत जहिना पाछूसँ चारि दिन कटि जाइए तहिना तेरहा सराधमे चारि दिन आगूसँ सेहो कटिये जाइए। माने दसम दिन नह-केश होइए, एगारम दिन पहिल सराध, बारहम दिन दोसर सराध, तेरहम दिन सत्यनारायण भगवानक पूजाक पछातिये ने मुक्ति भेटैए।

साले भरिक आगू-पाछू माइयो मरि गेली आ पितो मरि गेला। सोल्होअना परिवारक भार माथपर आबि गेल। तइसँ पहिने पत्नी चेतौनी दऽ देने छेली जे एना जे नर-बहतर जकाँ, भरि दिन वौआइत रहै छी तइसँ बेटीक बिआह हएत आकि अपन गुजरो चलत। तहूमे आब लोक बेटियोकेँ पढ़बए लगल अछि, तैठाम अपने नइ पढ़ाएब से लोक नीक कहत...। मुदा तेकर कान-बात नइ देलौं। एते तँ बिसवास बनले ने अछि जे जे भगवान जन्म दऽ खाइले मुँह चिरलैन से अहारोक ओरियान ने करता।

ओना, थानो-पुलिसक दोख नहियेँ छेलैन किएक तँ ओ अपना विचारे आबि कऽ नइ पकड़ने छला, गामेक लोक सभ फँसैने छल। गामक लोक फँसौलक आकि अपन चालिये फँसलौं से अखन तक भाँजपर नइ चढ़ल अछि। गौंआँकेँ किए दोख देबैन, सरकारक कानूने कड़गर छल। पुलिसक जिला कार्यालयसँ तेहेन आदेश थानाक बड़ाबाबूकेँ एलैन जे नोकरी दॉवपर चढ़ि गेल छेलैन तहूमे जिलाक पुलिस सेहो आबि गेलैन। अपने तँ पकड़ा गेलौं, मुदा घरवाली चौकस छथिये, ओ आहे-माहे, कानब-खिजब छोड़ि दारू बनबैक सभ समचाकेँ निपत्ता कऽ लेलैन। जँ से नइ केने रहितैथ तँ अनेरे मोटक संग अपनो जइतौं। सिपाहीक हाथमे पड़ला पछातियो तिनको भरि मन नइ घबड़ाएल। आ ने अनका जकाँ सिपाहीकेँ चकमा दऽ कऽ भगैयेक परियास केलौं। किए तँ सिपाही पकैड़ कऽ केतए लऽ जाएत- जहले ने, से तँ बुझले अछि। कोनो कि आइये जाइ छी, आकि नियमे अछि जे शराबक कारोबारमे पकड़ाउ, तीस दिनक पछाइत अपने अपराध कबूल लिअ। लगले एक मासक सजाए हएत, से पुरिये गेल रहत, निचेनसँ चलि आउ। तहूमे जँ टटका-टटकी दस-पाँच दिनक जेल हुअए तँ ओ आरो बेसी नीक, किएक तँ बिना आन-आन ऑफिसक कागजे केसक कारोबार नहियेँ बढ़ैए, तेकरा तैयार करैमे मास दिन समयो लगिये जाइए आ खर्चाक संग पैरवीकारक समय सेहो लगि जाइए।

संजोग तोहूसँ बेसी नीक भेल। ओ भेल जे तीन दिन पहिनहि एकटा गौँआँ-संगी सेहो जहल आएल छैथ। ओहो एला अही नवका कानूनमे।[7] ओना, धरमागती बात अछि जे ओ[8] ने शराबक घन्धा करै छैथ आ ने पीबे करै छैथ,मुदा पीआकोसँ बेसी निशाँ चढ़ल रहै छैन, से बात जरूर अछि। केकरो गारि-कथा पढ़ब रोज-मर्राक काज छैन। कोनो बात की केतौ छिपल रहैए, काने-कान निच्चाँ-ऊपर सगतैर पसरिये गेल छेलैन, जइसँ थानो कनखरल रहबे करैन। गड़पाबि जहिना बिलाइ बाझपर झँपटैए, जेकरा लोक धोखासँ बाघ कहै छै सएह भेल। कनखैर कऽ थानाक बड़ाबाबू गोविन्दकेँ पकड़लैन। खाएर जे जेतए हुअए, अपने तँ अपन ने ओरियान करब।

रामपट्टी जेल पहुँचलौं। कहिया केतए-सँ मधुबनी सब्डिविजनक जहल जे आँटा-चक्कीक घर छल, तइसँ नीक रामपट्टी जहल अछिए। ऐठाम गेनो-तेनो खेलाइक जगह छइहे। मधुबनीक जहल तँ तेहेन छल जे लोक साइकिलो भरि ताव नइ चला सकैए।

जहलक रस्तेमे हम रही तखने गोविन्दकेँ जानकारी भेट गेलैन जे राधेश्याम सेहो आबि रहल अछि, तँए ओहो कान ठाढ़ केने जे जखने जहलक गेटक फाटक टपत तखने ओकरा अपना संगे लऽ आनब आ अपने संग राखब, नइ तँ तेहेन केसमे आएल अछि जे पर-पैखाना साफ करैसँ लऽ कऽ पानि भरब, झाड़ू देबक संग आरो-आरो जे काज अछि, सभ करौत।

ओना, गाममे गोविन्दक संग विचारो आ समाजिक बेवहारोमे सभ दिन खटपटे रहै छल मुदा जहल तँ जहल छी,ओइठाम गामक झगड़ा किए रहत।

जहलक गेट टपिते गोविन्दसँ भेँट भऽ गेल। भेँट होइते गोविन्द कहलैन-

“राधेश्याम, बाहरक लोक जहलकेँ हौआ बनौने अछि मुदा से सभ किछु ने अछि।”

अपनो केते बेर जहल गेले छीतँए बुझल-गमल अछिए, मुदा तैयो मनमे कनी शंका होइते रहए जे पहिने ने एक मासक भीतरे छुटि कऽ आबि जाइ छेलौं।मुदा अखन तँ से नहि, कानूनो कड़गर बनि गेल अछि तँए कहिया छुटब कहिया नहि...।सएह चिन्ता मनकेँ पकड़ने छल। फेर मनमे ईहो हुअए जे जखन जहल आबिये गेलौं तखन डरबुक बनि कऽ रहब सेहो नीक नहियेँ हएत। जखने मुँह दुब्बर जकाँ रहब तखने सभ भरि-भरि राति जँतेबे करत। ओना, जहलक हिसाब सेहो गाम-घरसँ उन्टा अछिए। जे जेहेन अपराध केने रहल ओकर पूछ ओही हिसाबसँ होइ छइ। ओना, शराबक कारोबारमे पहिल बेर जहल आएल छी। ऐसँ पहिने जे आएलो छेलौं से नेतागिरीमे। कहियो कोसी नहर बनबैक सबाल लऽ कऽ, तँ कहियोभूमिहीनकेँ बासडीहक पर्चाक सबालपर, तँ कहियो बटाइदारीक सबालपर,मुदा ऐबेर से नहि, ऐबेर शराबक कारोबारीक रूपमे जहल आएल छी, तँए मनमे कनी अपनो ग्लानि होइते अछि।

जहिना आन-आनकेँ जहलमे पहिल दिनक रौतुका भोजन नइ भेटैए तहिना अपनो नइ भेटल। मुदा गोविन्द एते सतरकी केलैन जे अपने खाना दोबरा कऽ लऽ अनलैन जइमे हमरो खाइले देलैन। खेनाइ खेला पछाइत जखन दुनू गौँआँ एकठाम ओछाइपर सुतैले गेलौं, तखन गाम-घरक गप-सप्प चलए लगल। गोविन्दोकेँ बुझले छैन जे राधेश्याम दारूक कारोबार आइये नहि, केतेको दिनसँ कऽ रहल अछि, तँए जँ जहल आएल तँ उचिते आएल, मुदा हम तँ कारोबारक कोन गप जे पीबो ने करै छी। हँ, एते जरूर अछि जे कनी-मनी अफीम खाइ छी। ओ तँ शराब छी नहि। अपने बाड़ीमे पोस्ता-दानाक गाछ रोपि ओइसँ रस चुबा अफीम बना लइ

छी आ वएह चौबीस घन्टामे दू बेर एक-एक केराउ-बरबैर खाइ छी आ चौबीसो घन्टा बम-बम करैत रहै छी...।

गोविन्द बजला-

"राधेश्याम, जेहेन सरकार आन्हर अछि तेहने ओकर कानून सेहो आन्हर छइ!"

गोविन्दक विचारकेँ केना नइ समर्थन दैतिऐन, एक तँ वेचारा साधु-सन्त जकाँ अपन खेनाइ बाँटि कऽ खुऔलैन,तैपर अपना लग सुतैक जगहक ओरियान सेहो केलैन, तैठाम जे हम टटके निमक-हराम भऽ जाइ से उचित हएत। जहलक आन-आन कोठरीमे लोक पतियानी लगा कऽ दुनू सिरहौने माने एक आदमी पूब सिरहौने तँ दोसर पच्छिम सिरहौने सुतैए, तैठाम जँ एक सिरहौने सुतैबला जगह भेल से तँ गोविन्देक चलैत ने। तँए, सोचि-विचारि कऽ बजलौं-

"गोविन्द भाय! सरकार की कोनो साधारण आन्हर अछि, एकदम निपट आन्हर अछि।"

गामक जे मनो-मलिन गोविन्दक संग छल से बुझि पड़ल जे गोविन्द भरिसक बिसैर गेल। बिसैर गेल आकि छोड़ि देलक से तँ गोविन्द जानैथ, मुदा गौंआँक जे दायित्व होइए तइमे मिसियो भरि कसैर वेचारे नहि रखलैन।

भिनसरमे वार्डक गेट खुजिते कैदी सभ पैखाना दिस दौड़ैए। कैदीक अनुपातमे पैखाना जाइक बेवस्था कम अछिए। जइसँ हम पहिने जाएब, तँ हम पहिने जाएब, तइले पटका-पटकी हएब सोभाविके अछि। ओना, अखन धरिक अपन आदत पैखाना जाइक, वएह रहल जे जहलेमे सिखलौं। ओ ई जे बाहरक लोक जकाँ जहलक लोककेँ थोड़े काज रहैए जे समयपर पुरबइ पड़तै। जइसँ समयपर पैखाना जाएब सेहो अनिवार्ये-रूटिंगमे रहत। माने ई जे जहलक हिसाबसँ चलए पड़ैए। बाहर जकाँ ने कोनो काज रहल आ ने कोनो चिन्ते रहल। जखन सएह अछि तखन छोट-छीन काज-ले जे लोक भोरे-भोर पटका-पटकी करैए से तँ बुड़िबकीए भेल किने। जखन बुझले-गमल बात अछि जे नप्पासँ नापि जलखैयो भेटैए आ खेनाइयो भेटैए, तखन ओकरा संयमित करब कोन बड़का भारी काज भेल। कोनो कि भोज खेलहा रहैए जे बेकाबू हएत। भेल तँ एकसँ डेढ़ घन्टाक पछाइत पैखाना कोठरी खालीए-खाली भऽ जाइए, तखन निचेनसँ ने किए लोक जाएत। जखन जहलेमे छी तखनो जँ निचेनसँ अपन किरिया-कर्म नइ करब तखन गाम-घरमे कएल हएत। मुदा से आदत, जे शुरूमे बनल ओ अखनो अछिए। अन्तर एतबे अछि जे अपन जिनगीक क्रिया-कलाप समैयक रूपेँ बना नेने छी। एहेन रूप बनिये गेल अछि जइसँ ने जहलेमे कोनो बाधा होइए आ ने गामेमे कोनो बाधा होइए।

जहलक गोदाममे बदाम सठि गेल छल तँए चूड़े जलखै भेटल। राति भरिक विश्रामक पछाइत मनो पोखरिक पानि जकाँ थीर भइये गेल छल। थीरो केना ने होइत, मनो तँ मानियेँ लेलक जे जहलमे छी...। जलखैक चूड़ा देख बजलौं-

"गोविन्द भाय, जेतबे चूड़ा अछि तेतबो जँ दहियो रहैत तँ अपना इलाकाक लोक उपकैर-उपकैर जहलो अबैत आ ऐला पछाइत निकलैले तैयारो ने होइत।"

गोविन्द बुझि गेला जे राधेश्याम तिरहुतिया चूड़ा-दहीक बात बाजल हेन, तँए ओ कोनो काने-बात ने देलैन। अपनो मुँह अनेरे बन्न भऽ गेल। किए तँ जेना शब्द-वाण फेकलौं तहिना जँ उत्तरो अबैत तखन ने बात-कटौवैल होइत, से तँ भेल नहि। गोविन्द भाय धियाने ने देलैन जे किछु बजितैथ। चुपा-चुपी पसैर गेल। वार्डसँ कैदी सभ निकैल-निकैल अपन-अपन जीवन-घन्धामे लगि गेल छला। हमहूँ दुनू गोरे एकठाम बैसल रही। तही काल एक बेकती लोटा नेने कलपर जाइ छल। हुनका देखबैत गोविन्द भाय पुछलैन-

"राधेश्याम, ओइ लोटाबलाकेँ चिन्है छहक?"

आँखि उठा हुनका दिस तकलौं तँ चीन्हिमे नइ एला, कहलयैन-

"नइ।"

गोविन्द भाय बजला-

"तोरे अपेछितक बेटा छिअ।"

'अपेछितक बेटा'सुनि मन चौंकल। चौंकते बजलौं-

"भाय, अहाँसँ ओकरा चिन्हा-परिचय..?"

गोविन्द बजला-

"हँ, गामेसँ अछि। ओकील साहैबक बेटा छैथ, सुलेमान नाओं छिऐन।"

बजलौं-

"कोन ओकील साहैब?"

गोविन्द बजला-

"सुलतान साहैब।"

'सुलतान साहैब'क नाओं सुनिते विचारक संग मनो चकभौर लेलक। चकभौर ई जे सुलतान साहैबक संग नेतागिरीक सम्बन्ध बहुत दिन धरि रहल। अखनो कनी-मनी ओ नेतागिरी करिते छैथ, हम सोलहन्नी छोड़ि देलौं तइसँ भेँटो-घाँट कमिये गेल। दोसर ईहो भेल जे ओ कोर्टमे वकालत करै छैथ तँए हुनका दसटा गप-सप्प करैबला लोक लगमे रहिते छैन, हमरा से नहियेँ अछि। तहूमे तेहेन धन्धा करै छी जे दोकानपर पीआक सभकेँ उपकैर-उपकैर कऽ पीऐबतो छी आ तहूमे सँ कियो-कियो पीब कऽ गीतो गबैए आ कियो-कियो गरिऐबो करैए।

कलपर सँ सुलेमान घुमल कि गोविन्द भाय शोर पाड़ैत कहलखिन-

"सुलेमान, एमहर अबिहह।"

जहिना गोविन्द भाय कहलखिन तहिना सुलेमान एला। अबिते गोविन्द भाय हमरा देखबैत सुलेमानकेँ कहलखिन-

"तोरे पिताजीक संगी छथुन। दारू कारोबारमे एला अछि।"

'दारू कारोबार' सुनि अपना कनी लाजो भेल मुदा जँ दुइये गोरे रहितौ तखन तँ उन्टा कऽ कहितिऐन जे अफीमसँ की कड़गर हमर दारू अछि, मुदा तेहाला लग अशिष्ट जकाँ बाजबो नीक नहियेँ होएत, तँए चुपे रहलौं।

पिताजीक संगी सुनि सुलेमानक आँखि नोरसँ डबडबा गेलइ। नोर भरल नयना, नहुँए-नहुँए ललिया लगलै। ललियाइत-ललियाइत लाल भऽ गेलइ। मुदा बाजल किछु ने।

बजलौं-

''बौआ, की नाम भेल?''

बाजल-

''सुलेमान।''

पुछलिऐ-

''सुलतान साहैबक बेटा छी?''

पिताक नाओं सुनिते सुलेमान फफैक-फफैक कऽ कानए लगल। कानब देख अपनो आँखि नोरसँ भरि गेल। मुदा बेटी-विदागरी जकाँ जँ सभ कननिहारे हएब तखन एक लोटा पानियोँ सीमाकातमे बेटीकेँ के पिऔत..! अपन नोरकेँ धोतीक खूटसँ पोछि मन सक्कत केलौं। सकताइते मुँह फुटल-

''कन्नेसँ थोड़े किछु हएत। किए जहल एलौं? केसक की हाल अछि?''

सुलेमानकेँ जेना कनी सबुर भेलइ। सबुरक कारण पिताक दोस्तसँ मिलब छेलै आकि केसक कीड़ा बुझलक से तँ सुलेमाने जानए, मुदा अपना बुझि पड़ल जे पानिमे डुमैतकेँ खढ़ोक सहारा देख वेचाराकेँ जनु जान बँचैक सम्भावना बुझि पड़लै। हमरा मुँह दिस तकैत सुलेमान बाजल-

''दोस चचा! मर्डर केसमे आजन्म सजाए भऽ गेल अछि।''

'मर्डर केसमे आजन्म सजाए भऽ गेल अछि' कानमे पड़िते जेना माथा सुन्न भऽ गेल। तरे-तर मन कलैप उठल, बाप रे एकर तँ जिनगीए बिलैट जेतइ! मुदा अखन सोचैये-विचारै आकि चिन्ते-मनन करैक समय थोड़े छी। अखन तँ गप-सप्प कऽ रहल छी तँए गप-सप्पक क्रम पकैड़ ने क्रमित होइत चलब...। बजलौं-

''केहेन मर्डर केस अछि? अनठेकानी केतौ फँसौल गेल छी आकि सचमुच मर्डर केने छी?''

'सचमुच' सुनि सुलेमान सिहैर गेल। सिहरैत अपन दोख टारैत बाजल-

''दोस चचा, अहाँ लग झूठ केना बाजब, तहूमे गोविन्द चचा सेहो छैथ। पिताजीक कपारपर जेना शैतान सवार भऽ गेल छेलैन तहिना फरसा लऽ कऽ निकैल गेला। हम चुपचाप देखैत रहितौं से नीक होइत। ओहीमे चचेरा भाइक मर्डर भऽ गेल।''

बजलौं-

''कनी सेरिया कऽ बाजू।''

सुलेमान बाजल-

''चचाजी, अपने परिवारक चचेरा भाइक हिस्सा हड़पैक विचार पिताजीकेँ मनमे चढ़ि गेलैन।''

सुलतान साहैबकेँ दू भैयारीमे साठि बीघा जमीन छैन। जहिना निच्चाँ पाँचो बीघा जमीनबला जेकर जन-बोनिहारक हाथे काज होइ छै, आ ऊपरक तँ ठेकाने ने अछि परिवारक धिया-पुताकेँ भोगक चस्की लगि जाइ छै तहिना सुलतान साहैबकेँ सेहो चस्की लगि गेलैन। ओना, चस्कियो रंग-बिरंगक अछिए। केकरो जुआक चस्की, तँ केकरो बैंक-बैलेंसक चस्की, केकरो खाइक चस्की, तँ केकरो पीबैक चस्की, तहिना केकरो मेला-ठेला देखैक चस्की, तँ केकरो रण्डी-बेश्या इत्यादि कोनो-ने-कोनो चस्की रहिते अछि। मुदा सुलतान साहैबकेँ से एकाकी चस्की नहि, जहिना सम्पैत बटोरैक चस्की तहिना वेश्यालयक चस्की आ तहिना खाइयो-पीबैक चस्की सेहो लगले छेलैन। माने भेल जे मध्यम श्रेणीक परिवारक धिया-पुताकेँ जहिना गोटि-पङ्गरा चस्कीमे मन चसैक जाइ छै तहिना द्रोपदीक पतिक समूह जकाँ सुलतान साहैब भोगक चस्कीमे चसैक गेला। जइसँ मानवीय सम्बन्धक बोधक विचार कुविचारमे विलीन भऽ गेलैन,जइसँ परिवारिक वा समाजिक सम्बन्धक बोध मनसँ मेटा गेल छेलैन। जँ से रहितैन तँ पिताक ओ गरिमा जरूर मनमे रहितैन जे पिताक दायित्व बनैए जे बेटा-बेटीक ऊपर ने अपन जीवनक एक पाइक रीन-पैंच रहए दिऐ आ ने पैंच-उधार केने रही। परिवार चलैक क्रमिक जे दायित्व अछि ओ सरपट रस्ते समगम भऽ सम्हारैत चली। खाएर जे जेतए अछि से तेतइ ने फुलाएत-फड़त।

बजलौं-

“बौआ, तोहरबिआह भेल छह?”

सुलेमान-

“हँ, दूटा बेटा-बेटी अछि।”

ठनका जकाँ मनमे खसल। खसल ई जे पिताक चलैत बेटा-पोता सबहक जिनगीक हत्या भऽ गेल..! पचीस बर्खक औरतक (पुतोहुक) जहिना भेल तहिना सताइस बर्खक बेटाक भेल, तैसंग दुनू पोता-पोतीकेँ के देखनिहार हएत। जे पिता अपने वकालत कऽ रहला अछि, जीवनक अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छैथ, अखन डिष्ट्रिक कोर्टक सजाकेँ हाइ कोर्टमे अपील भेने, जमानत दए देने छैन, तहिना सुप्रीम कोर्ट तक हेबे करतैन जइसँ फाँके-फाँक अपने बँचल रहि जिनगीक अन्त करता, मुदा जइ बेटाक ऊपरमे हत्याक पूर्ण दोष साबित भऽ चुकल अछि ओकर की गति हएत..!

तोष-भरोस दैत बजलौं-

“की करबै, देखै नइ छी हमहूँ दारूक कारोबारमे जहल काटि रहल छी। सबहक देखनिहार भगवान छैथ। ओ की कोनो बेइमान छैथ जे अनका देखथिन आ अपना-सभकेँ नइ देखता।”

सुलेमान बाजल-

“अखन जाइ छी चचा। कनीकालमे फेर आएब।”

q

शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20अप्रैल2018

---

[1]गाड़ा माने अशौच वस्त्र फेकल

[2]ठास वस्तु

[3]एक प्रकारक गाछ

[4]जेठमे अगता बरखा

[5]जाड़क मासमे बरखा

[6]1947इस्वी

[7]शराब बन्दी

[8]संगी

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३. पद्य

३.१. उमेश पासवान- कविता

३.२.प्रीतम कुमार निषादक किछु कविता

३.३.डॉ. शिवकुमार प्रसाद- किछु कविता

३.४.डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (रजनी छाबड़ाक मूल हिन्दीसँ)

उमेश पासवान

कविता

ई की होइ छै

थानापर रही हम
सुखल रहए मोन
शनि दिनक बात अछि
पाँच बजे साहित्य अकादेमीसँ

आएल हमरा फोन

घर जाइ माइक
पएर छुइब
हम कहलिऐ-
भेटल साहित्य अकादेमी पुरस्कार
माए कहलकै-
ई की होइ छइ
अइमे पाइ लगै छइ
आकि पाइ दइ छइ
सभकेँ भेटै छइ
ढौआ-कौरी
तोरा भेटलौ पुरस्कार!

जो रे कपर-जरूआ
तोहर कामे रहै छौ बेकार
केत्ता सालसँ डिबियाक
सभटा तेल जरौलेँ
हमरा मोन छैल जे तूँ डाक्टर बनितेँ
रौदमे जरल देहक सौख-सेहन्ता पुरा करितेँ
बन्हकी लागल खेत छोड़ैबतेँ
मुँह-पेट बान्हि तोरा पढ़ेलियौ
बनि गेलेँ चौकीदार
आब हम ई की सुनि रहल छी
ई की होइ छै साहित्यकार
साहित्य अकादेमी पुरस्कर..?

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

प्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

गीतल

आब अपनो मोन दैए
उपराग कहियो-कहियो।
इहलोक हाक पारए
करू त्याग कहियो-कहियो।
विषधर औ अजगरो सभ
दुबकल छै गाम घरमे। 2।
निसबद्ध सूइत कएलौं
रतिजाग कहियो-कहियो।।

निकहा विचार एक्खन
सुनए कहाँ केओ चाहए- 2
बूढ़ो-पुरान सुनबए
खटराग कहियो-कहियो।।
नवतुर कुसंगतिसँ
बेरथे बमैक बौड़ए- 2
आगत भविष्य आंकए
दुरभाग कहियो-कहियो।।
बुधियारो गप्प गढ़ए
गोष्ठी सभामे अगबे- 2
स्वारथ सेहन्ते समटए
सिरपाग कहियो-कहियो।।

मिथिला सपूत सम्हरू
एखनो सुहरदे भावे- 2
तखने सुनाओत प्रीतम
अनुराग कहियो-कहियो।

ejournal 'विदेह' २५४ म अंक १५ जुलाइ २०१८ (वर्ष ११ मास १२७ अंक २५४) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

गौंआँ-गीतल

गौंआँ समाज बाजए कलजुग बेकार एलै।
पुरखा सभहक कहबी सभटा देखार भेलै।।
गौंआँ-समाज... समाज...

देवता बनैत सभ केओ मनुक्खोसँ होइए ऊपर।
पूजा नमाज देखबए निकहा विचार गेलै।
पुरखा... गौंआँ...।

जहिँ-तहिँ देखै छी सनकी, मम्मत सिनेह कानए
बिन बातो-के बतंगर अँगना-दुआर खेलै
पुरखा... गौंआँ...।

नेतघट्ठू नेता बनि कऽ जनताकेँ दैए धोखा
करबए ठकुरसोहाती सप्पत उचार गेलै
पुरखा... गौंआँ...।

सरकारो भऽ बेमातर दरखासो नहि पढ़ैए
घुसहा नदीमे उबडुब प्रीतम पुकार हेलै...।
पुरखा... गौंआँ...।
¦

हाय हौ हितलग

सौंसे गाम हितारे तैयो खेत अफारे
बेर-कुबेरक हित लग मीता सभटा भेल देखारे
सौंसे गाम हितारे...।।
तहिना मिथिलाक बुझनुक बाबू...।
ऐंठैत जुग दुत्कारे...।
सौंसे गाम हितारे...।। 0।।

एक तँ धरती दिन-दिन रूसए
दोसर दैबो करए कमाल
ताहुसँ बढ़ि कऽ नीति-धरम सभ
मनुक्खक जिनगी कएल बेहाल
भूकम्प रौदी दाही संगे, बेढ़ब थाल खिचाड़े...।
सौंसे गाम हितारे...।।
तहिना मिथिलाक...।। 1।।

टोला-टपड़ा भेल झंझटिया, जेना मरघटिया लागैए
गाम उजड़िते शहर पड़ाइए, पढ़ुओ गामसँ भागैए
बचल-खुचल हितलग्गुओ सदिखन, उपनेहि जूइत सुतारे...।
सौंसे गाम हितारे...।
तहिना मिथिलाक...।। 2।।

ज्ञान-विज्ञानक अजबे सनकी
नव उपक्रम संग ऐंठैए
मशीनक मोजर-मनुक्खसँ बेसी
लुइर-बुइध सभ बैठैए
सोगे-पित्ते-सोचए प्रीतम
आलसी जनम बेकारे...।
सौंसे गाम हितारे...।
तहिना मिथिलाक...।। 3।।

सीखऽ तँऽ दियऽ

सुकीर्त्तिक हकारसँ हकमैत अएलहुँ
सिनेह प्रसादोकेँ चीखऽ तँऽ दियऽ
सदतिसँ जनल अछि अहाँ कीर्त्ति यशकेँ
वैहेए आचरण हमरो सीखऽ तँऽ दियऽ

कनेक ठाढ़ होइयौ औ छल छद्म संगे
करम-ज्ञान-गुण कनियो लिखऽ तँऽ दियऽ
अपन आचरण हमरो सीखऽ तँऽ दियऽ...।। 0।।

अहाँक सुख सदिखन सिहौलक-सिखौलक
ताही लेल हमहूँ तँऽ पाछू लागल छी
अहाँ दर्प गौरव सँ खाहे केओ जरए
मुदा हम सेहन्ता केर संगे जागल छी
कोना दर्प ऐश्वर्य एतेक जल्दी भेटल
तेकर पेंच-बुझ्धोकँ ठीकऽ तँऽ दीयऽ
सदतिसँ जानल अछि अहाँ कीर्ति यशकँ
वैहेए आचरण हमरो सीखऽ तँऽ दियऽ...।।1।।

अहाँ सभ तरहेँ सँ सुविधा भोगै छी
हमर कछमछीकँ अहूँ किछियो बूझू
अहाँक बाल-बच्चा सनक हमरो नेनाक
भवतव ममत स्नेह आशिष दऽ जूझू।।
नगर गाम बाजय अहूँ होइ छी बिकरी
तँ हमरो खुशामद लऽ बिकऽ तँ दियऽ
सदतिसँ जनल अछि अहाँ कीर्त्ति यशकँ
वैहेए आचरण हमरो सिखऽ तँ दियऽ...।।2।।

ईर घाट, वीर घाट

आजुक समाज केर अजबे अछि ठाठ बाट
कखनो केओ ईर घाट कखनो केओ वीर घाट
कमाल बवाल करै लोकतंत्र राज-पाट
कखनो केओ...।। 0।।

शिक्षा-संस्कार सदति लट-पट करैए
गोबर गणेश सभ अट-पट करैए
जनी पुरुख सेहो गुन-धुन करैए
नवतुर बाऊर होइतैं परिजन डँटैए
इरखे आन्हर लोक मरैए हाट-बाट
कखनो केओ...।। 0।।

गणतंत्रक नारा लऽ सनकैए सत्ता
संसद विधानक बखान अलबत्ता
शासन विचौलियाउड़ाहैए खत्ता
सामाजिक स्नेहभेल दिन-दिन निपत्ता
हाकिम-हुकुम सेहो मारए धोबिया पाट
कखनो केओ...।। 0।।

हँसनी-खेलनी अँगना घरसँ हेराएल
सहठुल सुपातर सभ दु:खसँ घेराएल
अगत्तीक ढीठपनसँ बुझ्धो पड़ाएल
हेत्तै की..? जुग-जगमे जनमति डेराएल
सभतरि देखए प्रीतम दुरकलह मार-काट
कखनो केओ...।। 0।।

खगता-बेगरता

जीबै छी! तैंसुख-शान्तिकँ, गाम-घरमे खगता अछि।
माऽए-बाप संगे, नेना-भुटकाक, सुख सौभाग्य सेहन्ता अछि।
दुर्योगे दु:ख दूर करऽमे, बहुतो रास बेगरता अछि।
हमरेटा नहिं हमरे जकाँ, सभकँ एहन बेगरता अछि।।
पहिलुक गाम समाजमे सदिखन
लोक लेहाज औ ममत रहल

धरम-करम सभटा छल सुत्थड़
कुटुम सम्बन्धीक स्नेह सजल
मुदा एखन तँ अजबे हाल अछि
अपस्याँत करता-धरता अछि।।
दुर्योगे दु:ख...। हमरेटा नहिं...।। 0।।

पैंच उधार पहिलुका जकाँ
कहाँ कत्तहु आब भेटैए
गौरबे-आन्हर मीत-पड़ोसी
दु:ख-दुविधा कहाँ मेटैए
तैं कलजुगहा हाल सँ कलपैत
टूटल मोनक छगुन्ता अछि।
दुर्योगे दु:ख...।
हमरेटा नहिं...।। 0।।

आजुक बूढ़-पुरान अवाक्षे
नवतुरियाक सनकी देखए
ओक्कर माऽए बाप सेहो गुम्मे
पुरखौंती प्रण फेंकैए
केहुना जिनगी खेपए प्रीतम
दैबेटा दु:खहर्त्ता अछि
दुर्योगे दु:ख...।
हमरेटा नहिं...।। 0।।
¦

नीक-बेजाय

जोड़ल हाथ अगोरल आशा, श्री मन आगत ध्यान देबै..।
एखनुक युगवासी करतब सँ, श्रोता-पाठक ज्ञान लेबै...।।
हम कलजुगहा गप्प कहै छी

सुनियौ बुझनुक लोक
सदिखन दाँत चियारैत कलजुग
बाँटए लोक मे शोक
बुइधक बधिया लोके करैए
दैए दैवक दोख
बुझू तँ की नीक भेलैए
कहू तँ की ठीक भेलैए
हम कलजुगहा...।। 0।।

दिन-दिन अजगुत लीला एक्खन
गाम-गाम मे बिहुँसैए
पोथी-पतरा वेद-ग्रंथ सभ
बूढ़-पुरान संग कुहुँसैए
ममहर-बपहर सभतरि देखल
जनीपुरुख सभ बहसैए
नव घर उठए- पुरनका खस्सए
संग सेहन्ता रबसैए
नेकी धरम-करम-मरणासन्न
बकुआएल सुर लोक
बुझू तँ की...।
हम कलजुगहा...।।1।।

एक्खन दारू दहेजक चर्चा
जन-मनमे अछि पसरि रहल
वाह-वाह नीतिश कहैत नारी
आन्दोलन दिशि ससरि रहल
खड़रा बढ़नी लैत बहुरियो
कहै दरुपीबा रहियौ हटल
सम्हरत धिया-पूता जिनगी घर
सुख-शान्ति लेल रहू अटल

नशा मुक्ति अभियानमे सभकेयो
दौड़ियौ पीठियाठोक...।
बुझू तँ की...।
हम कलजुगहा...।।2।।

शासन-मीडियो खूब कराबए
कलमदूत सँ ठकुर सोहाती
नेता कविकाठी पिछलग्गू
छपबए अप्पन दम्भक पाँती
कलमकार प्रीतम रचना अछि
साँच संवदिया बनि उत्पाती
अहिना लेखनी चलिते रहतै
चाहे केकरो फाटौ छाती
गाम-घर जनमंच सँ साँचक
गप्प कहब निद्धोख
बुझू तँ की...।
हम कलजुगहा...।। 3।।

हम के? और की?

हम के? की छलहुँ आओर की की भेलहुँ
आब की होयब किछियो सुझाइए कहाँ।
कोप धरती गगन, चान सुरुजो किरण
प्रार्थना औ भजन, किछु बुझाइए कहाँ।।
आब की होयब किछियो सुझाइए कहाँ...।। 0।।

इष्ट वा शिष्ट विशिष्ट कँ फेरमे, राति-दिन सभ अपशिष्ट होइते गेलौं
ज्ञान-विज्ञान संज्ञानसँ घूमिते, क्रूर कालकँ गाल प्रविष्ट भेलौं

सभ अपने बेगरतेसँ अन्हराय कैँ
दोष दोसराकेँ दए कहथि जानए जहाँ
कोप धरती गगन.., प्रार्थना औ भजन...।।1।।

लोक सुधरल कि बिगड़ल से कहि नञि सकी
दिनो-दिन गाम उजड़ल गिरल सन लगल
कानि कहए जनम डीह सापूत कत्तय?
स्वार्थ सेजक शयनसँ ओ नहिएँ जगल
सभ तरहेँ प्रदूषित धरांगन एखन
ई करुण भाव प्रीतमक बुझाबू अहाँ
कोप धरती गगन.., प्रार्थना औ भजन...।।2।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ. शिवकुमार प्रसादक

किछु कविता

देख एलौं हम पटना

हलसल-फुलसल बसमे बैस कऽ
पहुँचि गेलौं हम पटना
देख एलौं हम पटना।

भरि रस्ता हम उड़िते गेलौं
रातिक नीन भेल सपना
केतबो गुहारि देव-गोसाओनकेँ
मन पड़ैत छल फेकना
देख एलौं हम पटना।

बाप जनम नै देखने छलौं
एहेन मनुक्खक जंगल
भोजे बेरमे पहुँचि गेल
ओ पपिआहा घर-घुसना
देख एलौं हम पटना।

चोर-उच्चका डेग-डेगपर
भीड़ देखि कऽ जी उड़ैत छल
बाहर-भीतर जाएब कठिन छल
बेथाक नाओं अछि पटना
देख एलौं हम पटना।

हुनकर बात काटि हम एलौं
बाल-बोधकेँ छोड़ि कऽ एलौं
नेताजी की बात बनौता
मोन रहत ई घटना
देख एलौं हम पटना।

मन होइत अछि उड़ि कखन हम पहुँची
अपन सोहागक अँगना
मेटा रहल अछि झँपा रहल अछि
अपन हुलासक सपना
देख एलौं हम पटना। q

नेह

भोरे भोर जँ आगि उठैत छै कोना मेटत बिनु पानिक मेह
कोना कतहु प्रेम उपजतै किनका लग भेटत ओ नेह।

जिनगी भरि सिनेहक आसे गाछे गाछ घुमि एलहुँ
एक-आधकँ छोड़ि जँ पूछी बाँझे बाँझ बौएलहुँ।

निर्मल मनकँ निर्मल एना ओहिमे रूप सलोना
ओहि रूपकँ पागल सुगना ताकए कोना कोना। q

किनको क्यो नहि भेल

माया-मोह ममतामे फाँसल
जिनगी रहल हेराएल
नीत-अनीत ने मानल कहियो
ताहुसँ तोष नहि भेल।
जगतमे किनको कियो नहि भेल।

जिनगिक जोंक सदैत लेहु पीलक
दिन दिन मोटगर भेल
देह सुखाएल पएर निह तागैत
किनको कहल नहि गेल
जगत मे किनको...।

नैन रहैत देखल नहि किछुओ
श्रुतिपथ करए ने काम
चर्म रुधिर करए मनमानी
कर्मे बैरी भेल
जगतमे किनको कियो नहि भेल। q

पियास

अपनहि मने
धार उपछै छी
कखनहुँ उड़ी अकाश
ताल तलैया
जंगल पर्वत
उड़ी पवनकँ लाथ
सगर जनम औनाएते बित गेल
तैयो ने मुइल पियास। q

अत्मा केर छोलिका

छिलैत अछि सभ दिन
अत्मा केर छोलिका
राजनीति कूटनीति
भेल जेना ओरिका।

सभटा मलाय खाएत
नितौ मुटाइत अछि
खुरचन आ छोलनीसँ
छिलाएत कोना सभटा
छिलैत अछि...।

बकरी दुहैत छै
पाठी मेमियाइ छै
अपन अपन पठरू लेल
औना रहल सभटा
छिलैत अछि...।

माइयेक पेटसँ सभ
सीख एलै राजनीति
राजनीति पढ़ुआ सभ

धेने अछि कोन्टा
छिलैत अछि सभ दिन...।

हे जगत गुरु जन
खोंटि कऽ एको टुक
हमरो जँ दैतिऐ
पढ़ल लिखल राजनीति
घुमि अबितै सभटा।
छिलैत अछि सभ दिन
अत्मा केर छोलिका। q

ओझराहैट

करचिक ओझराहैट सन
जिनगिक अछि झंझैट
एकटासँ छुटैत दोसरामे
ओझराइत छी।

देह गेह नेह संग
डूमैत आ थाहैत
कखनहुँ अकाश
खन बसाते उड़ि जाइत छी।
एकटासँ छूटैत दोसरा...।

लोभ मोह सोग केर
महिमोकँ जानैत
मायाकेर फाँसमे
तैयो बन्हाइत छी
एकटासँ छूटैत दोसरा...।

जिनगी उड़ि रहल
बनि कऽ ककोहा
तैयो नव खड़ही बनि

जीबैले छटपटाइत छी
एकटासँ छुटैत दोसरामे
ओझराइत छी।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु अनुदित काव्य (रजनी छाबड़ाक मूल हिन्दीसँ)
(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of ‘PaighalteHimkhand’
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

आजुक नारी
आजुक जननी
अबला नहि
जे बिपैत पड़लापर
टुटलाहा माला जकाँ
छिड़िया जाइ छै।

आजुक जननी सबला अछि
जकरा टुटियो कऽ
जुड़ब आ जोड़बाक
कला बूझल छै। q

हम केतए छेलौं
हम जखन ओहिठाम रही
तखनो
ओतए नहि रही।

अपनहि संसारक मेलामे

हम हेरागेल रही
नहि जानि केतए रही।

पैघक गुणक
नकल करैत छल
हमर व्यक्तित्वक अपहरण,
हमर निजत्व
पपड़ी दर पपड़ी
कब्बरमे झँपाएत रहए
आ हम अपन छीण होइत
स्वसँ फिरसान रही।

काँच उमेड़मे
कनहाक
बेगरता रहै छै।

अपन पैरपर
ठाढ़ भेला पछाइत
कनहा धऽ चलब
अपन बेकूफी छैक।

सोनजूही सन
पुनकब
अपन क्षमता रहितहुँ
दोसराक बले चलब
किए मानि लेने छल
भाग्य हमर।

निःशब्द बेथा
आ नोरसँ

धैरज रखनिहार जगतीक
छाती पटा कऽ
बरखो-बर्खक पछाइत
हम अँकुरलौं अछि आब
मनमे संजोगने
पुनकबाक इच्छा ।

झौंखरा जकाँ नहि,
हम चाहै छी
नीर-निधि सन पसार।

नहि जीबए चाहै छी
गुड्डीक जिनगी,
लेने अकासक पसार,
जुड़ि कऽ साँचक धरासँ
बनए चाहै छी
अपन जिनगीक अपनहि अधार। q

बिसबास
अहाँ अपनापर बिसबास राखू
संसार अहाँपर बिसबास करत
पकड़ने रहू आसाक डोरि
अहाँक आस निरास नहि करत।

रौदसँ सुनगैत होए जे आँगन
कहियो ने कहियो इसरक किरपाक मेघ,
छाँह बनि एबे करतै।

कारी सियाह रातिकेँ

छाती चिरबाक तागैत
जइ दियारीमे छै
ओइ दियारीकेँ अन्हरो
निरास नहिएँ करतै।

अन्हरकेँ मुकैबला
जे कऽ लइ छै मलाह
हुनका जिबाक ढंग
अपने आबि जाइ छै।

आस, बिसबास आ
हिम्मतक जखन
होइए छै मिलान
तँ दुनियाँक कोनो कलेस
नहि रहै छै कलेस।

बिसरा जाइ छै पैछला
झंझैटक समय।

बैस जाइ छै फेनसँ
खुशीक घर।

जिनगी गाबए लगै छै
राग आ मलार। q

मनक कनकौआ
कनकौआ सन सौखीन मन
लेने चुलबुलीक पहाड़
छूबए चाहैत अछि

सौंसे अकासक बिस्तार।

पहाड़, समुद्र, अटारिक बिस्तार सन
सभ झंझैटकेँ
अन्ठियाबैत
आगुए आगू पएर बढ़बैत अछि।

जिनगीक थकाबैटकेँ
मेटेबा लेल चाही
मनक कनकौआ आ
सपनाक अकास
जाहिमे मन भरि सकै
निधोख सतरंगा उड़ान।

मुदा किए दी दोसराक हाथमे
अपन डोइर?
छण छण लागल रहत शंकाक परेत
कखन हम कटि जाय
कखन हम लुटि जाय?

चुलबुलाहैट, चपलता
नेने देखए मन
कल्पनाक एना,
साँचक जमीनपर
टिकल पएरे ने
दइ छै जिनगीक अर्थ। q

घर

सिनेह आ आतमीयता
जखन देबालक चार
बनि जाइ छै।

वएह घर
घर कहाइ छै। q

सुनसान
जे छुटि जाइ छथि
एहि जिनगीक जेहलसँ
पाबि जाइ छथि
एकटा नब जिनगी।

बेजान तँ ओ रहै छथि
जे ओकर बादो जिबैत छथि।

ने रहै छै कोनो उत्साह
ने उमंग
रहि जाइ छै
बस सुनसान,
हरेक खुशीक छण
सेहो कऽ जाइ छै उदास।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आगाँक अंक

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ २०१८ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

*सिद्धिरस्तु*